प्रकाशक—

हनूमानप्रसाद शर्म्मा वैद्यशास्त्री

महाशक्ति-साहित्य-मन्दिर

बुलानाला, बनारस सिटी



मुद्रक—

बी० एल० पावगी

हितचिन्तक प्रेस

रामघाट, बनारस सिटी

# वक्तव्य ।

मूल पुस्तक "हाऊ सक्सेस इज वन" ( How Success is won ) मेरे श्रद्धेय मित्र बाबू मक्खनलालजी गुप्त द्वारा मुझे पढ़नेको मिली । आद्योपान्त पढ़नेपर पुस्तक उत्तम और शिक्षाप्रद प्रतीत हुयी । उसका मेरे चित्तपर बडा प्रभाव पड़ा । मनमे एक छीनी चाह उत्पन्न हुयी कि मैं इसका हिन्दी भाषान्तर करूँ, परन्तु कार्य कठिन था, इसमें हाथ डालनेका साहस न होता था । मेरे उक्त मित्रने मुझे सामह प्रोत्साहन दिया, दिलमें कुछ और हिम्मत हुयी । डरते ही डरते अनुवादका कार्य आरम्भ किया । मैं कोई विद्वान् नही, कोई लेखक नही, एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा थी । जैसे-तैसे अनुवाद कर डाला । तदुपरान्त दो-एक सज्जनोको दिखलाया, लोगोने पसन्द भी किया । मित्रोके प्रोत्साहन और अपने दिली उमंगके फलस्वरूप यह पुस्तक पाठकोके समक्ष है । इसमे मुझे कहाँतक सच्ची सफलता मिली है, इसका निर्णय करना विज्ञ पाठकोके हाथ है ।

अनुवादमे मूल लेखकके भावोको सर्वथा सुरक्षित रखते हुए उनको और स्पष्टरूपसे व्यक्त करनेके लिये उदाहरण आदिमे स्वतंत्रताका अवलम्बन किया गया है । त्रुटियाँ रह जानेकी सम्भावना है, जिसे पाठक दृष्टिगत करके लाभदायक बाते ही ग्रहण करेगे ।

इस कार्यमें प० पीताम्बरदत्त शर्म्मा, रामगढ़, अलवर राज्य निवासी द्वारा जो सहायता मुझे मिली है, उसके लिए मै उनका हृदयसे कृतज्ञ हूँ ।

काशी
सितम्बर १९२९ ई० } ठाकुर शिवनाथसिंह

# निवेदन

ईश्वरकी ओरसे जीवोको मानव जीवन धरोहरके रूपमें प्रदान होता है, जिसके उपयोग अथवा अपयोग करनेकी विधि और मात्रापर उनकी व्यक्तिगत उत्कृष्टता वा निकृष्टता निर्भर होती है। जिस मनुष्यने अपने जीवनके महत्वको पूर्णरूपसे समझा और तदनुसार अपनी बुद्धि, मन और शरीरसे भरसक कार्य किया वह अवश्य अपने उद्योगमें कृतकार्य हुआ। प्रत्युत जिस मनुष्यने मोह और अज्ञानवश नाना प्रकारके भ्रमोमे पडकर अपना मनुष्य--कर्तव्य पालन न किया और अपने जीवनको वृथा ही गँवाया, उसका होना और न होना एक सा ही हुआ। देशोका इतिहास प्रबलतापूर्वक पुकार-पुकारकर साक्षी देता रहता है और मनुष्योको चेतावनी करता रहता है कि वे अपनी समझसे काम ले और यथासाध्य निरन्तर परिश्रम करे। जीवनकी दौड़--धूपमे जो क्षण-क्षणमें नित्य नई और विलक्षण बाधाएँ, कठिनाइयाँ और असुविधाएँ उत्पन्न होती रहती हैं उनको वे अपनी कुशल बुद्धि, प्रबल मानसिक और अथक शारीरिक बलसे विशेष उत्साहपूर्वक दमन करके अपने निश्चित उद्देश्यके प्राप्त्यर्थ अधिकाधिक सावधानी और तत्परतासे, अग्रसर होते हुए अपने मार्गमे भूलसे भी हीनता, न्यूनता, निराशा और प्रमादको तनिक भी न फटकने दे। जिन-जिन महापुरुषोने इस क्षणभंगुर संसारमे अपने अपूर्व और ज्वलन्त कार्योंके चिन्ह पीछे छोडे है और छोड़ते जाते हैं उनका ही जीवन सफल, अनुपम और असाधारण गिना जाता है।

परम दयालु-कृपालु भगवानके अनुग्रहसे जिस देश वा जिस जातिकी उन्नति होती है उसमे परम पुरुषार्थी और उत्तम कर्मवीर जन्म धारण करते हैं और अपने दृढ़ परिश्रम और अतुल चतुराईसे उच्च शिखरपर पहुँचते हैं । वर्तमान समयमें उन्नति-प्राप्त देशोका यही हाल है। एशिया, जापान, योरप, इंगलैंड, फ्रांस, इटली आदि और नवीन दुनियामे अमेरिका इस विषय के जीते-जागते उदाहरण हैं ।

एक सुयोग्य अमेरिकन ग्रन्थकार महाशय बर्नार मैकफेडनने "हाऊ सक्सेस इज वन" ( HOW SUCCESS IS WON ) अर्थात् "किस प्रकार सफलता जीती जाती है" नामका एक ग्रन्थ अंगरेजी भाषामें रचा है। उसमे लेखक महाशयने उन अमोघ उपायो और रीतियोंका युक्तिपूर्वक वर्णन किया है, जो कि अनेक अनुभवी महानुभावोने सफलताके प्राप्त्यर्थ प्रमाणित किये हैं और जो मनुष्यमात्रके लिये पथ-प्रदर्शक हो सकता है। सफलता विविध भाँतिकी होती है और भिन्न-भिन्न मनुष्यो द्वारा उसका भिन्न—भिन्न रूपोमें प्रादुर्भाव होता है। किन्तु प्रत्येक रूपमें जिज्ञासुको उसके पानेके निमित्त अपनी बुद्धि, मन, इन्द्रियो, शरीर और उसके अङ्गो और अवयवोंका उत्तरोत्तर अधिकसे अधिक प्रयोग करना पड़ता है। उसके भीतर जो उच्च और उत्कृष्ट नाना प्रकारके भाव अन्तर्हित हैं उनको उत्तेजित करके जागृतिमे लाया जाता है और पूर्णतया उनसे कार्य कराया जाता है। अपनी प्रकृतिके नीच और निकृष्ट गुणो और टेवोको अपने उत्तम गुणोंके प्रभावसे प्रभावित करके सुधारा जाता है। जिससे कि वे उन्नतिके मार्गमे किसी प्रकारकी बाधा और अड़चन

ऱन उपस्थित करसके। जब ऐसा बनाव बनजाता है, वो सत्पथ गामी और पूर्ण. उपासकको दिव्य सफलता देवीके अवश्य दर्शन हो जाते हैं जिसके अलौकिक प्रसादसे वह कृतकार्य हो जाता है

यह अवश्य स्मरण रहे कि सफलता सच्चरित्रताके बिना कोरी निष्फलता है। वास्तवमे वही सच्ची सफलता है जिसमे पवित्रता और निष्कपटताकी पराकाष्ठा है।

इस पुस्तकके रचयिताने इन्हीं बातोंके दरसानेका पूर्ण परिश्रम किया है जिस कारण यह ग्रन्थ परम महत्त्वशाली और लाभदायक बन गया है। सजीविता और उद्योगप्रियता इसके शब्द-शब्दसे टपकती है जो पाठकोंके चित्तपर बड़ा उत्तम प्रभाव डालती है।

मुझे भी यह पुस्तक ऐसी अद्भुत प्रतीत हुई कि मैंने इसका स्वयं अनुवाद करना चाहा। अतएव इसके तीसरे अध्यायका उर्दूमे तर्जुमा करके मेरठके "मेहनत की अजमत" नामक लेख उर्दू मासिकपत्र रिसालह "वैश्यहितकारी" के मार्च मास सन् १९२० की संख्यामे छपवाया था।

तत्पश्चात् सौभाग्यवश बाबू शिवनाथसिंहजीसे मेरा परिचय हो गया, जो एक बड़े सुशील और उच्च विचारके युवक हैं। उन्होंने इस पुस्तकको पढ़ा और पसन्द किया। उसपर मैंने उनसे प्रार्थनाकी कि आप इसको हिन्दीमें अनुवाद करनेकी कृपा करें।

अतएव यह "सफलताका रहस्य" नामक पुस्तक उन्हींके साहस और परिश्रमका परिणाम है। आशा है कि यह भारत-

वर्षकी राष्ट्रभाषा हिन्दीको सुशोभित करेगी । यद्यपि यह उनका प्रथम कार्य है, तो भी सर्व प्रकार सराहनीय है । मै स्वयं उर्दूरव्वाँ हूँ इसलिए इसके विषयमें विशेष नहीं कह सकता, अवश्य हिन्दी भाषाके प्रेमियोका कर्तव्य है कि वह इस पुस्तक-की कद्र करें, सुयोग्य अनुवादकके उत्साहको बढ़ावें और उन्हें मातृभाषाकी सेवा करनेका भविष्यमें अधिक अवसर दें ।

ई दुआ अज़मन व अज़ जहाँ आमीन बाद्

अर्थात्

यह प्रार्थना मेरी ओरसे तथा संसारकी ओरसे स्वीकृत हो ।

अलवर ( राजपूताना )
१५ अगस्त १९२९ ई०

निवेदक—
मक्खनलालगुप्त गर्क

मूल लेखककी

# भूमिका

जीवन-संग्राममे सफलताकी कामना रखनेवालोको अत्यन्त विकट प्रश्नोका सामना करना पड़ता है।

यद्यपि कतिपय ऐसे साधारण नियम हैं जो जीवनमें पथ-प्रदर्शकका कार्य करते हैं, तथापि निश्चित रूपसे यह कहना कठिन है कि सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक मनुष्यको अपनी मुक्तिके लिये स्वयं उद्योग करना पड़ता है। अपनीही बुद्धि तथा योग्यताके उचित प्रयोग द्वारा मनुष्यको बड़ी सफलता प्राप्त हो सकती है। वे अनुकरणशील मनुष्य, जिनका जीवन एक संकुचितसूत्रमे आवद्ध है और जो केवल दूसरोके आदेशानुसारही कार्य करनेमें समर्थ हैं, साधारण कोटिकी सफलतासे आगे नहीं बढ़ सकते। उच्च कोटिकी योग्यता तभी प्राप्त हो सकती है जब मनुष्य अपने व्यक्तित्वको पूर्ण विकसित तथा अपने आचरणको भली भाँति समुन्नत करनेका प्रयत्न करे।

कुछ लोग मेरे विषयमे कहते हैं कि मुझे जीवनमें सफलता प्राप्त हो चुकी है। छोटी अवस्थामे मैंने कुछ कार्य करनेका संकल्प किया था और किसी अंशमें सफलता भी हुई है। मेरा विश्वास है कि अभी अधिक महत्वपूर्ण सफलताएँ मुझे भविष्यमें प्राप्त होनेवाली हैं।

इसके लिए मैं किसी स्कूल तथा कॉलेजका आभारी नही हूँ। मुझे अनुभवकी पाठशालामे शिक्षा मिली है। अनुभव ही एकमात्र ऐसा शिक्षक है जिसके द्वारा पढ़ाया हुआ पाठ कभी नही भूलता और इसीके द्वारा प्राप्त ज्ञानकी जीवनमे प्रतिदिन आवश्यकता पड़ती है। जीवनके तत्वोके समझने तथा उनके अनुसार बरतनेके निमित्त मनुष्यको शिक्षित करनेके लिए जिन साधारण नियमोका प्रयोग किया जा रहा है उनमे कल्पनाका अत्यधिक समावेश है। निस्सन्देह इस नाममात्रकी ऊँची शिक्षासे, जो जीवनके बड़े-बड़े कार्य्योंको करनेमे समर्थ होनेके निमित्त दी जाती है, कोई लाभ नही हो सकता, जबतक कि इसकी त्रुटियो-पर सम्पूर्ण ध्यान न दिया जाय।

मैंने केवल दृढ़ संकल्पके साथ कार्यारंभ किया था। प्रार-म्भिक दशामे मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था; परन्तु अन्तमें मैं अपनी अल्पावस्थाकी चेष्टाओके अनुसार कार्यसम्पादनमे व्यस्त हो गया। इसलिए मेरा जीवन सफल कहा जाता है। बहुतसे लोग इसे असाधारण कहा करते हैं। बड़ी-बड़ी सफलताएँ सर्वदा वही लोग प्राप्त करते हैं, जो निकृष्टतम अवस्थासे ही प्रयत्न करना आरम्भ करते हैं। केवल इसी प्रकारके द्वारा तुम उन शक्तियो-की वृद्धि करनेमें पारग हो सकते हो, जो महत्वपूर्ण सफलताके लिए आवश्यक है।

यदि कोई ऊँचे पर्वतके शिखरपर पहुँचना चाहता है, तो वह एक ही छलाँगमें वहाँतक पहुँचनेका प्रयत्न नही करता। वह धीरे-धीरे एक-एक पग चढ़ता है। यदि उसके उद्योग, संयम तथा बुद्धिमत्ता पूर्ण होते हैं, तो ज्यो-ज्यो वह ऊपर चढ़ता है

उसकी शक्ति बढ़ती जाती है। कठिनाइयाँ, जो मार्गमें मिलती हैं, उस शक्ति-साहस तथा संकल्पको बढ़ाती हैं जिनकी आवश्यकता आनेवाली बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए पड़ती है। आरम्भिक अवस्थामें जब तुम्हारा कोई सहायक नहीं और न तुम्हारे पास द्रव्य है, तब तुम अपनेको अनुभवकी बड़ी पाठशालाकी प्रथम कक्षाका विद्यार्थी समझो। वहींपर तुम्हें उन्नतिके सारे सुभीते प्राप्त हो सकते हैं। "अनुभव" की आभ्यासिक पाठशालामें ग्रेजुएट न उत्पन्न हो, तो 'स्कूल' शब्दका कभी अन्त न होता, यह बाल्यावस्थासे मृत्युपर्य्यन्त बना रहता है। और वास्तवमें वही लोग सफल होते हैं, जो इसके उत्तम तथा अमूल्य पाठोंका स्वाध्याय किया करते हैं।

सारा संसार तुम्हारे समक्ष है। जीवन ठीक वैसाही है, जैसा तुम इसे बनाते हो। यदि तुम स्वस्थ्य हो, शक्तिवान् हो तथा साधारण कोटिकी बुद्धि रखते हो, तो तुम स्वयं अपने स्वामी हो। तुम अपने इच्छानुसार मानसिक तथा शारीरिक उन्नति कर सकते हो।

यह पुस्तक इस आशासे प्रकाशित की जाती है कि उन लोगोंको, जो जीवनकी निम्नतम श्रेणीमे उद्योग कर रहे हैं, उत्साहित करेगी और उनको यह समझनेमें सहायता प्रदान करेगी कि उत्तमसे उत्तम पारितोषिक सरलतापूर्वक उन्ही लोगोंको प्राप्त हो सकता है, जो निश्चित तथा दृढ़ लक्ष्य दृष्टिगत रखते हुए अविराम परिश्रम करनेके लिए तत्पर हैं।

तुम्हारी सफलताका इच्छुक

बर्नार मैकफेडन

प्रेमोपहार

# विषय-सूची

# सफलताका रहस्य

## पहला अध्याय

### सफलताके अङ्ग

1 The talent of success is nothing more than doing what you can do well, and doing well whatever you do, without a thought of fame.

Longfellow.

2. Whatever you are by nature, keep to it, never desert your line of talent. Be what nature intended you for and you will succeed.

Sydney Smith.

3. With rare exceptions, the great prizes of life fall to those of stalwart, robust physique.

Orison Swett Marden.

4. Every great and commanding movement in the annals of the world is the triumph of enthusiasm. Nothing great was ever achieved without it.

Humphry Davy.

सफलताका सम्बन्ध सर्वदा बलके साथ होता है। वह बल जो शारीरिक तथा मानसिक शक्तियोसे संयुक्त है। पहलवान ( मल्ल ) की सफलता उसकी शारीरिक शक्तिसे उत्पन्न होती है; परन्तु एक व्यवसायीकी सफलता उसके

मस्तिष्कपर निर्भर करती है और यह उसकी दृढ शारीरिक तथा मानसिक शक्ति द्वारा उत्पन्न होती है।

विचारार्थ एक मध्यम श्रेणीके व्यक्तिको ले लो, जिसने जीवन में अच्छी सफलता प्राप्त की है, चाहे वह एक धनी मनुष्य है, या एक महान् व्यवस्थाकार है अथवा कोई अच्छा रोजगारी है, तुम्हें यही ज्ञात होगा कि उसमें साधारण कोटिके लोगों से अधिक शारीरिक शक्ति विद्यमान है। उसके शरीरका संगठन अत्युत्तम है और वह इतना शक्ति-शाली तथा हृष्ट-पुष्ट है कि इस श्रमसाध्य जीवनके आवश्यक भारको सहन कर सकता है।

क्या तुमने कभी विचार किया है कि यह जीवन वास्तव में सफलताके निमित्त एक अविश्रान्त युद्ध है? जब एक छोटा बालक पाठशाला जाने लगता है तभी सफलताका युद्ध आरम्भ हो जाता है।

अब देखना यह चाहिए कि सफलता है क्या? निस्सन्देह भिन्न-भिन्न मनुष्य भिन्न-भिन्न रीतिसे इसकी परिभाषा करेंगे। यदि सड़कपर खड़े रहने वाले कुलीसे पूछा जाय कि सफलता किसमें है, तो वह यही उत्तर देगा कि अधिक रुपया मिलनेमें। यदि साधारण कोटिके लडके अथवा मनुष्यसे यही प्रश्न किया जाय कि सफलता क्या वस्तु है, तो उसका उत्तर भी यही होगा कि सफल व्यक्ति वही है, जिसके पास धन है। परन्तु मुझे तो इसमें सन्देह है कि ये धनाढ्य जीव सर्वदा जीवनमें सफलता प्राप्त करते हैं। मेरा यह विश्वास नहीं है कि सफलता की माप सर्वदा आर्थिक दृष्टिसे ही की जा सकती है। एक मनुष्य भली भाँति आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है पर वह सफल नहीं

कहा जा सकता। वह स्वयं अनुभवसे कह सकता है कि उसका जीवन फलीभूत नहीं हुआ। बहुतसे लोग-वे लोग जिनके पास द्रव्य नहीं है यह सोचते हैं कि जब हम लोगोको धन प्राप्त हो जायगा तो सफलता भी प्राप्त हो जायगी। परन्तु फिर भी सफलता वह वस्तु है जो उससे कहीं भिन्न और बढ़कर है।

मनुष्यका जीवन सफल तभी कहा जा सकता है जब वह अपने अन्तःकरण तथा बुद्धिके आदेशानुसार अपना आचरण बनाता है। एक सफल मनुष्य, सम्भव है, धनी न हो अथवा उसे किसी प्रकारकी ख्याति भी न प्राप्त हो, परन्तु यदि वह बुद्धिमानीसे रहता है, यदि उसने जीवनके समस्त वास्तविक तत्वोंको प्राप्त कर लिया है, यदि उसने अपने पौरुषानुसार समस्त शक्ति प्राप्त कर ली है और उसका सदुपयोग किया है और यदि उसने साधारण तथा मध्यम रीतिसे अपना जीवन व्यतीत किया है, तो उसका जीवन निस्सन्देह सफल कहा जा सकता है।

धन तथा ख्याति दोनों ही तुच्छ पदार्थ हैं। ख्याति हवा में उड़ते हुए पानीके बुलबुलेके समान है, जो देखनेमे बड़ा ही सुन्दर तथा मनोहर प्रतीत होता है; परन्तु जिसका समस्त सौन्दर्य क्षणमात्र मे नष्ट हो जाता है।

जब कभी मैं ख्यातिके विषयमें विचार करता हूँ तो, मुझे तुरन्त ही जॉर्ज डिवे (George Deway) के अनुभवका स्मरण हो आता है। जब वह युद्धसे लौट कर घर आया था तो वह बड़ा भारी योद्धा था। सर्वत्र उसका बड़े आदरसे स्वागत होता था और कुछ लोग तो उसे देवताकी नाईं पूजनेको प्रस्तुत थे। परन्तु कुछ ही कालके अनन्तर उसने

वह घर अपनी स्त्रीको दे दिया, जिसे लागोने उसे भेटमें दिया था। इस कार्यके लिए उसकी अत्यन्त अपकारपूर्ण समालोचना की गई और यहीं पर उसके योद्धापनका अन्त हो गया।

यशका प्रभाव कितना अल्प होता है, यह इससे ही प्रत्यक्ष विदित हो जाता है। संसारमें तुम बड़े ही प्रसिद्ध व्यक्ति कहे जा सकते हो और तुम्हारा सत्कार भी अत्यधिक हो सकता है, परन्तु दूसरे ही दिन, सम्भव है, जनता तुम्हें मूर्खतावश घृणाकी दृष्टि से देखने लगे। मै समझता हूं कि हमारे पाठकोमें से बहुतसे लोग रॉकफेलर ( Rockefeller ) के जीवन को सफल कहते होगे; परन्तु मुझे तो आश्चर्य है कि वह एक मध्यम श्रेणीके मनुष्य जैसा भी प्रसन्न नहीं रहता और न तो उसने इस जीवनमे उससे अधिक कुछ उपार्जन ही किया है। संसारकी समस्त सम्पत्ति तुम्हारे पास भले ही हो जाय, परन्तु एक समयमें तुम एकसे अधिक सूट नहीं पहन सकते और न तुम आवश्यकता से अधिक भोजन करके पूर्ण स्वस्थ ही रह सकते हो। धन केवल अनावश्यक इच्छाओंकी पूर्तिमें सहायक होता है। इस विकारसे अस्वस्थता, बीमारी तथा आपत्तिकी उत्पत्ति होती है। इससे प्रसन्नता नहीं हो सकती। मेरा विश्वास है कि सम्पत्तिशाली मनुष्योंकी अपेक्षा निर्धन तथा मध्यम श्रेणीके लोगोमें वास्तविक प्रसन्नताकी मात्रा विशेष होती है। वे लोग अपना कार्य करते हैं, अपने कर्त्तव्यका पालन करते हैं और जो कुछ मिल जाता है उसको प्राप्त कर सन्तुष्ट रहते हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है यदि वे इस प्रकार वास्तविक प्रसन्नताका उपयोग करते हैं? सुख-प्राप्तिका इसके अतिरिक्त अन्य मार्ग हो ही क्या सकता है?

न्यूयार्ककी प्रधान सड़कोमें से एकके निकट तुम्हें एक ऐसा मनुष्य मिलेगा जिसका मुख्य कार्य असहाय तथा आपत्ति-पीड़ित जनोंको रात्रिके समय सोनेका प्रवन्ध करना है। उसके निमित्त वह चन्दा एकत्रित किया करता है। निर्धन तथा गृहहीन लोग वहाँ जाया करते हैं। वह मनुष्य प्रति रात्रि उस स्थानपर खड़ा रहता है, चाहे कैसी ही कड़ाकेकी सरदी क्यो न पड़ती हो और इन असहायोके शयनका प्रवन्ध करता है।

यदि इन लोगोमें से किसी एक के विपयमें यह पूछा जाय कि इसके इस प्रकार असहाय तथा असफल होनेका क्याकारण है, तो अधिकांशके विपयमें यही ज्ञात होगा कि इसका मुख्य कारण 'शराव' है। अनेकोकी तो वास्तवमें ऐसी दशा हो जाती है कि वे सोनेके निमित्त स्थानकी याचना करनेको विवश हो जाते हैं। सचमुच यह वर्णन करना वड़ा कठिन है कि इसी प्रकारके अन्य कितने दुर्व्यसन मनुष्यके जीवनमें प्रविष्ट हो कर उसकी उन्नति तथा सफलताके युद्ध में निरन्तर उसे अधःपतन तथा असफलताकी ओर ही प्रेरित करते रहते हैं। जिस प्रकार मद्य-व्यसना सक्त प्राणीके ललाट पर असफलता आसीन रहती है, ठीक उसी प्रकार निर्वल, क्षीण शरीर, विषयासक्त, ताम्रकूट-व्यसनी तथा प्रत्येक प्रकारके नियमातिक्रम कार्योंमें लीन जीवो को भी जीवनमें असफलता हुआ करती है।

साधारणतः लोग जीवनमें असफल ही रहते हैं। यह अत्यन्त शोचनीय है। बहुधा विद्यार्थी, जब स्कूल अथवा कालेजसे निकलता है, तो वह सच्चा तथा धार्मिक होनेका विचार करता है। उसके आचार अच्छे होते हैं और साधारणतः उसकी आकांक्षाएँ यथोचित होती हैं, परन्तु जब संसार के दुस्तर कार्य्योंसे उसका समागम होता है, तो सच्चो तथा

वास्तविक सफलता प्राप्त करनेके लिए उसे अपना संकल्प दृढ़ तथा सिद्धान्त अटल बनाना चाहिए। कार्य करनेके जो नियम इस समय प्रचलित है चाहे वे नियम किसी भी व्यवसायसे सम्बन्ध रखने वाले क्यों न हो उनमें असत्यका अत्यधिक सम्मिश्रण प्रतीत होता है। जब तुम किसीकी चाकरी कर लेते हो, तो अपनी वृत्ति बनाये रखनेके लिए तुम को बहुधा छल-कपटका प्रयोग करना पड़ता है। "दूसरोंके साथ ठीक वैसाही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि उनसे अपने प्रति आशाकी जाती है," इस नीतिका व्यवहार इस समय अल्पांशमें ही होता है।

मेरा विश्वास है कि सच्ची सफलतामें ही प्रसन्नता है। परन्तु यह प्रसन्नता निरन्तर एक रस नहीं रह सकती, क्योंकि ऐसी दशामें उसे प्रसन्नता कह भी नहीं सकते। हम लोग सर्वदा हर्षोत्फुल्ल रहनेकी आशा नहीं कर सकते, और न सर्वदा सन्तुष्ट रहनेकी ही आशा कर सकते हैं, परन्तु यथो चित तथा उपयुक्त सफलता द्वारा वह वस्तु प्राप्त होती है जिसे स्थायी सुख तथा प्रसन्नता कह सकते हैं।

मेरा निश्चय है कि जीवनकी अनेक असफलताएँ शारीरिक अस्वस्थताके कारण होती है। उस शक्तिके अभावके कारण होती है जिसकी आवश्यकता सफलता प्राप्तिके निमित्त अनिवार्य है। दृढ़ तथा अटल सिधान्त उत्तम, शारीरिक बल द्वारा ही प्राप्त होते हैं। रुग्ण तथा सुकुमार मनुष्यके आचरणमें निर्बलता और चंचलता होती है। हृष्ट-पुष्ट तथा शक्तिशाली मनुष्य स्वभावतः ऐसी समस्त बातोंके प्रतिकूल होते हैं, जो नीच, निकृष्ट तथा अस्थायी होती हैं। सामर्थ्यवान मनुष्य ही जीवनके अविचल नियमोंका पूर्ण रूपसे पालन करता है।

असफलताका दूसरा कारण जीवनमें एक निश्चित लक्ष्य, निश्चित उद्देश्यके अभावका होना है। कितने ही मनुष्य जीवनयात्रा आरम्भ कर देते हैं; परन्तु यह नहीं जानते कि वे किधर, अथवा कहाँ जा रहे है। स्वास्थ्यकी आवश्यकता तथा महत्वको चाहे तुम भले ही समझ गये हो; परन्तु स्मरण रखो कि जीवनमें सच्ची सफलता प्राप्त करनेके लिए तुम्हें अवश्य निश्चित तथा पूर्ण परिभाषित लक्ष्य स्थिर करना चाहिए। तुमको अवश्य जानना चाहिए कि तुम कहाँ जा रहे हो, किस लिए जा रहे हो और क्या करने जा रहे हो? यदि एक बड़ा जलयान बिना किसी निश्चित लक्ष्यके समुद्रमें छोड़ दिया जाय, तो तुम उसके कप्तानके विषयमें क्या विचार करोगे? कदाचित उसे मूर्ख कहे बिना न रहोगे। परन्तु तुम्हारी दशा उससे भिन्न नहीं है। यदि तुम जीवनयात्राका आरम्भ बिना किसी निश्चित उद्देश्यके ही कर देते हो तो तुम किसी महत्व पूर्ण कार्यके पूर्ण करनेकी आशा नहीं कर सकते। तुम वैसे ही मूर्ख और निर्बुद्धि हो जैसे कि वह कप्तान, जो लक्ष्य-विहीन हो कर जहाज खेना आरम्भ करता है।

बहुतसे मनुष्य भाग्योदयकी प्रतीक्षा किया करते है। मैं भाग्यमें विश्वास नहीं करता। यदि तुम हाथपर हाथ धरे अवसर की प्रतीक्षा करते रहोगे, तो इस जीवनमें तुम्हें अवसर बहुत कम प्राप्त होगे। अवसर उन्हीं व्यक्तियोको प्राप्त होता है जो इसके खोजनेका परिश्रम उठाते हैं। यदि तुम चुपचाप बैठ कर अवसर की बाट देखा करोगे, तो अवसर निकल भी जायगा और तुम्हें पता तक न चलेगा। परन्तु फिर भी कितने मनुष्य ऐसे हैं जो इसी प्रतीक्षा में रहते हैं कि उनके अच्छे भाग्यका उदय होगा और आपसे आप उनके पास धन सञ्चय हो जायगा। यदि तुम द्रव्य-संग्रह

करना चाहते हो, यदि तुम सच्ची सफलताके इच्छुक हो, तो इसके लिए तुमको निरन्तर तथा अविराम परिश्रम करना चाहिए। कार्यके विना सफलता किसीको भी प्राप्त नहीं हुई। यदि यह परिश्रमहीन व्यक्तिको प्राप्त भी हो जाय तो वह इसके वास्तविक मूल्यको नहीं समझ सकता और न इसका उपयुक्त आदर ही कर सकता है। यह तुम्हें सम्पूर्ण रूपसे हृदयङ्गम कर लेना चाहिए कि शारीरिक अभ्यास द्वारा प्रत्येक अङ्ग तथा नसोंकी जो पुष्टि होती है उसीसे शक्तिकी नींव पड़ती है। उसीकेद्वारा कार्य-सम्पादन के हेतु आवश्यक बल प्राप्त होता है। इस परिश्रमशील जीवनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए शारीरिक बलकी अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है, परन्तु इन सबका मूल आधार उत्तम पाचनशक्ति, गुणदायक भोजन तथा पुष्ट शरीर ही है।

इन समस्त ईप्सित आचरणोंको प्राप्त करनेके निमित्त मनुष्यको सर्व प्रथम अपने ऊपर स्वामित्व प्राप्त करना चाहिए। जीवनकी सर्वोत्कृष्ट विजय तभी प्राप्त होती है जब मनुष्य अपने ऊपर विजय प्राप्त कर लेता है। यह विजय अत्यन्त क्लिष्ट है। मध्यम श्रेणीके मनुष्य अपने पेट अथवा मनोविकारों द्वारा पराजित हो जाते हैं। संसारके समस्त ईप्सित पदार्थों तथा वास्तविक सफलताको प्राप्त करने का एक मात्र मार्ग यही है कि तुम अपने ऊपर विजय प्राप्त कर लो। तुम्हें अपने अन्तःकरण तथा बुद्धिसे मार्ग-प्रदर्शक का कार्य लेना चाहिए। मैं मानता हूँ कि कभी-कभी यह बड़ा ही कठिन प्रतीत होता है। यह एक दिन अथवा एक सप्ताहमें होनेवाला कार्य नहीं है। इसमें वर्षों बीत जाते हैं और कभी-कभी तो, तुम प्रयत्न ही किये चले जाते हो।

अनेक बार तुम इस मार्गसे च्युत भी हो सकते हो; परन्तु यदि तुम निरन्तर उद्योग किये जाओ, तो वह समय आ जायगा जब तुम वास्तव में अपने स्वामी बन जाओगे, और तब तुम स्वतन्त्र हो जाओगे, क्योकि अपने ऊपर तुम्हारा प्रभुत्व हो जायगा। जब तक तुम अपने विजेता नहीं बनते तब तक तुम अपनी लालसाओं तथा चित्तवृत्तियोके दास हो।

परन्तु प्रथम इसके कि तुम अपने ऊपर विजय प्राप्त करो तुम्हें अपने आपको जानना चाहिए, "आत्मानं सततं विद्धि" इस महान वाक्यके महत्वको समझना चाहिए। तुम्हें अपने व्यक्तित्व तथा अपनी प्रत्येक आवश्यकतासे भलीभाँति परिचित होना चाहिए। तुम्हें अपने दोषो तथा त्रुटियोको जानना चाहिए। तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि तुममे जो कुछ उत्तमता है, जो कुछ गुण है, उसका विकास तथा उसकी उन्नति किस प्रकार हो सकती है।

मैं इसे अवश्य स्वीकार करता हूँ कि साधारण कोटिके मनुष्यको अपने ऊपर विजय प्राप्त करनेकी अनिवार्य्य आवश्यकताका ज्ञान अत्यल्प है। उदाहरणार्थ, शारीरिक बलको उन्नति करनेमें अधिक समय लगाना उसकी समझ में मूर्खता होगी। अङ्ग-पोषक विनोद उसकी दृष्टिमें मूर्खता-पूर्ण हो सकते है। अतः मनुष्यको अपने गुणोका विकास करने तथा अन्तमें अपने ऊपर विजय प्राप्त करनेके लिए अपनी आवश्यकताओंको जानना आवश्यक है। क्योकि अन्ततः तुम्हारे शरीरके मज्जातन्तु तथा पट्ठे कार्य करनेके केवल अस्त्र मात्र हैं, और ये अस्त्र भले अथवा बुरे उसीके अनुसार हो सकते हैं जितना कि तुम इनपर ध्यान दोगे।

अनेक लोगोने मेरे पास यह लिख कर भेजा है कि मैंने अपने कार्यमें जो कुछ सफलता प्राप्त की है उसके लिए मैं विशेष प्रशंसाका पात्र हूँ। अपने विचारोंके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करनेके लिए मैं किसी प्रकारके यश का अधिकारी नहीं हो सकता। कोई भी पुरुष अथवा स्त्री उस कार्यको करनेके लिए, जिसकी सत्यता तथा उपयुक्तता में उसका विश्वास है, किसी प्रकारके गौरवका अधिकारी नहीं हो सकता, क्योंकि अपने विचारो के अनुसार कार्य करनेमें उसको सर्वदा प्रसन्नता प्राप्त होती है। मैं यह कार्य कर रहा हूँ, केवल इसलिए कि मुझे इसमें आनन्द मिलता है। मैं इसे कार्य तो कहता हूँ, परन्तु इसे कार्य समझता नहीं, यह एक खेल है प्रातःकालसे रात्रि पर्य्यन्त यह एक निरन्तर विनोद है।

जब सफलताके लिए उद्योग कर रहे हो, तो प्रसन्नताके हँसमुख रहनेके गुणोको न भूल जाओ। बहुतसे धन-हीन मनुष्य अनुपयुक्त मानसिक वृत्ति द्वारा इस संसारको अपने लिए शुष्क तथा अपने जीवनको दुःखमय बना लेते हैं। यह उदासीनता अधिकतर अरुचि, व्यायामके अभाव तथा शरीरमें आलस्य रहनेके कारण उत्पन्न होती है। मनोविज्ञान शास्त्रमें इस विषयपर बहुत कुछ लिखा गया है कि सूक्ष्म मानसिक विचारोंका स्थूल सृष्टिपर अधिक प्रभाव पड़ता है। जब तुम अपनेको किसी आमोद-रहित शुष्क विषयमें संलग्न पाते हो अथवा किसी आपत्तिसे आवेष्ठित पाते हो, तो तुम प्रसन्न चित्त होनेका प्रयत्न करो। केवल इसकी परीक्षा मात्र करो और तुमको मुस्करानेका कोई न कोई कारण मिल जायगा। अपनी मानसिक वृत्तियो

द्वारा ही तुम अधिक प्रसन्न रह सकते हो। मैंने अपनी पत्रिकाओं में इस विषय पर विशेष नहीं लिखा है। अनेक ऐसी पत्रिकाएँ हैं जो इसी विषय पर तर्क-वितर्क कर रही हैं कि मानसिक शक्तिका शारीरिक शक्तिपर प्रभाव पड़ता है, परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि समस्त प्रसन्नता इसी जीवन से प्राप्त हो सकती है।

उचित प्रकारका विनोद सर्वदा लाभदायक होता है। यह तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे समस्त मिलनेवालोंके लिए हर्षप्रद होता है। परन्तु इससे अवश्य सावधान रहना चाहिए कि कहीं दुष्टाचरणको ही विनोद न समझ लिया जाय। विनोद अथवा प्रसन्नता उस दशामें कदापि नहीं प्राप्त हो सकती जो अधिकतर मद्य सरीखी विषमय वस्तुओं के सेवनके पश्चात् हुआ करती है। दुष्टाचरण द्वारा केवल अनावश्यक लिप्साओंकी तृप्ति होती है और इससे सर्वदा शारीरिक तथा मानसिक शक्तियोंका सत्यानाश होता है।

तुम सब लोगोंने यह कहावत सुनी है कि "बुवै सो लुनै निदान।" इस कहावतकी सत्यता सर्वप्रधान थी, है और रहेगी। यदि तुम प्रकृतिके नियमोंके प्रतिकूल चलते हो, यदि तुम सत्य पक्ष से विचलित होते हो, तो तुम अवश्य दुःख उठाओगे। प्रकृति के न्यायालय में क्षमा का सर्वथा अभाव है। यदि तुम उसके नियम भङ्ग करोगे, तो प्रत्यक दशामें तुमको उसका दण्ड भोगना पड़ेगा। किसी भी अवस्था में इसके विपरीत नहीं हो सकता।

हम सबको स्मरण रखना चाहिए कि शरीर एक अल्प परमाणुसे बढ़ता है, जिसमें सर्वदा नवीन परमाणु जुड़ते रहते हैं और तुम उनको भला अथवा बुरा जैसा चाहो बना

सकते हो—उनमें उत्तम अथवा निकृष्ट गुण पैदा कर सकते हो। इस विषयमें उचित तथा उपयुक्त यही है कि शारीरिक बलकी प्राप्तिपर विशेष ध्यान दिया जाय। तुम समुचित आचरणों द्वारा अपने शरीर को सुसंगठित कर सकते हो। इस विषयका वह अङ्ग बहुत ही विस्तृत है। इसके बारेमें मैं अब इससे अधिक दृढ़ताके साथ नहीं कह सकता कि बिना शारीरिक बलकी सुदृढ़ नीव डाले हुए सफलता कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। जो कुछ भी सफलता मुझे प्राप्त हुई है उसका मुख्य कारण यही है कि मेरे दृढ़ संकल्प तथा अटल सिद्धान्तोंको पीछेसे महान शारीरिक बलका बड़ा भारी सहारा था। और मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति को जो सफलता प्राप्त करना चाहता है, जो जीवनके सम्पूर्ण आनन्दको लूटना चाहता है, अवश्य उन अङ्गोंको पूर्ण सुदृढ़ बनाना चाहिए जिनसे उसको काम लेना है, उनको तीव्र बनाओ। अपने मस्तिष्कको स्वच्छ तथा पवित्र रखो, अपनी तन्तुओंको पुष्ट बनाओ, तो तुम्हें केवल सम्पूर्ण सफलताही नहीं प्राप्त होगी, प्रत्युत तुम जीवनमें प्राप्त होने वाले समस्त आनन्दोंका उपभोग कर सकोगे।

# दूसरा अध्याय

## जीवन-युद्ध

1. Life consists in facing risks.

Sir B. Fuller

2 Fight life's battle bravely and manfully.

Moses Rothschild.

3. A constant struggle, a ceaseless battle to bring success from inhospitable surroundings, is the price of all great achievements

Sam'l F. B. Morse.

हम लोग बहुधा सुना करते हैं कि लड़नेवाले सिपाहियों को युद्ध-क्षेत्रमें कठोर यन्त्रणाएँ भोगनी पड़ती है और उनको बड़ी-बड़ी कठिनाइयो तथा मुसीबतोका सामना करना पड़ता है। यदि उन योद्धाओमें हम लोगोका कोई निकट सम्बन्धी होता है, तो उसके संकटोके विषयमे हम अधिक दुःख और सहानुभूतिके साथ बातें करते हैं। परन्तु वास्तवमें युद्ध इतना अधिक भयास्पद नहीं है। थोड़ा विचार करनेसे ज्ञात होगा कि सिपाहीका साधारण जीवन एक साधारण नागरिक के जीवनसे, जो किसी भी वाणिज्यमें तल्लीन है, कुछ ही अधिक संकटमय होता है।

सिपाहीको यह निश्चय है कि उसे खानेके लिए भोजन तथा पहननेके लिए वस्त्र राज्यकी ओरसे मिलेगा। वह जानता है कि उसे भूखों मरना नहीं पड़ेगा। युद्धक्षेत्रको छोड़कर अन्य समयमें वह भली भाँति जानता है कि उसका

दूसरे समयका भोजन कहाँसे आएगा। भविष्यकी चिन्ता करने तथा उसके लिए तयार होनेकी उसे कोई आवश्यकता नहीं। जीवनके भयँकर युद्धमें प्रवृत्त होने वाले प्रत्येक योद्धाको जो दुश्चिन्तायें तथा कठिनाइयाँ पीड़ित किया करती हैं, उनसे प्रभावित हुए विना ही वह अपना जीवन समाप्त कर सकता है। जीवन-युद्धका योद्धा लड़ाई वाले सिपाही की नाईं युद्ध नहीं करता अधिकतर, उसे अपनी जीविका तथा स्थिति के निमित्त ऐसे भयंकर समर में अवतीर्ण होना पड़ता है जैसे समरका युद्ध क्षेत्र वाले सिपाहीको कभी भी सामना करनेका अवसर न आता होगा। साँसारिक योद्धाको सम्भवतः एक स्त्री तथा कुछ छोटे बच्चे अवश्य होते हैं, जिनको अच्छे भोजन तथा वस्त्र द्वारा सुखी करना वह अपना कर्तव्य समझता है। परन्तु उसे कुछ निश्चय नहीं कि दूसरे समयकी आवश्यक सामग्री उसे कहाँसे प्राप्त होगी। क्या तुम कह सकते हो कि एक सिपाही, जो केवल अपनी जान को संकट में डाल देता है, कभी ऐसे भयङ्कर, हृदय-विदारक तथा मनको व्यथित करनेवाले दुःख का आधा क्लेश भी सहन कर सकता है? नहीं।

रणक्षेत्रके योद्धाको अधिक साहस तथा अधिक पौरुष की आवश्यकता हो सकती है, परन्तु उससे भी कहीं अधिक साहस, पौरुष, इच्छा-शक्ति तथा दृढ़ संकल्पकी आवश्यकता जीवनके विशाल युद्ध में प्रवृत्त होनेवाले योद्धाको है।

निस्सन्देह, ऐसा समय भी आ पड़ता है जब युद्धक्षेत्र मे योद्धाओंको अत्यन्त भयावह स्थितिका सामना करना पड़ता है और उनके साहस और बलकी पूर्ण परीक्षा हो जाती है। परन्तु ऐसा समय बहुत ही कम आया करता है,

और यदि आता भी है, तो उसमें मरने वालोकी संख्या थोड़ी हुआ करती है। किसी अत्यन्त प्रचण्ड युद्धमें बहुत से मनुष्य मारे तथा घायल किये जा सकते हैं, परन्तु ऐसे युद्ध भी कम हुआ करते हैं।

अब जीवनके युद्धकी ओर आओ। तुम्हें मालूम हो जायगा कि अनेक अवसरो पर यह युद्ध बडा ही कठिन तथा कष्टमय प्रतीत होता है। ऐसे समय तुम्हारे समक्ष उपस्थित होगे जब कि तुमको युद्ध-क्षेत्रके किसी भी योद्धा से कई गुना अधिक मानसिक तथा कभी-कभी शारीरिक कष्ट सहन करना पड़ेगा।

सिपाही पराजयसे भयभीत होता है। पीछे हटनेके विचार मात्रसे ही वह घबड़ाता है। परन्तु एक क्षणके लिए तनिक सोचो तो सही कि जीवनयुद्धके योद्धाकी पराजयका क्या अर्थ होता है।

जीवनके इस महान समरमें उस शूर वीर योद्धाको बड़ी भारी हानि उठानी पड़ी है जिसका पतन ठीक उस समय हुआ है जब कि जय तथा रक्षा उसके अति निकट प्रतीत होती थी। यही दशा अन्य अनेक लोगोकी होती रहेगी। उसका जीवन समाप्त हो चुका। परन्तु वह करोड़ो में आखिरकार एक ही था। उसका प्राण अनायास निकल गया। वह बड़ी शीघ्रतासे स्वाँसके साथ चलता बना। परन्तु इस बड़े युद्धमें साधारण योद्धा थोड़े जीवनमें ही अपने कर्तव्योसे छुटकारा नहीं पा सकता। अन्तिम समय तक उसे निरन्तर परिश्रम करना पड़ता है, यद्यपि उसका अन्त उसके कठिन तथा दुस्संचालित ( Misdirected ) उद्योगोके कारण, असमयमें ही हो जाता है, जैसी दशा युद्ध-क्षेत्रमें

असावधानी तथा उद्दण्डताके कारण सिपाहीकी होनी है।

जीवन-संग्राम सर्वदा भयंकर रूप धारण किये रहता है। बिना किसीकी प्रतीक्षा किये हुए यह निर्दयता तथा निष्ठुरता-पूर्ण शक्तिके साथ चलता रहता है। हम लोगों को इसमें अवश्य भाग लेना चाहिए, चाहे सबका सत्यानाश ही क्यो न हो जाय! इसी युद्धके लिए हम लोग पैदा हुए हैं। हम लोग सिपाहियोंकी पंक्तिमें अपने स्थानकी पूर्ति करते हैं और इस युद्धमें भाग लेते हैं। तत्पश्चात् उस विशाल अदृष्ट में विलीन हो जाते हैं।

युद्धकी नाईं जीवनका सामना करना सीखो, ऐसा ही इसको सोचो, शान्तिपूर्वक लड़ाई करनेका अभ्यास करो। इस प्रकार तुम जय-प्राप्तिकी निश्चयात्मकताके लिए उन समस्त कार्योंको कर रहे हो जो एक योद्धा कर सकता है। मुँहचोर तथा डर-पोक कदापि न बनो, क्योंकि डरपोक अन्तमें सर्वदा धोखा देते हैं और जो शत्रुके समक्ष पीठ दिखाता है, उसके लिए मृत्यु ही-एक दण्ड है।

"युनाइटेड स्टेट्स" की सेनाके सिपाहियोंका 'काफीकूलर' (Coffee cooler) (चाय ठंढा करने वाला) एक घृणा तथा अपमान सूचक शब्द है। जब प्रातःकाल बिगुल बजता है तो रणक्षेत्रके योद्धा निद्रासे उठकर थोड़ी अग्नि जलाते और चाय पकाते हैं। बिगुलकी दूसरी तीक्ष्ण ध्वनि होती है और बड़ी शीघ्रतासे चतुर्दिक आज्ञा गूंज उठती है। सिपाही तुरन्त पँक्तिमें खड़े होकर चल देते हैं। उनमेंसे कुछ पैने तथा फावड़े लिए हुए रहते हैं, जो सारे [illegible] कुली समझते हुए अपने दैनिक कार्य पर चले जाते। गोलियां चलने लगती हैं और युद्ध आरम्भ हो जाता है।

'काफी-कूलर्स' वे लोग होते हैं जो अपने साथियोंके

साथ प्रातः कालके युद्धमें शरीक होनेसे भयभीत होते हैं। इनके गलेको चाय अधिक गर्म मालूम होती है, इसलिए उसके ठंडा होनेकी वे प्रतीक्षा करने लगते हैं। पीछे रहने का यह एक बहानाहै वे पीछेसे पहुँचते हैं। यदि तुम विचार कर देखो, तो इस ढङ्गके अनेक मनुष्य इस साधारण नागरिक जीवनमें मिलेंगे। तुम स्वयं उन्हींके से न बनो। कोई मनुष्य निर्धन, साधारण अथवा धनी जो जीवन-संग्राम-में धोखा देता है, वैसा ही घृणास्पद 'कॉफीकूलर' है। ऐसे जीव किसी प्रकारकी लड़ाईमें सफलता प्राप्त करने की आशा नहीं कर सकते।

# तीसरा अध्याय

## कर्मण्यता

1. No pain, no palm: no thorns, no throne·
   No gall, no glory: no cross, no crown.

   Wm Penn

2. If you seek ease and comfort to your bodies, waste your time in sensual pleasures and luxury, no hope for you Inactivity, in other words, would bring to you death and activity, and activity alone is life

   Swami Ramtirth

3. The noblest men that live on earth
   Are men whose hands are brown with toil,
   Who, backed by no ancestral graves,
   Hew down the wood and till the soil,
   And win thereby a prouder name
   Than follows king's or warrior's fame.

वर्तमान युगमें समस्त सभ्य संसारका झुकाव श्रमसे पीछा छुड़ाने तथा इसकी उपयोगिताको घटानेकी ओर ही ज्ञात पड़ता है! वास्तवमें कतिपय बाह्यवर्ती देशोंमें तथा इस देशके कुछ भागोंमें लोग मजदूरोंको (श्रमजीवी समुदाय) नीची तथा घृणाकी दृष्टिसे देखने लग गए हैं। क्या यह बात किसीसे छिपी है कि वे लोग, जो अपनेको जैंटलमैनोंकी उच्च श्रेणीमें गिनते हैं, परिश्रमकी धूलिसे अपने करोंको मलीन कर नीच बनना कदापि नहीं पसन्द करते? प्रत्येक मनुष्यको

अपने जीवनके, अपने व्यक्तित्वके, समस्त कार्य्योंको पूर्णरूपसे सम्पादन करनेके लिए कुछ न कुछ कार्य अवश्य करना पड़ेगा। अकर्मण्य लोग सम्मानित तथा सम्मुन्नत होनेकी आशा कदापि नहीं कर सकते। कर्मण्यताही जीवनका आधार है।

क्या मनुष्य और क्या अन्य जीव, सबके लिए एकही नियम है। कार्य-निष्ठ हुए बिना मनुष्य अपने जीवनोद्देश्यमें सफलताका अधिकारी नहीं हो सकता। सारी मानवीय शक्तियोंका जो हमें प्राप्त हुई हैं, एक विशेष लक्ष्य है। यदि उन शक्तियोंका समुचित उपयोग न किया गया, तो फल यह होगा कि अव्यवहृत हथियारकी नाईं उनमें जंग लग जायगा और वे सर्व्वथा निकम्मी तथा शिथिल पड़ जायँगी। इसका परिणाम अन्तमें यही होगा कि तुम्हें केवल शारीरिकही नहीं, बल्कि मानसिक शक्तियोंके भी दौर्बल्यका कष्ट सहन करना पड़ेगा।

श्रममें सम्मान है। कार्य करनेके विचारमें शक्ति है। कार्यकी पूर्तिमें आनन्द है। तुम्हें जागृत तथा चैतन्य होना चाहिए। जब तुम कार्य करना बन्द करदेते हो, जब तुम कुछ भी नहीं करते, तो अपनेको मरा हुआ समझो। आलस्य तथा मृत्युमें घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक दूसरेका मुख्य अङ्ग है। कहावत है-'आलस निद्रा औ जम्हुआई, ये तीनो हैं कालके भाई'। डाक्टर जॉन्सन का कथन है कि "जब तक रोशनी मिला करती है तब तक मै कार्यमें लीन रहता हूँ"।

केवल मेहनत-मजदूरीपर बसर करने वाला जीव, जिसकी दैनिक आवश्यकताओंकी पूर्तिभी कठिनाईसे होपाती है, धनी समुदायको ईर्षा तथा द्वेषकी दृष्टिसे देखता है,

खासकर उस दशामें जबकि धनी लोगोका जीवन आलस्यमय होता है, जबकि ये लोग प्रत्येक सुख-सामग्रीका स्वच्छन्दता पूर्वक उपभोग करते हुए कार्य-तत्परतासे उदासीन रहनेकी चेष्टा करते हैं। यह कैसी अच्छी बात है कि काम तो कुछ भी न करे और वदले में उत्तमसे उत्तम वस्तु भोगनेको मिले। ऐसा विचार उस निर्धन मजदूरके मनमें उत्पन्न होता है, जिसका ललाट सच्चे परिश्रमके पसीनेसे तर है। परन्तु फिर भी उसका आलसी, धनी समुदायसे द्वेष करना उचित नहीं जान पड़ता।

द्रव्यवान् मनुष्यका हर्षोत्फुल्ल तथा समुन्नत होना अग्राह्य नहीं हो सकता, यदि वही अपना जीवन सचाईसे कर्तव्यनिष्ठ होकर व्यतीत कर रहा है। संसारमें धनी मनुष्य की उतनीही आवश्यकता है जितनी गरीबकी। परन्तु धनी मनुष्य यदि कार्य्यक्षेत्रमें अवतीर्ण होनेसे घृणा करता है, यदि सम्पत्तिशाली होनेके कारणही अपनेको श्रमसे वञ्चित रहनेके योग्य समझता है, यदि धनका उपार्जन न कर उसको विकीर्ण करनाही अपना धर्म समझता है, तो निश्चय ही वह अपने अधःपतनको आमन्त्रित कर रहा है। उसका पतन सर्वथा अनिवार्य है। उसके साथियोका—धनी हो या गरीब—उसे क्रूर घृणाकी दृष्टिसे देखना अनुचित नही कहा जा सकता। उसे इस बातका बोध करादेना अत्यावश्यक है कि संसारमें उसके समान स्वनिर्मित आलसियोके लिए स्थान नहीं है।

अनेक कार्य कर्ताओंका जीवन वास्तवमें, उनके शरीर तथा आत्माके लिए भारस्वरूप हो रहा है। वे मानो बिलकुल हो रहे हैं। वे दिन प्रति दिन, वर्ष प्रति वर्ष कार्य करते

चले जाते हैं, भविष्यका उन्हें कुछ भी ध्यान नहीं है। हर रोज उन्हें नई-नई आपत्तियोंका सामना तथा उन्हें सहन करना पड़ता है। परन्तु मैं इस प्रकारके परिश्रमकी चर्चा नहीं कररहा हूँ। जिस श्रमकी मैं प्रशंसा करना चाहता हूँ, कार्यके करनेका मैं बल पूर्वक आग्रह कर रहा हूँ, वह कार्य सुरुचि पूर्ण हैं, उसे हम खेलका रूप दे सकते हैं। तुम्हें अपने कार्यमें सर्वदा प्रसन्नचित्त रहना चाहिए, सदा उसमें आनन्द मनाना चाहिए, क्योंकि आखिरकार तुम्हारे जीवनका यह एक महत्वपूर्ण अंग है। शान्ति पूर्वक कार्य सम्पादन करना मानव जीवनके लिए अत्यन्त श्रेयस्कर है। मानव समाजकी समस्त आपत्तियो, निर्बलताओ और पापोकी उत्पत्ति तभी होती है, जब उसके लिए समुचित कार्यका अभाव होता है। केवल "सरल कार्यकी" खोज करना बन्द कर दो। ऐसे कार्यकी आयु बहुत थोड़ी होती है और यदि यह अधिक आयुका होता भी है तो इसके द्वारा लाभ की आशा न होकर हानिकी ही अधिक सम्भावना होती है।

आलस्यका अभ्यास आसानीसे पड़ जाता है। यह देखा-देखी उत्पन्न हो जाता है। यह एक संक्रामक व्याधि है। यदि तुम जीवनमें कुछभी करना चाहते हो, यदि तुम प्रसन्नता तथा सुखका कुछभी अर्थ समझनेके इच्छुकहो, तो तुम्हें शीघ्रही स्वभावानुकूल कार्यमें संलग्न हो जाना चाहिए और अपनी सारी शक्ति इसमें लगा देनी चाहिए।

# चौथा अध्याय

## अच्छा साथी

1 What is termed 'Society' is dissipation, a loss of opportunity and power and leads to ill health and failure.

H H. Brown.

2. Young men you cannot devote yourselves to society and at the same time attend to your studies

President Livermore

अमेरिकाके रुसल सेजका लोग बहुत उपहास किया करते हैं। हद दर्जे तक उसपर कटाक्ष किया जा चुका है। रुसल सेज वही प्रख्यात व्यक्ति है जिसने अपने जीवनका आरम्भ निःशेष होकर ( कुछ नहींके साथ ) किया था। वह इस समय 'वाल स्ट्रीट'के प्रधान लक्षाधीशोंमें है। प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवनका मार्ग स्वयं ढूँढ़ निकालना चाहिए। दूसरे के ऊपर निर्भर होना कादर्यका लक्षण है। अपने अन्तःकरण तथा बुद्धिपर विश्वास रख कर उसके आदेशानुसार ही चलने का अभ्यास करना चाहिए। रुसल सेजका सञ्चयमें विश्वास है और अत्यधिक कृपणताके लिए वह बदनाम भी है। लोग उसे कंजूस, नीच तथा लोभी कहते हैं। परन्तु उसने अपने जीवनको उन नियमोंके अनुसार चलाया है, जिनके अनुकूल बरतनेका दृढ़ निश्चय उसने कुछ काल पूर्व कर लिया था।

इस चेष्टाके व्यक्तिकी चाहे हम लोग प्रशंसा करें वा न

करें; परन्तु हममेंसे बड़ासे बड़ा उपहासक भी यह अवश्य स्वीकार करेगा कि जबसे रुसल सेज जनताकी दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करने लगा है तबसे वह अपने उन्ही आचरणोंपर दृढ़ता पूर्वक स्थिर है जिनके लिए वह लांछन तथा हास्यका शिकार बन रहा है। अपने निश्चित मार्गसे वह लेश मात्र भी विचलित नही हुआ। जातीय सम्पत्ति तथा व्यवसायका वह उसी प्रकार एक मुख्य अङ्ग है जैसा कि वह पहले था। विचार शक्तिका पूर्ण विकास होनेके पूर्व ही उसने अपने आपको पहचान लिया था। आत्मज्ञानने उसे आत्मनिर्भरताका पाठ पढ़ाया। उसमें इस प्रकारकी योग्यता मौजूद थी, जिसमें यदि जादूकी तरह उत्पादक शक्ति नहीं थी, तोभी सफलता-प्राप्तिके मार्ग पर अग्रसर करने, सहायता तथा उत्साहित करनेकी क्षमता तो उसमें अवश्यही थी।

मिस्टर सेजके जीवनपर जिसने जराभी ध्यान दिया होगा उसे उसकी एकाग्र चित्तताकी अटूट शक्तिमें तनिकभी सन्देह नही हो सकता। वह नियम शील तथा पवित्र आचार का मनुष्य था। वृद्धावस्था तक उसकी विचार शक्ति अक्षय बनी रही। जातीयताका गौरव उसके हृदयमें नितान्त जागृत रहा। उस अवस्था तक हममेंसे अनेक क्षीण, कृषकाय तथा हतबुद्धि हो जाते हैं। रुसल सेज शारीरिक बल (पहलवानी) के लिए प्रसिद्ध नहीं है। उसने अपने अवयवोंको हृष्ट-पुष्ट बनानेके लिए कभी विशेष प्रकारका व्यायामभी नहीं किया। परन्तु जीवनके आरम्भमेंही उसे स्वास्थ्यका मूल्य ज्ञात हो चुका था। इसलिए उसने सर्वदा इस बातका ध्यान रक्खा कि कुपथ और निषिद्ध आचारोंमें उसकी शक्तिका ह्रास तथा अपव्यय न होने पावे। वह सदा नियत समयपर सो

जाया करता था। दिनमें कठिन परिश्रमसे कार्य करता था। अवकाशका तो वह नामही नहीं जानता था और न अमित व्ययके लिएही उसे कोई मार्ग मालूम था। उसने अपनी नैसर्गिक शक्तियोंका ऐसा उपयोग किया कि उसका जीवन सदा प्रसन्न, सुदृढ़, पवित्र और स्वास्थ्यमय वना रहा और सफलता सदा उसकी दासी वनी रही।

यदि तुम उसकी शैलीको पसन्द नहीं करते, तो कमसे कम उसे एक मनुष्यकी दृष्टिसे देखो, और विचार करो कि वह जीवनमें फलीभूत रहा या नहीं। अपने दीर्घजीवनमें जो कुछभी करनेका उसने प्रयत्न किया उसमें अधिकांशमें उसे सफलता प्राप्त हुई।

रुसल सेज कभी " अच्छा साथी " ( Good fellow ) न बना, न है और न बनेगा। युवावस्थामेंही उसे कृपण बनना पड़ा। एक पाईभी उसके लिए बड़ा खजाना थी। उसने किसी कार्यके करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया था। इस कार्यके आरम्भ करनेके लिए उसे द्रव्यकी आवश्यकता थी। इसी कारण वह एक-एक पाईकी भी बड़ी सावधानीसे रक्षा करता था। आरम्भिक जीवनमे ही उसे यह आदत पड़गई और वृद्धावस्था तक बनी रही। इसकेलिए उसके प्रति घृणित व्यवहार प्रदर्शित करना उचित नहीं। क्योंकि आरम्भमें ही उसे अनेक कठिनाइयो तथा असफलताओंका सामना करना पड़ा, जिनके द्वारा प्राप्त अनुभवने ही उसके इन नियमोको सुदृढ़ तथा परिपक्व बनाया था।

सफलताके विषयमे विचार प्रकट करते हुए रुसल सेजने हालमें उन नवयुवकोंके लिए अति उत्तम शिक्षाकी बात कही जो मादक पदार्थोंके सेवनमें व्यस्त हो रहे हैं। वह कहता

हैः-"उन मित्रोंसे पृथक् रहो जो तुम्हें 'अच्छा साथी' बनाना चाहते है। 'अच्छा साथी' का वास्तविक जीवनमें कोई मूल्य नहीं। 'अच्छा साथी' का अर्थ कुपथ गामी, अमित व्ययी, भक्षाभक्ष्य भोजी, चरित्रहीन तथा अनाचारी होता है। 'अच्छा साथी' बनाना अमूल्य समयको नष्ट करना है, जीवन का सत्यानाश करना है। थोडेमे यह कहा जा सकता है कि आधुनिक सभ्यतामें 'अच्छा साथी' का अर्थ 'मनुष्यता-रहित' होता है। चाहे तुम्हारी लालसा कितनीही प्रबल क्यो न हो, चाहे तुम कितनाही श्रम-क्लान्त क्यो न हो गए हो, परन्तु स्मरण रखो कि जिस प्रकार "गन पाउडर" (अग्नेय चूर्ण) अग्नि में डालनेसे उसपरके रखे हुए पात्रको चूर-चूर कर देता है, उसी प्रकार शराब अथवा कोई दूसरा मादक द्रव्य तुम्हारे शरीरको जीर्ण-शीर्ण किये बिना न रहेगा। मैंने अपने वृहत् जीवनमें कभी किसी प्रकारकी मादक वस्तुका प्रयोग नहीं किया और मेरा दृढ़ विश्वास है कि इसी कारण इस समय तक मैं इतना स्वस्थ रह सका हूँ।

जो मनुष्य दीर्घ जीवी होना चाहता है और वृद्धावस्थाके अन्तिम दिन तक स्वस्थ तथा शक्ति-शाली रहनेका इच्छुक है उसके लिए उपरोक्त शब्दोंमें कैसी अमूल्य शिक्षा भरी हुई है। अँग्रेजीमें एक प्राचीन कहावत है कि-'जब शैतान मनुष्य के शरीरमें स्वयं वास नहीं कर पाता, तो वह शराब भेज देता है।'

रुसल सेज कहता है-"कभी 'अच्छा साथी' न बनो। 'अच्छा साथी' का जीवनमें कोई मूल्य नहीं है।" और वास्तव में इससे बढ़कर सचाई अन्य किस बातमें है? अच्छे साथियों की ओर जरा ध्यान दो-उन साथियोंकी ओर जो सर्वपरिचित

हैं। वे आपसमें मिलनेपर साधारणतः कहा करते है-" आओ दोस्त, खूब मिले।" इन चार शब्दोंमें कैसा रस भरा है। कैसा मीठा स्वागत है! क्या आनन्दमय सत्कार है। मिलतेही इनके आनन्दकी सीमा नहीं रहती, उल्लासका सागर उमड़ पड़ता है। चारो ओर प्रसन्नताही प्रसन्नता छा जाती है। इन अच्छे साथियोंकी वास्तविक दशा क्या है? सफलता इनसे कोसों दूर है। कुछ तो असफल हो चुके हैं और शेषकी असफलता निश्चित है।

'अच्छा साथी' होने का मानेही यह है कि तुमको अवश्य बुरी-बुरी आदतें ग्रहण करनी पड़ेगी। शराब पीना, सिगरेट-बीड़ी पीना तथा नाच-गानेमें भाग लेना, आदिही इसके मुख्य अङ्ग हैं। धिक्कार है, ऐसी सभ्यताको। हर एक आदमीको अनेक अच्छे साथियोंके विषयमें यह अवश्य स्मरण होगा कि या तो उन्हें असफलता हुई या उनकी मृत्यु हुई।

इन 'अच्छे साथियो' में कुछ ऐसेभी हैं जिनके हृदयमें दया है, जिनमे अनेक अच्छे गुण हैं। परन्तु सर्व-परिचित होनेकी, सब किसीसे मिलने-जुलनेकी इच्छा उनका सत्यानाश कर देती है। सबसे मेल-जोल करनेका उनपर भूत सवार रहता है। उन्हें और कोई काम अच्छा नहीं लगता। पढ़नेसे वे कोसो दूर भागते हैं। दफ्तरका काम मुश्किलसे कर पाते हैं। छुट्टी पाते ही दोस्तोंके यहाँ दौडते हैं, जैसे भूखा बछड़ा गायके पास दौड़ता है। घर तो उन्हें जैसे काटेही खाता है। 'अच्छा साथी' बननेके लिए जितने समय तथा शक्तिका अपव्यय किया जाता है यदि उसका आधा भी सुकार्यमें लगाया जाय, तो जीवनी-लेखकोंके लिए न जाने कितना मसाला एकत्र हो जाय। राष्ट्र तथा जाति द्वारा जो लोग सम्मानित तथा प्रतिष्ठित हो

रहे हैं उनकी ओर दृष्टि करके ज़रा ढूँढ़ो। उनमेंसे शायदही कोई ऐसा मिलेगा जो पहले 'अच्छा साथी' रह चुका हो। इन श्रेष्ठ जनोका जीवन 'अच्छे साथियो' से सर्वथा भिन्न रहा है। इस 'अच्छे साथी' पनेकी छूतकी बीमारीसे इन्होने बड़ी साव-धानीसे अपनी रक्षाकी, जिसका फल यह हुआ कि आज वे देशकी दृष्टिमें उच्च स्थानपर आसीन हैं और सबको श्रद्धाके भाजन बने हैं। यदि वेभी 'अच्छा साथी' ( Good fellow ) बननेका प्रयत्न किये होते तो उनको दशा सर्वथा विपरीत होती।

'आओ, आओ थोड़ी शराब तो पीलो, बस, इसी प्रकार 'अच्छे साथियो' की मंडलीमें नवागन्तुकका स्वागत होता है। हजार अनिच्छा होनेपर भी उस नवागन्तुकको थोड़ी शराब अवश्य पीनी पड़ती है। चाहे शराब तीती, कड़वी, कैसी भी क्यो न मालुम होती हो; परन्तु 'अच्छा साथी' का दर्जा प्राप्त करनेके लिए इसका पीना अनिवार्य्य है। यदि वह न पीवे तो विचारा 'अच्छा साथी' बननेसे बाज आवे और 'अच्छा साथी' न बनना उसकी आन-बानके प्रति कूल है। उसकी शानमें बट्टा लगता है। सब जगह उसकी बदनामी होती है। भला यह सब वह कैसे सह सकता है। थोड़ीसी शराब पीनेसेही इन बलाओसे उसको छुटकारा मिलता है। एक घूँटमें उसको इतनी बड़ी आपत्तियोसे त्राण मिलता है, तो ऐसी त्राणकारी वस्तुको वह कैसे छोड़ सकता है? अन्तमें वह शराब पी ही लेता है। 'अच्छे साथी' बननेकी यह पहली सीढ़ी है।

तुम्हारे अन्तर्गत दूसरी बुराइयाँ चाहे हजार हो, परन्तु 'अच्छा साथी' बननेका कदापि प्रयत्न न करो, ऐसे लोगों को सर्वदा हानि उठानी पड़ती है और उनका जीवन बरबाद होता है।

अपने जीवनको संयम-नियमके सच्चे मार्गपर ले चलो। ऐसे वैसे साथियो को कदापि अपने निकट न फटकने दो।

स्वावलम्बन सीखो। अपना जीवन स्वयं बनाओ। अपने नियमोका पालन करो। सारे संसारकी चिन्ता न करो।

यदि तुम शराब, सिगरेट, तम्बाकू आदि पीनेसे बाज नहीं आ सकते, तो स्मरण रखो कि तुम्हारा जीवन नष्ट हो जायगा। तुम संसारमें किसी योग्य न रहोगे। सभी तुम्हें नीची निगाह से देखेंगे। तुम घृणा तथा अश्रद्धाके पात्र बने रहोगे। इन बुरी आदतोके होते हुएभी मै यह अवश्य कहूँगा कि तुम 'अच्छा साथी' फिरभी न बनना। क्योकि अपनी इच्छासे शायद तुम शराब एकही बार पीते हो, तो उनकी इच्छा तथा प्रेरणासे तुम्हें दस बार पीनी पड़ेगी और अपनी इच्छा न रहते हुए भी पीनी पड़ेगी।

# पाँचवाँ अध्याय

## कार्यसे प्रेम

1. The crowning fortune of a man is to be born to some pursuit which finds him an employment and happiness whether it be to make baskets, or broad swords, or canal or statues, or songs

Emerson.

2. To do your work, whether in happiness or misery, to do your work whether with pleasure or pain, to do your work whether to success or failure, to do your work—that is life

Goethe.

अपने व्यवसायमे दत्तचित्त होना चाहिए, अपने कार्यमें दिलचस्पी लेनी चाहिए। इसकी मुख्यतापर मैंने अधिक जोर देनेकी कोशिशकी है। क्योकि बिना इसके आजतक किसीको सफलता प्राप्त नहीं हुई। अभी थोड़े दिनोकी बात है न्यूयार्कके 'वर्ल्ड' (संसार) नामक समाचार पत्रमें जेम्स वी० ड्यूकके, जो तम्बाकूके वृहत् व्यापारके संरक्षक हैं, जीवन-चरित्र प्रकाशित हुआ था।

यद्यपि मैं तम्बाकूको घृणाकी दृष्टिसे देखता हूं और मेरी धारणा है कि जब हम सब लोग सच्ची सभ्यताके उपासक बन जायँगे, तो इसका व्यापार भी समूल नष्ट हो जायगा, तथापि इस मनुष्यकी प्रसिद्ध जीवनचर्यासे हमारी पूर्व स्थापित युक्तियो तथा सिद्धान्तोकी पुष्टि होती है।

सर्व प्रथम बात जो ड्यूक महाशयने अपने एक मिलने वालेसे कही वह यह थी कि "सफलताका सीधा मार्ग अपने कार्यसे प्रेम करना है। मनुष्य उसी कार्यका उत्तमतासे सम्पादन कर सकता है जिससे उसका प्रेम है। यदि उसने कोई ऐसा कार्य शुरू कर दिया है जिसमें उसका चित्त नहीं लगता, तो उसे चाहिए कि शीघ्र उस कार्यको छोड़कर किसी अन्य कार्यमें लग जाय। इस घोर संघर्षके युगमें अपने व्यवसायमें पूरी-पूरी दिलचस्पी लिए बिना सफलता कदापि नहीं प्राप्त हो सकती। केवल द्रव्योपार्जनकी भावना ही पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं हो सकती। मनुष्यको अपने कार्यमें अधिकसे अधिक आनन्द लेनेका प्रयत्न करना चाहिए। इस विचारसे कार्य करनेवाला कभी असफल नहीं हो सकता। मेरा यही निर्णय है और यह मेरे अनुभव तथा विचारके आधार पर स्थित है।" संसारके किसी विद्वानने, किसी विज्ञान-वेत्ताने सफलताके विषयमें ऐसी मार्केकी बात नहीं कही।

जीवनके किसी अंशमें सफल होनेके निमित्त एकाग्रता, संकल्प, दृढ़ निश्चय, तत्परता तथा आत्म-निर्भरता आदि गुणोंकी अत्यन्त आवश्यकता है और इनका संयोग तभी हो सकता है जब मनुष्य अपने हस्तगत कार्यको सच्चे प्रेमसे करे, उसमें तल्लीन हो जाय।

जेम्स बी० ड्यूक एक निर्धन किसानका लड़का था। उसने अपना जीवन स्वयं बनाया है। वह स्वनिर्मित मनुष्य है। उसकी समस्त विभूतियोंका कारण उसका शरीरिक स्वास्थ्य है। परन्तु उसका निजका कथन यह है कि केवल बड़ी योग्यता तथा असीम बलसे कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता, जब तक कि तुम्हें अपने कार्य में लगन न हो और

जब तुम सच्ची लगनके साथ अपने जीवनके कार्यमें लग जाओगे, तो फिर असफल होना भी असम्भव है।

इन पंक्तियोंके प्रत्येक श्रद्धालु पाठकको इस प्रख्यात मनुष्यकी अमूल्य शिक्षापर ध्यान देना चाहिए :—

"अपने कार्यसे प्रेम करना सीखो। इसमें विलम्ब करना ठीक नहीं।"

इन वाक्योंको सदा स्मरण रखो। प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, प्रतिमास, प्रतिवर्ष इन्हें अपने कानोंमें गूँजने दो— जब कि तुम जीवनके महान् लक्ष्य, 'सफलता' के लिए युद्ध कर रहे हो। स्मरण रखो मिस्टर ड्यूककी यह शिक्षा है कि यदि तुम अपने प्रस्तुत कार्यसे प्रेम करनेमें असमर्थ हो, तो इसे तुरन्त त्याग करो। इसमें अधिक समय नष्ट करना उचित नहीं है। जीवन अल्प है। समय अमल्य है। धीमान् इसे व्यर्थ नहीं बीतने देते। काम करनेकी केवल मशीन मत बनो। जो काम सामने रख दिया गया उसे खतम कर दिया। बस, इसीको अपना फर्ज न समझ लो। तुम्हें कुछ इससे अधिक करना है। लक्ष्य-हीन कार्य कोई कार्य नहीं है। उद्देश्य-हीन कार्य करना जीवन को बरबाद करना है। कागज़की मशीनकी तरह तख्तेका तख्ता कागज निकाल कर रख दिया। जब चलाया तो चलने लगी, जब बन्द किया तो बन्द हो गई। इसके अतिरिक्त और कुछ न जानना, न समझना। यदि ऐसा ही है, तो फिर मनुष्य और मशीनमें अन्तर क्या रहा? नहीं, नहीं। तुम्हारा जीवन इस प्रकार मशीनका जीवन नहीं होना चाहिए। परमात्माने तुम्हें विचार दिया है। तुम्हारे अन्दर बुद्धिका समावेश है। इनका उचित प्रयोग करो और प्रेम तथा विचार पूर्वक अपने कार्य

मे लग जाओ। तुम्हारे सम्मुख विशाल भविष्य पड़ा हुआ है। इससे निश्चिन्त होकर न बैठो। अपने कार्यमें सच्चे हृदयसे लग जाओ, इसमें अपना व्यक्तित्व, अपना मस्तिष्क तथा अपनी समस्त शक्ति लगा दो, सुखमय भविष्यके लिए सचाई, इमानदारी तथा पवित्रतासे कार्य करो, परन्तु फलके लिए चिन्ता न करो। कार्य करना तुम्हारा धर्म है॥ सत्यता पूर्वक इसीका निर्वाह करो। विश्वास रखो, तुम्हें-धोखा कदापि न होगा।

अपने प्रयत्नोमें तुम्हें इस प्रकार एकचित्त होकर लगना चाहिए, मानो तुम उसमे सर्वथा लीन हो गए हो। तुम्हें अन्य किसी बातका मानो ध्यान ही नहीं है। उस समय सारा संसार तुम्हारे लिए निद्रामय है, शान्त है, सन्नाटा है। तुम्हारा कार्य तुम्हारे लिए एक वृहत् सागर है, जिसमें तुम्हारे विचारका जहाज तैर रहा है। बस उसपर तुम सवार हो, पृथ्वीका कोई भाग दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। चारो ओर वही समुद्र है, वही कार्यका समुद्र है। इस प्रकार अपने कार्यमें तल्लीन होना चाहिए। ऐसे दत्तचित्त होनेकी आवश्यकता है। इसलिए पहले पहल प्रत्येक कार्य-कर्ताका धर्म है कि वह एक ऐसे कार्यक्षेत्रकी खोज करे जो उसके अनुकूल हो। जिसमें उसे दिलचस्पी हासिल हो सके। जब तक दिलचस्पी न होगी तब तक एकाग्रचित्त होना कठिन है और बिना इसके उन्नति भी असम्भव है।

एलवर्ट हवर्ड (Elbert Hubbard) का कथन है कि जो मनुष्य कार्यमें अपनेको भूल जाता है, उसे ही सर्वोत्तम सफलता प्राप्त हो सकती है।

जीवन कुछ अंशमें हमारे लड़कपनके खेलोकी तरह है।

यदि लड़का किसी खेलमें अधिक दिलचस्पी लेता है, तो उसका चित्त उसी ओर लगा रहता है और अन्तमें वह बड़ा प्रसिद्ध खिलाड़ी हो जाता है। इसी प्रकार जीवनमें जिस कार्यका हम चुनाव करते हैं वह एक भारी खेल है, जिसे जीवन पर्य्यन्त खेलना पड़ता है। यदि इसमें हम पूर्ण मनोयोगके साथ लग जायँ, यदि हमारा ध्यान इस ओर पूर्ण रूपसे आकर्षित हो जाय, तो निस्सन्देह हमें पूरी सफलता प्राप्त होगी। परन्तु इसके प्रतिकूल यदि हमने दिलचस्पी नहीं ली और आलस्य तथा अनाचारके दास बन बैठे, तो असफलता अनिवार्य्य है।

तुम्हारा कार्य्य चाहे किसी प्रकारका हो, तुम इसमें कुछ दिलचस्पी अवश्य लो। अपने साथियोसे इसे, अच्छा करनेका प्रयत्न करो। ऐसे यत्न निकालनेकी कोशिश करो, जिससे वह कार्य्य अधिक शीघ्रता, सरलता तथा पूर्णताके साथ हो सके। अपने मस्तिष्कका प्रयोग करो। सोचो, चाहे कितना ही समय लग जाय। दिमाग लड़ाना हर हालतमें अच्छा है। खाई खोदनेमें भी बुद्धि लड़ानेकी आवश्यकता है। परिश्रमी मनुष्योंने इन साधारण कार्य्योमें बुद्धि लगाकर अनेक नवीन युक्तियोका आविष्कार किया है।

यदि तुम किसी ऐसे कार्यमें लगे हो जिसमें तुम्हें आनन्द नहीं आता, तो फौरन उसे छोड़ दो। अधिक विचार करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। शीघ्रातिशीघ्र उसे छोड़ो। इसीमें कुशल है, और किसी ऐसे कार्यकी खोज करो, जिसमें तुम्हारा मन लगे। थोड़े समयके लिए तुम्हें हानि अवश्य उठानी पड़ेगी। पर इसकी चिन्ता न करो। अन्तमे तुम्हें लाभ होगा और तुम्हारी सब कठिनाइयाँ दूर हो

जायँगी। जिस कार्यमें चित्त लग जाता है वह कार्य खेलकी तरह हो जाता है। उसमें कोई कठिनाई प्रतीत ही नहीं होती; इसे तुम एकाग्र मन होकर करोगे और तुम्हारी योग्यताओंका पूर्ण विकास होगा, जिसके द्वारा तुम्हें जीवनमें सफलता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त अन्य कोई रीति सफलता प्राप्ति की नहीं हो सकती।

# छठवाँ अध्याय

## प्रसन्नता

1. Circumstances in themselves have no power for either good or evil. The thought you have of them determines their effect upon yourself.

H. H. Brown,

2 Laugh, and the world laughs with you,
Weep, and you weep alone.

Ella Wheeler Wilcox,

3. Make it your profession, your business, your trade, occupation, vocation, the aim and object of life to keep your own self always peaceful and happy, independent of all surrounding circumstances, irrespective of gain or loss, your highest duty, in the world laid upon your shoulders by God, is to keep yourself joyful.

Swami Ramtirth,

यह कहा गया है कि–'जीवन ठीक वैसा ही है जैसा हम इसे बनाते हैं।' इसमें कुछ अत्युक्ति हो सकती है; परन्तु साधारणतः अपनी हर्ष तथा विषादमय स्थितिके उत्पादक हमी हैं।

"हँसो देखो संसार तुम्हारे साथ हँसता है,
रोओ, तुम अकेले बैठकर रोते हो।"

एला ह्वीलर विलकाक्स

इस कहावतका बार-बार उल्लेख किया जाता है और

इसमें बहुत कुछ सत्यताका अंश भरा पड़ा है। प्रत्येक व्यक्तिको इससे अमूल्य शिक्षा प्राप्त होती है। कठिनाइयोंका तुम्हारे ऊपर उतना ही प्रभाव पड़ता है, जितना तुम उसे समझते हो। तुम्हारे दुःखोंको उतनी ही महत्ता प्राप्त है, जितनी तुम उसे दे सकते हो। न इससे अधिक, न कम। दूसरे शब्दोंमें यह कह सकते हैं कि तुम्हारा सुख-दुःख अधिकतर तुम्हारे विचारों परही निर्भर है। अपनी वर्तमान दशाको जैसा तुम समझते हो वैसीही तुम्हें प्रतीत होती है। यदि तुम्हारे हृदयमें यह धारणा बनी है कि मैं नीच हूँ, निर्बल हूँ, मुझमें सोचनेकी शक्ति नहीं, मेरा पडोसी मुझसे अधिक बलवान तथा बुद्धिमान है, उससे सर्वदा डरते रहना चाहिए, कदाचित् मुझे वह मार बैठे, मेरा सब कुछ अपहरण करले, तो तुम निश्चय जानो कि तुम वैसेही बने रहोगे और तुम्हारी स्थिति अच्छी न होकर दिनोंदिन शोचनीय होती जायगी। वास्तवमें तुम उतने निर्बल, नीच और कमअक्ल नहीं हो, जितना तुम अपनेको समझ रहे हो। यह केवल तुम्हारा विचार है और विचार ही ने तुम्हें इस दशामें पटक रखा है। यदि तुम ऊपर उठना चाहते हो, यदि उन्नतिके मार्गपर पैर रखना चाहते हो, यदि तुम अपनी वर्तमान दशाके अति संकुचित घेरेके बाहर निकलनेके इच्छुक हो, तो तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है कि तुम अपने अन्तःकरणको क्षुद्र विचारोंके कड़े बन्धनसे मुक्त करो। अपने हृदयसे दुर्भावनाओंको दूर करो, अपने मनको घृणित विचारोंमें लिप्त न होने दो। निर्बलताके स्थानपर दृढ़ता, कादर्य्यके स्थानपर शौर्य्य, आलस्यके स्थानपर गम्भीरता, संकोचके स्थानपर स्पष्टताके विचारोंको आसीन करो। देखो, तुममें कितना बड़ा परिवर्तन होता है। अपनी

परिवर्तित दशापर स्वयं तुम्हें ही आश्चर्य होगा। तुम एक ऐसी शक्तिका अनुभव करोगे, जिसका तुम्हें अबतक ध्यान भी नहीं है। तुम्हारा घर वही, तुम्हारा धन वही, तुम वही तुम्हारा पड़ोसी वही। देखनेमें सब वही, पर परिवर्तन भारी हुआ। अभी तुम निर्बल थे, अब सबल हो गए। अभी तुम नीच थे, अब बड़े हो गए। अभी उस पड़ोसीसे डरते और दबते थे, अब निर्भीक और उद्दण्ड हो गए। इतना बड़ा उलट-फेर मिनटोंमें हो गया और प्रत्यक्ष देखनेमें कुछभी नहीं आता; बड़े आश्चर्यकी बात है। परन्तु नहीं, इसमें आश्चर्य्य तनिक भी नहीं है। तुमने आन्तरिक काया पलट दी, तुमने विचारोंको पलट दिया। बस यही कारण है। विचारोंका प्रभाव मनुष्य जीवनपर सबसे अधिक पड़ता है। बल्कि मनुष्य विचारोंका ही पुतला है।

अक्सर देखा गया है कि मोटे आदमी बड़े हँसोड़ होते है। उन्हें हँसी जल्दी आ जाया करती है। कुछ लोगोंकी यह धारणा है कि उनके मोटे होनेमें हँसीने भी बहुत कुछ सहायता पहुँचाई है। कुछ भी हो, पर यह बात निर्विवाद है कि हँसनेसे स्वास्थ्यलाभमें सहायता अवश्य मिलती है। प्रसन्नता तथा शक्तिमें विशेष सम्बन्ध है। अस्तु; जब कभी किसी आपत्तिका सामना करना पड़े, प्रसन्नतासे करो। ठनाईमे मलिन-मुख होनेसे दुःखकी मात्रा और भी बढ़ जाती है। इसलिए सर्वदा प्रसन्न चित्त रहनेका प्रयत्न करो। संकट तथा क्लेशको हँसीमे उडा दो। सच तो यह है कि तुम्हारी हँसीकी सिसकारी और ठट्ठेकी आवाजके सामने भारीसे भारी विपत्ति भी नहीं ठहर सकती। साधारण कठिनाईको पहाड़ मत बनाओ। छोटी-छोटी घटनाओंपर

लाल-पीले न बनो। शीघ्रही उन्हें अपने ऊपर प्रभाव न जमाने दो। हँसनेकी बान डालो। प्रसन्न रहना सीखो। रोनी सूरत मत बनाओ। इस जीवनसे अधिकसे अधिक सुख तथा आनन्द प्राप्त करना तुम्हारा कार्य है। हँस-हँस कर ही तुम इसे पा सकते हो, रो कर नहीं। हताश न हो, आशा भंग न करो। धैर्य धारण करो। दुःखमय विचारोंको सुखमय बनादो, देखो आनन्द ही आनन्द है।

जापानियो द्वारा हमें अनेक उत्तमोत्तम शिक्षाएँ प्राप्त होती है। एक जापानी नवयुवकके घनिष्ठतम सम्बन्धी—माता, पिता, स्त्री, भाई, बहिनकी मृत्यु हो जाती है। उसके मुखपर उदासीनताका तनिक चिन्ह भी नहीं देख पड़ता। हँसता हुआ वह मृत्यु का दुःख समाचार लेकर तुम्हारे पास आता है। तुम्हें विश्वास नहीं होता कि वास्तवमें उसके किसी सम्बन्धी की मृत्यु हुई है। उसे तुम मजाकमें उड़ा देते हो। परन्तु बात सत्य है और अन्तमें तुम्हें विश्वास करना पडता है। उस जापानी नवयुवकके प्रसन्न-वदन होनेसे यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि वह अपने मृतक सम्बन्धीसे अप्रसन्न, रुष्ट अथवा खिन्न था या उसके अकल्याणका इच्छुक था। नहीं, ऐसा कदापि नहीं है। उस युवकका हृदय उस दुर्घटनासे टूक-टूक हो रहा है। अन्तःकरणमें वह दुःख घोर विप्लव मचा रहा है। परन्तु मुख उसका मलीन नहीं है, आँखोंमें आँसू नहीं है, वह रोता नहीं है, वह प्रसन्न है, वह हँसता है, मुस्करा कर बातें करता है।

आश्चर्य होता है कि यह बात क्या है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि जापानीके इस विलक्षण आचरणका क्या कारण है? प्रथम कारण यह है कि उस जापानीमें वह नम्रता और

शिष्टता वर्तमान है जो सदियोंसे चली आ रही है। वह इस लिए हँसता है कि उसे उदासीन और अफसोस करते हुए देखकर तुम्हें भी वैसा ही न करना पड़े। उसके मित्रका हृदय उसे दुःखी देखकर दुःखी न होने पावे, इस कारण वह आपत्ति पड़नेपर भी हँसमुख रहनेकी चेष्टा करता है। दूसरेका दिल दुखाना, दूसरेकी प्रसन्नताका अपहरण करना वह पाप समझता है। दूसरा कारण यह है कि स्वयं भी वह इसको स्वीकार नहीं करना चाहता कि वह शोक, दुखः अथवा आपत्तिको सहन नहीं कर सकता, महान्‌से महान् कष्ट आ पड़ने परभी उसको धैर्य्यपूर्वक सहन करनेमें ही वह अपनी वीरता समझता है। कष्टसहिष्णुता उसके लिए भारी गुण है। उसकी यह धारणा है कि संकटमें ही मनुष्यके गुणोंकी परीक्षा होती है। उसका दृढ़ विश्वास है कि उच्चपदासीन होनेके लिए विपत्तियाँ कसौटीका काम करती हैं। इसीलिए वह उनका स्वागत करता है, हर्ष पूर्वक उनका आलिङ्गन करता है। जापानीके लिए विपत्तिका आगमन शुभ है; क्योंकि यह उसके उज्ज्वल तथा प्रकाशमय भविष्यका सूचक है। इसी कारण वह प्रसन्नमुख दिखाई पड़ता है।

एक जापानीको तुम किसी ऊँचे स्थानसे नीचे गिरादो। वह गिरते ही हँसता हुआ उठ खड़ा होगा। उसके पैरमें चोट लगी है, परन्तु वह प्रकट नहीं होने देता कि उसे कहीं चोट आई है। यदि आई भी है, तो वह रोता नहीं है, हँसताही देख पड़ता है और हँसीमेंही सब घाव और चोटका दुःख भुला देता है। एकान्तसे एकान्त स्थानमें तुम उसके आचरण पर दृष्टि डालो। बाहर तथा भीतर कहींभी देखो। वह सदा

प्रसन्न नजर आएगा। वह ऐसा कभी नहीं करता कि तुम्हारे सामने हँसे और घरमें बैठकर रोवे। नहीं, वह सब जगह अपना व्यवहार एकसा ही रखने का प्रयत्न करता है। उसे दिखावटी काम नहीं भाता। उसका प्रेम सचाईसे है, दिखावट से नहीं। प्रसन्नतामें उसका विश्वास है। इसलिए वह सर्वत्र प्रसन्न रहता है-क्या बाहर, क्या भीतर।

प्रशियाके राजाके प्रसिद्ध राजवैद्य ह्यूफलैंड (Hufeland) ने सर्व प्रथम राजदरबारमें विदूषक रखनेकी सम्मति दी थी। हँसी द्वारा स्वास्थ्य लाभ करनेकी विद्याका उसने अन्वेषण किया था हँसनेसे शरीरके प्रत्येक अवयवमें बल पहुँचता है, पाचनशक्ति ठीक होती है और शक्तिकी वृद्धि होती है। मस्तिष्कका कूड़ा-करकट हँसीकी हवासे उड़ जाता है। दिमाग ताजा और हलका हो जाता है। मनहूसियत पास फटकने नहीं पाती। उदासीनता और मलीनता दूर बैठे रोया करते हैं। रोग, शोक अपना अस्त्र-शस्त्र लिये झींका करते हैं। आक्रमण करना तो दूर रहा, सिर भी नहीं उठा सकते। हँसीके ठहाकेके सम्मुख उनकी तोपका चौरासी मनका गोला बेकार हो जाता है।

आधुनिक सभ्यताके कतिपय महारथी ठट्ठा मारकर हँसना कोरी असभ्यता समझते हैं। जोरसे हँसनेसे उनकी ऊँची शानमें बट्टा लगता है। उनकी हँसीकी हद मुसकरा देने अथवा अधिकसे अधिक दाँत दिखा देनेमें है। इसके परे जाना सभ्यताकी सीमाका उल्लंघन करना है। जब कभी वह थियेटर या तमाशा देखने जाते है, तो मानो हँसीसे बाजी लगाकर बैठते हैं। दर्शकोंके अट्टहाससे जिस समय सारा मण्डप गूँज उठता है उस समय उनकी क्या दशा होती है?

हँसी उनके हृदयसे सभ्यताकी परवा न कर बाहर आना चाहती है, परन्तु वे मर्य्यादाका उल्लँघन कर अपमानित होना नहीं चाहते। अन्दरही अन्दर घोर संग्राम मचता है। उनके चेहरेसे ऐसा भाव टपकता है, मानो उन्होने बड़े गर्व और गम्भीरताके साथ हँसीको ललकार कर यह चुनौती दे रखा है कि देखें तू हमें किस प्रकार हँसा देती है। परन्तु स्मरण रहे कि यह सिद्धान्त ठीक नहीं है। ऐसी सभ्यताका पक्षपाती बनना हानिकर है। थोड़े समयमें इन सूखी और कड़ी मानसिक लड़ाइयोसे अनर्थकी आशंका है।

इज्ज़तदार वेवकूफ मत बनो। ऐसी इज्ज़त, ऐसी सभ्यताको पानीमें बहादो, हवामें उड़ादो, जमीनतले गाड़दो। हँसनेकी आदत डालो। खूब दिल खोलकर हँसना सीखो। निस्संकोच होकर हँसो, ठट्ठा मार कर हँसो। हँसनेमें भारी गुण है। इसमें गुप्त रूपसे शक्ति विद्यमान है। इससे उपकार होगा, अपकार नहीं। तुम बलवान और बुद्धिमान बनोगे। पर साथ ही अपनी बल-बुद्धिका ढिंढोरा मत पीटो। यदि संसार तुम्हारी शक्तिको नहीं जानता तो उसे अनभिज्ञ रहने दो।

# सातवाँ अध्याय

## सत्यता

1. Think truly, and thy thoughts
   Shall the world's famine feed,
   Speak truly, and each word of thine
   Shall be a fruitful seed,
   Live truly, and thy life shall be
   A great and noble creed.

Dr. Bonar.

2 Hold integrity sacred

*and*

3 Sacrifice money rather than principles.

Moses Rothschild.

बहुतसे लोगोंको इस तथ्यमें सन्देह हो सकता है कि वास्तविक सफलता प्राप्त करनेके लिए अविचल सत्यताकी बड़ी आवश्यकता होती है। इस प्रकार शंका करने वाले लोग अधिकतर ऐसे कहावती-सफल-मनुष्योंकी ओर लक्ष्य करके कहते हैं जिनमें सचाईकी मात्रा अत्यल्प अथवा कुछभी नहीं होती; जिनकी लोभी प्रकृति कभी सन्तुष्ट नहीं होती; जो इस बातकी परवाह नहीं करते कि वे अपनी अनियंत्रित इच्छाओंकी तृप्ति वैध रीतिसे करते हैं अथवा अवैध रीतिसे। जिनके निकट न्याय अन्यायमें कोई भेद भाव नहीं है, जो सुमार्ग तथा कुमार्गमें अन्तर नहीं समझते और उचित अनुचितका जिनको अणुमात्र ज्ञान नहीं है, हाँ, धन उनके पास अवश्य है; विशाल

सम्पत्तिके वे मालिक जरूर हैं। परन्तु इसे सच्ची सफलता नहीं कह सकते। वास्तविक सन्तोष इससे कभी नहीं प्राप्त हो सकता। प्रसन्नता इससे कोसों दूर भागती है। जो ऐसे नीच और घृणित कार्य्य कर सकते हैं उनकी बुद्धि संकीर्ण होती है और उनका अन्तःकरण मलीन तथा संकुचित होता है। पूर्ण और सच्चे आनन्दका अनुभव उनको कदापि नहीं हो सकता।

ईमानदारीसे काम करनेसे, सचाईका व्यवहार करनेसे, मनुष्यको उचित लाभ प्राप्त होता है, निष्कपट व्यवहारसे चित्तको सन्तोष होता है, बुद्धि स्वतन्त्र होती है, जिससे आनन्दका अनुभव होता है। केवल इतना ही नहीं, आर्थिक लाभ भी यथेष्ट होता है। तुम्हारी इच्छा क्या है, इसकी चिन्ता न करो। अपनी लालसाओंके फेरमें न पड़ो। सफलता प्राप्त करनेके लिए तुमको अधिक समय तक किसी विशेष कार्यमें संलग्न रहना पड़ेगा। एक खास क्षेत्रमें तुम्हें अपनी शक्तियाँ लगा देनी पड़ेगी। धैर्य्यका अवलम्बन करना पड़ेगा। स्वावलम्बी बनना होगा। यदि तुम बेईमानी करोगे, कपटसे काम लोगे तो मुश्किल है। किसी लापरवाहके यहाँ तुम्हारी बेईमानीका पता सम्भव है, देरसे लगे, परन्तु लगेगा अवश्य, देर या अबेर। जब तुम्हारी चाल पकड़ी जायगी, जब तुम्हारे कपटका भण्डाफोड़ होगा, तो तुम्हारे सब किये करायेपर पानी फिर जायगा। तुम निकाल बाहर किये जाओगे और तुम्हें अपने जीवनको फिरसे आरम्भ करना होगा तुम्हें निम्नतम श्रेणीसे पुनः कार्यारम्भ करके ऊपर उठनेका प्रयत्न करना पड़ेगा।

ऐसे अवसर भी आसकते हैं जब तुम्हें बेईमानीके कामके बदले उत्तम पुरस्कार मिल जाय। परन्तु बड़ासे बड़ा आ-

र्थिक लाभ तुम्हें क्यों न हो जाय, मैं यह अवश्य कहूँगा कि तुमने अपनेको बड़े सस्ते मूल्यमें बेच दिया। थोड़ेसे रुपयोंके लालचमें आकर तुमने उस चीजको गँवा दिया जो अमूल्य है। इस भारी क्षतिकी पूर्ति बड़ीसे बड़ी रुपयोंकी संख्या नहीं कर सकती। निस्सन्देह तुमने यह सौदा बहुत बुरा किया। अमूल्य रत्नको काँचके भाव विक्रय किया। यदि तुम सच्चाई पर डटे रहते, यदि तुम यह प्रकट कर देते कि तुम किसीभी मूल्य से परे हो; यदि तुम डंकेकी चोट यह जाहिर कर देते कि रुपयोंमें यह शक्ति नहीं जो तुम्हें धर्म तथा सत्यताके पवित्र मार्गसे विचलित कर बेईमानीके कार्य्यमें प्रवृत्त कर सके, तो तुम्हें वह धन प्राप्त होता जिसकी महत्ता तथा श्रेष्ठता की माप करना मानवशक्तिसे परे है।

जीवनका कार्य्य दृढ संकल्प तथा स्थिर नियमोंके साथ आरम्भ करो। निश्चित लक्ष्यको सदा सामने रखो और निरन्तर कदम बढ़ाते जाओ। मार्गमें अनेक कठिनाइयाँ मिलेंगी, जो कष्टसाध्य प्रतीत होंगी। परन्तु वीरता-पूर्वक उन का सामना करना होगा। घबड़ाकर कार्य्यविमुख होना नामर्दोंका काम है। सम्भव है, सलाह देनेवाले भी तुम्हें सच्चा मार्ग न बता सकें। परन्तु तुम किसी फेरमें न पड़ो। अपने संकल्पको देखो और ईश्वरीय नियमोंकी ओर ध्यान दो। हृदयमें साहसको स्थान दो। उत्साह भंग न होने दो। सदा प्रसन्न चित्त रहो और अन्तःकरणकी गुप्त शक्तिके निर्देशपर सदा पूर्ण दृष्टि रखो। विश्वास रखो, यह ईश्वरीय शक्ति है, जो सदा भले बुरेकी पहचान कराती है। आवश्यकता केवल इस बातकी है कि इसके आदेशोंका सच्चे हृदय से पालन किया जाय। यदि तुम इसकी शिक्षापर ध्यान न

दोगे, यदि तुम इसके शब्दोंको सुनते हुए भी अनसुनी कर दोगे, यदि तुम बारबार इसके आदेशोंकी अवज्ञा करोगे, तो वह शक्ति निर्बल होती जायगी और अन्तमें वह मृतप्राय हो जायगी। फिर तुम अँधेरेमें भटकते फिरोगे। संसारके कूड़े करकटमें तुम्हारी गणना होगी। जीवनकी सफलतासे कोसों दूर रहना पड़ेगा। जीवन-मरण तुम्हारे लिए समान होगा। सच तो यह है कि ऐसी जिन्दगीसे मर जाना श्रेयस्कर है।

कीचड़में लोटनेवाला सूअर उस मनुष्यसे अच्छा है जिस के जीवनका नियंत्रण उच्च नियमो द्वारा नहीं होता। तुम कौन हो और क्या करते हो, इससे कोई मतलब नहीं। चाहे किसानके लड़के हो, चाहे व्यापारी हो, चाहे क्लर्क हो, या किसी अच्छे पदपर आसीन हो, तुम्हारे जीवनका एक मात्र उद्देश्य यह होना चाहिए कि सबके साथ न्याय, सचाई तथा ईमानदारीका व्यवहार करें। क्या छोटा क्या बड़ा, सबके साथ निष्कपट आचरणसे मिलना चाहिए धोखेका काम कदापि नहीं करना चाहिए। भूलकर भी किसीके अपकारका विचार मनमें न लाना चाहिए। यथाशक्ति परोपकारमें ही लगे रहना चाहिए। इसका परिणाम यह होगा कि अन्य लोग भी तुम्हारे साथ वैसीही ईमानदारी और सचाईके साथ पेश आवेंगे। तुम्हें धोखा खानेका भय न रहेगा। तुम्हारी गणना उच्च कोटिके लोगोंमें होगी। सभी तुम्हें उदार तथा सम्मानकी दृष्टिसे देखेंगे। सच्चे मनुष्यत्वके आनन्दका तुम्हें अनुभव होगा। तुम्हें वह स्थान प्राप्त होगा जो करोड़ों रुपये में नहीं खरीदा जा सकता।

व्यापारी लोग अक्सर यह कहा करते हैं कि तिजारती

दुनियांमें विना झूठ बोले काम नहीं चल सकता। कभी-कभी यहाँतक कह जाते हैं कि झूठ और धोखा तिजारतकी सफलताके मूल मन्त्र है। परन्तु शोकके साथ कहना पड़ता है कि उनका यह विचार नितान्त भ्रामक है। वे भारी भूल कर रहे हैं, अपने आपको वे धोखा दे रहे हैं। यह न्याय नहीं है। यह सत्य नहीं है। यदि वे सचाईके साथ विचार करें, यदि वे वुद्धिकी संकीर्णताको छोड़ कर, स्वार्थपरतासे परे होकर, सोचें, तो उन्हे ज्ञात होगा कि उनकी यह नीति अति कुटिल है, उनकी आत्माको पतित करनेवाली है, मनुष्यत्वसे गिराने वाली है। वे सदा असत्य और कपटके संसारमें निवास करते हैं। भला उन्हें सच्चा सुख, सच्चे प्रसन्नताका क्या अनुभव हो सकता है? वे ऐसी गहरी खाई खोद रहे हैं जिस में उनको स्वयं गिरना पडेगा और कुत्तेकी मौत मरना पड़ेगा। क्या झूँठ, असत्य, धोखे अथवा कपटसे मनुष्यका जीवन आनन्दमय हो सकता है? क्या उसे वास्तविक सफलता प्राप्त हो सकती है? नहीं, कभी नहीं। हाँ, थोडे समयके लिए उसके पास रुपया जमा हो सकता है। वह भारी सम्पत्तिका स्वामी वन सकता है। परन्तु दो दिनके लिए, केवल दो दिनके लिए, उसने अपनी आत्मावे उच्च भावोंको पददलित कर दिया है, अपने को धोखा देकर मनुष्यत्वके उच्च आसनसे नीचे पटक दिया है, उसका फल उसे अवश्य भोगना पडेगा। इससे कदापि छुटकारा नहीं मिल सकना। कर्मोंका फल अवश्य ही मिलता है। 'वुवै सो लुनै निदान' की कहावत अक्षरशः सत्य है और यह चरितार्थ हुए विना नहीं रह सकती।

अटल सत्यताकी नींवपर जीवन-निर्माण करो। आदिसे

अन्ततक इसपर दृढ़ रहो। सत्यको छोड़कर किसी अन्य नीति का अवलम्बन न करो। वह नीति तुम्हें थोड़े समयके लिए लाभदायक भले ही प्रतीत हो; परन्तु अन्तमें वह हानिकारक है। क्योंकि वह सत्यके विपरीत है। तम सच्चे मार्गपर हो। इसपर चलनेसे तुम गलती नहीं कर सकते। हाँ, कभी-कभी हानि उठानी पड़ सकती है। आर्थिक संकटमें पड़ सकते हो या अन्य कठिनाइयोंमें उलझ सकते हो। परन्तु इस मार्गसे विचलित होनेपर तुम्हें और भी आपत्ति उठानी पड़ेगी।

वास्तविक तथा सन्तोषजनक सफलता सचाईके द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। अपने विचारोंको पुष्ट करो और संकल्पको दृढ़ करो। सदा उनपर आरूढ़ रहो। उनके लिए युद्ध करो। कट जाओ, मर जाओ, पर सत्यताके नियमोका उल्लंघन न करो ऐसा करनेसे तुम्हारा जीवन एक ऐसी सुदृढ़ नींवपर अवस्थित होगा जो चलानेसे न चलायमान होगा, न उखाड़नेसे उखड़ सकेगा। सम्भव है, थोड़े समयके लिए तुम्हें अन्धकारमें मार्ग टटोलना पड़े। पर यह निश्चय है कि तुमको आगे चलकर चमकती हुई रोशनी मिलेगी। तुम्हारा मार्ग साफ नजर आने लगेगा। तुम्हारा भविष्य प्रकाशमय होगा। सच्ची तथा वास्तविक सफलता, तुम्हे अन्तमें प्राप्त होगी।

दृढ़ संकल्पके साथ यदि स्वस्थ शरीरका संयोग हो जाय, तो फिर कार्य सिद्धिमें कोई सन्देह नहीं रह जाता। क्योंकि उज्ज्वल मस्तिष्कके साथ निरन्तर परिश्रम करते रहनेसे कठिन कार्य भी सहल हो जाता है। जो मनुष्य सफाईके साथ अपने लक्ष्यको देखता रहता है और वहाँ तक पहुँचनेके

लिए निष्कपट भावसे प्रयत्न किया करता है, वह सर्वदा चैतन्य, जागृत तथा दृढ़ रहता है। उसे सुअवसर निरन्तर प्राप्त हुआ करते हैं।

सफलता उन्हींको प्राप्त होती है, जिनके विचार परिपक्व हैं, जिनके संकल्प सुदृढ हैं, जो अक्षय सत्यके पालन करनेवाले हैं, जो निरन्तर प्रयत्न तथा अविरल परिश्रम करने वाले हैं। अपनी इच्छाओ, उत्साह और उमङ्गोको इस मार्गपर, इसी रीतिपर, नियंत्रित करो। अन्तमें तुम्हारी सब कामनाएँ सफल होगी। तुम निस्सन्देह अपने प्रयत्नों का, अपने परिश्रमोका, फल पाओगे।

# आठवाँ अध्याय

## एकाग्रता

1. Concentration upon any occupation means success in it

H. H. Brown.

2. He, who would do some great thing in this short life, must apply himself to the work with such concentration of his forces, as to idle spectators, who have only to amuse themselves, looks like insanity.

Francis Parkman.

3. Not many things indifferently, but one thing supremely, is the demand of the hour. He who scatters his efforts in this intense, concentrated age, cannot hope to succeed.

Orison S. Marden.

4. The weakest living creature, by concentrating his powers on a single object, can accomplish some thing, whereas the strongest, by dispersing his over many, may fail to accomplish any thing-

Carlyle,

यह समय विशेष योग्यताका है। यानी इस जमानेमें इस बातकी बड़ी आवश्यता है कि मनुष्य किसी एक विषयका पूर्ण पारगामी बने उसके बारेमें अधिकसे अधिक ज्ञान प्राप्त करे, उसके सर्वांशसे परिचित होनेका प्रयत्न करे। उस विषय की कठिनसे कठिन और टेढ़ीसे टेढ़ी बातोंका सुलझानेकी क्षमता प्राप्त करे। अधिकतर देखा जाता है कि जो कई

विषयोंकी थोड़ी-थोड़ी बातें जाननेका दावा करता है वह किसी विषयको भली प्रकार नहीं जानता। वास्तवमें उसके लिए यह सम्भव भी नहीं है। क्योंकि किसी एक कार्यमें पूर्ण तथा दक्ष होनेके लिए इतने परिश्रम, इतने समय और इतना ज्ञानउपार्जन करनेकी आवश्यकता है कि कार्यकर्ताको अन्य विषयकी ओर ध्यान देनेका अवकाश मिलना भी दुस्तर है। इसलिए यह निश्चय है कि जो एकसे अधिक कार्यमें हाथ डालेगा और सबके विषयमें योग्यता प्राप्त करनेकी कोशिश करेगा वह किसी एकको भी न जान सकेगा। निष्कर्ष इसका यह हुआ कि यदि तुम सफलताके इच्छुक हो, यदि तुम इस जीवनमें सच्चे सुखका उपभोग करना चाहते हो, तो किसी एक कार्यको हाथमें लो और उसीपर अपनी सारी शक्ति लगा दो उसमें पूरी योग्यता प्राप्त करो। एक चित्त होकर, एक दिल होकर, खूब मन लगाकर उस कार्यको करो। एक विशेष कार्यमें विशेष योग्यता प्राप्त करना परमावश्यक है। किसी कविने कहा है:—

"एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
जो तू सींचे मूलको, फूले फले अघाय॥"

जिस कार्यको तुमने हाथमें लिया है उसपर एकाग्रताके साथ चिन्तन करो, भलीभाँति मनन करो। दिनका कोई भाग निश्चित कर लो। उस समय तुम अपने मस्तिष्कसे उन समस्त विचारोंको बहिष्कृत करदो, जिनका तुम्हारे कार्यसे कोई सम्बन्ध नहीं है। संसारी झंझटोंसे थोड़े समयके लिए छुट्टी ले लो। मित्र-मण्डलीकी हास्य रस-मयी गप्पोंके आनन्दसे कुछ कालके लिए पृथक् हो जाओ। उस समय दुःख-सुख तथा हानि-लाभके समस्त विचारोंको छोड़ दो और शान्ति

पूर्वक एकान्त मनसे उसी खास विषयपर विचार करो। खूब ध्यान पूर्वक सोचो, श्रमपूर्वक तथा अविराम चिन्तन करो। यदि तुम साधारण श्रेणीसे ऊपर उठना चाहते हो, यदि तुम साथियोंको अतिक्रम करनेके इच्छुक हो, तो दिन-प्रति दिन, सप्ताह-प्रति सप्ताह, वर्ष प्रति वर्ष इसी प्रकार विचार करते जाओ। एकाग्रतामें भारी शक्ति है।

उन लोगोंकी ओर जरा ध्यानदो, जिन्होने जीवनमें सफलता प्राप्तकी है। उनके जीवन-चरित्रको उठाकर देखो और इस बातकी खोज करो कि इनकी सफलताका मूल कारण क्या था। प्रत्येकके विषयमें तुम यही देखोगे कि उसमें एकाग्रताकी भारी शक्ति थी। उसने अपने जीवनका अधिक अंश एकाग्रचिन्तनमें बिताया था। एकाग्रताही उसकी सफलाका मूल मंत्रथी। किसी रोजगारी दफ्तरमें जाओ और वहाँके कार्यकर्ताओंको देखो। वे किस प्रकार अपने कार्यमें लगे हुए हैं। कैसा गोता लगाये बैठे है। कार्य्यमे इतने लीन हो रहे हैं इस प्रकार तन्मय हो गए हैं कि अपने आपको भूले बैठे हैं। उन्हें अन्य किसी बातका ध्यान नहीं है। उनमेंसे किसी एकके पास बिना सूचना दिये चले जाओ और कोई प्रश्न करो। तुम्हें कोई उत्तर नहीं मिलेगा। कारण, प्रथम तो उसे इतना अवकाश नहीं जो तुमसे बात करे, दूसरे अपने कार्यमें वह इतना व्यस्त हो रहा है कि सम्भवतः उसने तुम्हारे प्रश्न को सुनाही न हो। इसी एकाग्रता, कार्य्यमें तल्लीन होजानेकी इस योग्यताका प्रभाव था कि उन लोगोंको अपने जीवनमें सफलता प्राप्त हो सकी।

असाधारण बुद्धिके मनुष्यही एकसे अधिक विषयोंमे पूरी योग्यता तथा सन्तोष जनक सफलता प्राप्त कर सकते है।

सर्व साधारणके लिए यह कठिन ही नहीं प्रत्युत असम्भव भी है। देखा जाता है कि बहुतसे मनुष्य, जो देखने में बड़े ही बुद्धिमान और चतुर ज्ञात होते हैं, अनेक कार्योंमें हाथ लगाते हैं और असफल हो जाते हैं। अपने प्रयत्नोंमें उन्हें अकृतकार्य ही होना पड़ता है। एक विषयमें भी सफलता उनके हाथ नहीं लगती। सामान्य बातचीतमें उनकी बुद्धिमत्ता तथा चातुर्य्य साधारण कोटिसे अधिकही जान पड़ती है, परन्तु उनमें वह खास तथा अत्यन्त आवश्यक गुण नहीं होता जिसे एकाग्रता कहते है। स्थिर-चित्त होकर अपने कार्य में लीन होना उन्हें नहीं आता; वे चञ्चल और चलायमान होते हैं कौनसा कार्य हाथमें ले रखा है इसकी कुछ परवाह न कर अपना अधिक समय ऐसे कार्य्योंमें लगाते हैं, जिनका उस खास कार्य्यसे कोई सम्बन्ध नहीं होता। उनकी विचार तथा कार्य कारिणी शक्तिका असम्बद्ध कार्योंमें अपव्यय होता है और इसी कारण उन्हें असफल होना पड़ता है। इस वर्तमान युगमें मामूली दर्जेकी योग्यतासे काम नहीं चलेगा। यह चढ़ा-ऊपरीका जमाना है। प्रतिद्वन्द्वताका पग-पगपर सामना करना पड़ता है। जीवनमें रोटी दालके लिए घोर संग्राम मचा हुआ है। इस संग्राममें सबको भाग लेना पड़ता है। इससे जान बचाना कठिन है। जब लड़ना ही है, तो युद्धकी पूर्ण सामग्री क्यो न एकत्र की जाय? अपनेको पूर्ण रूपेण शस्त्रास्त्रसे क्यो न सुसज्जित किया जाय? लापरवाह बनकर जीवनका सत्यानाश करनेसे क्या लाभ? प्राण रहते हुए मुर्देकी भाँति क्यो रहना चाहिए? जीता हुआ मुर्दा बनकर रहना घोर पाप है। इसलिए उठो, अपने आपको पहचानो, रणक्षेत्रको देखो और वीरकी तरह

लड़ मरकर अमर हो जाओ। यहाँपर समझनेमें गलती न करना। कहीं यह न समझ लेना कि बस रोटी दालके लिएही मारो-मरो। यदि ऐसाही हो, तो कुत्तोंमें और तुममें क्या अन्तर रहा? नहीं देखो जीविका वृत्ति एक प्रधान चीज है। बिना इसके कोई कार्य्य नहीं होता। क्यासमस्त कार्यही एक प्रकारसे इसीके लिए किए जाते हैं, इसके लिए उद्योग-धंधा करना ही पड़ता है। इसी उद्यम-धंधाके साथ एक दुम लगी है, जिसे मनुष्यत्व कहते है। इसकी रक्षा करना तुम्हारा प्रधान कर्तव्य है। जीविकाके लिए उद्यम और उद्योग करो। परन्तु कैसे? सचाईके साथ, ईमानदारीके साथ, निष्कपट होकर, किसीको सताओ नहीं। स्वार्थके लिए, अपने सुख के लिए किसीके साथ अन्याय, अत्याचार या बेईमानी न करो। सबसे प्रेम करो। जीवन-संग्रामके यही अस्त्र-शस्त्र है। यही तुमको पूर्ण विजयी बनावेंगे। विश्वास रखो। इन्हींके अनुसार चलो। बस यही मनुष्यत्व है, यदि तुमने इस प्रकार अपना जीवन बिताया, तो, तमने समरमे विजय पा ली। इसमें कोई सन्देह नहीं। तुम हर एक बातको जान भी नहीं सकते। वास्तवमें किसी विषयका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेके लिए तुम्हारी शक्ति परिमित है। एडीसन (Edison) जो बड़ा धुरन्धर लेखक था, कहा करता था कि किसी विषयके सौवेंका सौवां हिस्साभी कोई मुश्किलसे जानता होगा। यदि यह विद्वान, जिसने लेखन-कलामें अक्षय यश प्राप्त किया है, इस प्रकारकी बात कह सकता है, तो हम लोग जो अपने कार्य्यमें दक्षता प्राप्त करनेके लिए कठिनाईसे थोड़ा समय एकाग्र-चिन्तनमें लगाते हैं, उसका सब कुछ हाल किस प्रकार जान सकते है?

पाठकोंमेंसे अनेक ऐसा कह सकते हैं कि एकाग्रताकी शिक्षा देना बड़ा आसान है। लेकिन सब काम दिलचस्प नहीं और उसमें सुबहसे शाम तक जी-तोड़ परिश्रम करना पड़े, तो उसमें एकाग्रता कैसे की जा सकती है ?

जबकि एक आदमीकी निरन्तर यही इच्छा है कि वह प्रस्तुत कार्यको त्यागकर किसी अन्य कार्यमें अपना समय लगावे तो उसके लिए एकाग्रता कहाँतक सम्भव है ? जबकि हस्तगत कार्य अस्वास्थ्यकर असन्तोष जनक है और वास्तविक सफलताकी ओर अग्रसर करना नहीं दीख पड़ता, तो उसमें अपनी मानसिक तथा शरीरीक शक्तियोंको केन्द्रीभूत करना किस प्रकार सम्भव हो सकता है ?

एलबर्ट हबर्ड ( Elbert Hubbard ) लिखता है—"कि सफलता सरल नहीं है। जब तुम घाटीमें खडे हो, तो एका एक कूद कर पर्वतके शिखरपर आसीन नहीं हो सकते।"

वास्तवमें उपर्युक्त दशाओंमें एकाग्रताका पालन करना अति दुस्तरही नहीं, अवाञ्छनीय भी है। मनके अनुकूल कार्य्य होनेपर ही एकाग्रताका प्रयोग होसकता है। अतः इसकी दवा यही है कि उन्हीं शक्तियोंको प्रौढ़ तथा बलवती बनानेकी निरन्तर चेष्टा करो, जो अनुकूल कार्य मिलनेपर उन्नति करनेमें सहायक हो सकती है। जब तक प्रस्तुत कार्य मनके अनुसार नहीं है तब तक उसमें अपनी शक्तियोंको उसी सीमा तक केन्द्रीभूत करो जहाँ तक वह तुम्हारी दैनिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए आवश्यक है। कितने निर्धन और असहाय बिचारे इस जीवन-संग्राममें सर्वथा अयुक्त तथा असत उपपत्तियों द्वारा नियंत्रित हो रहे हैं। वे प्रत्येककार्यमें अपने हर एक प्रयत्नमें, दासताकी बेड़ी अपने पैरोंमें पड़ी हुई

समझते हैं। उनकी यह दृढ भावना है कि उनको सब कुछ अपनी इच्छाके प्रतिकूल परतंत्रतामें ही करना पड़ता है। उनमेंसे कुछ उद्योगी और साहसी होते हैं और अपनी अवस्था को समुन्नत करनेका प्रयत्न करते हैं। साधारणतः वे कुछ ऐसे पेशेका नाम लिया करते हैं जिसमें लगजानेकी उनकी इच्छा होती है, परन्तु अपनी योग्यतामें स्वयं उनका यह विश्वास नहीं है कि वे उस पेशेमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अपनी शक्तिमें विश्वास तभी हो सकता है, जब एक स्थिर लक्ष्य दृष्टिगत रखते हुए अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियोंका उचित प्रयोग किया जाय। यदि तुम किसी ऐसे कार्यमें लगे हो जिसमें तुम्हारी तबीयत नहीं लगती तो तुम शीघ्रही अपनी शक्तियोंको ऐसी दिशामें प्रयुक्त करो, जो शनैः-शनैः तुम्हें वाञ्छित कार्यके उपयुक्त बनावे। उस कार्यमें उतनाही समय लगाओ जितना बिलकुल अनिवार्य्य है अर्थात् तुम्हारी आत्मरक्षाके निमित्त जितना आवश्यक प्रतीत होता है। इससे अधिक समय लगाना अपनी शक्तिको व्यर्थ बरबाद करना है और अपने ही साथ भारी धोखा करना है।

बाज-बाज हालतमें यहभी देखा जाता है कि अपना पड़ोस तथा अपने घरवाले ही अपने इच्छित कार्यमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित करते हैं, उस उन्नत तथा वाञ्छित मार्ग पर अग्रसर होनेमें बाधक होते हैं। परन्तु इससे रुक जाना ठीक नहीं है। निरन्तर एकाग्रता तथा अनवरत परिश्रम द्वारा तुम उस कार्यके लिए तैयार हो सकते हो जो तुम्हारे लिए आनन्ददायक है, जिससे तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होती है और धीरे-धीरे तुम्हारे अनुकूल अवसर भी मिलने लगेगा।

"कार्य! कार्य!! कार्य!!! इस शब्दकी ध्वनिमात्रसे ही

कितनी अप्रसन्नता होती है। इसका नाम लेतेही कितना बुरा मालूम होता है। प्रत्येक व्यवसाय वाले, अपने-अपने कार्यकी निन्दा किया करते है। जीवनके किसी अंश पर विचार करके देखो, किसी प्रकारके कार्य करने वालेसे बात चीत करो, सभी एक स्वरसे कार्यकी निन्दा करते हैं। कोईभी अपने काममें खुश नहीं मालूम होता। वास्तवमें 'कार्य' का जो अर्थ आजकल समझा जाता है उसके अनुसार यह है भी अप्रसन्नता सूचक। आजकल लोग कार्य उसीको समझते हैं जो कुछ दबावमें पड़कर, अपनी इच्छाके प्रतिकूल, किया जाता है। ऐसे कार्यका सचमुच न होना ही अच्छा है। कार्यका यह रूप पलट देना चाहिए और उसको खेलका रूप देना चाहिए। कार्यको भार न समझ कर उसे खेल समझना चाहिए। सुबहसे शाम तक जो इस भावनासे कार्य कर रहा है कि 'कार्य्य करना आवश्यक है उसको यह भावना त्याग कर यह समझना चाहिए कि वह लगातार एक खेल, 'खेल रहा है, जिसमें उसे आनन्द प्राप्त हो रहा है। कार्यको खेल समझ लेनाही उसे पूर्ण करने की सुगम रीति है। उस प्रयत्नको छोड़ दो, जिसे तुम भार समझ रहे हो, जो तुम्हारे अनुकूल नहीं है। रोशनीको इसके सच्चे रूपमें देखो। यह समझना आरम्भ करदो कि तुम्हारा सच्चा कार्य वही है, जिसमें तुम्हें पूर्ण आनन्द प्राप्त होता है। ऐसे कार्यमे तुम्हारी योग्यता नित्य बढ़ती जायगी, क्योकि तुम्हें इसमे प्रसन्नता प्राप्त हो रही है। इस प्रकार वास्तविक सफलताके सच्चे सुखका अनुभव आजीवन प्राप्त होता रहेगा। कार्यको भार समझना बन्द कर खेल समझना आरम्भ करो, क्योकि इसीमें तुम्हारे प्रयत्नोका सच्चा पुरस्कार और इसीमें सच्ची सफलता है।

# नवाँ अध्याय

## संसारमें तुम्हारा उचित मूल्य

Never try to appear what you are not.

Moses Rothschild

मानव-समाजमें अक्सर दो प्रकारके मनुष्य मिलते हैं। एक वह, जिन्होने अहमन्यताको चरम सीमा तक पहुँचा दिया है और दूसरे वह, जिन्होने नम्रताको अमर्य्यादित रूप दे दिया है। प्रथम कोटिके जीव समझते हैं कि समस्त संसार में हमारी समता करनेवाला कोई नहीं है। भद्रता, शिष्टता, विद्वत्ता तथा धनाढ्यता आदि सभीकी दृष्टिसे वे अद्वितीय हैं। दूसरे श्रेणीके प्राणी इसके प्रतिकूल, मारे नम्रताके अपने को सर्वथा तुच्छ, नीच, दुर्बल और अयोग्य समझते हैं। उनकी धारणा है कि वे संसारके किसी कार्यके योग्य नहीं हैं और इस जगत्में उनके लिए कोई स्थान नहीं है। यह बात बहुतोंके विषयमें कुछ हद तक ठीक भी है। परन्तु साधारणतः ये दोनों ही प्रकृतियाँ वास्तविक सीमाका उल्लंघन करती हैं। अतः ये सम्पूर्णतया असत्, त्याज्य और अग्राह्य हैं। इनसे बचना चाहिए।

यथोचित मात्रामें आत्माभिमानका होना बुरा नहीं है, प्रत्युत आवश्यक है। मानव-जीवनकी वास्तविकताका अनुभव करनेके लिए आत्माभिमान उतनाही आवश्यक है जितना जीवनके लिए वायु। अपनी योग्यताका, अपनी बुद्धिका, अपने बल-पौरुषका तथा अपने धन-धान्यका मिथ्या प्रलाप करना, थोड़ेको बहुत बढ़ाकर कहना आत्माभिमान नहीं कहा

जा सकता। यह अहंकार है, प्रपंच है, घमंड है। इस प्रकार की भावना कलुषित है, धोखा देनेवाली है। आत्माभिमान पवित्र है, सन्मार्ग-प्रदर्शक है। अपने गुण, अवगुणका यथावत निरीक्षण करना, संसारकी हाटमें अपना उचित मूल्य निर्धारित करना तथा उसपर अचल रहते हुए निर्भीक जीवन व्यतीत करना आत्माभिमान है। दूसरेकी दृष्टिमें उच्च बननेके लिए झूठ-मूठ शेखी न बघारना तथा स्वत्वाधिकारपर अनाचार पूर्ण व्यवहारका बल पूर्वक प्रतिरोध करना आत्माभिमानके लक्षण हैं। अपनी योग्यता तथा शक्तिका ठीक-ठीक अन्दाज करना चाहिए और उसीके अनुसार बरतना चाहिए न कम न बेश। यदि तुम वास्तवमें अधिक योग्यता रखते हो, यदि तुमने अच्छे गुणोंका संग्रह किया है, यदि तुम विद्या-बुद्धि से सम्पन्न हो, तो कदापि तुम अपना मूल्य लगानेमें गलती न करो। संसार तुम्हें उसी दामपर खरीदेगा जो तुमने स्वयं लगाया है। उससे अधिक कदापि नहीं मिल सकता। इसलिए 'सस्ता आदमी' बननेसे सावधान रहो। यदि तुम स्वयंही सस्ते मूल्यपर बिकनेको तयार होगे, तो भला अधिक दाम कोई क्यो देने लगा? तुम्हारी योग्यता कुछ भी हो, पर सस्ते पनेसे बचनेका ध्यान रखो। अर्थात् खामख्वाह नीच, अबोध तथा अज्ञानी कभी मत बनो।

निस्सन्देह यह भारी भ्रम है कि अपना मूल्य उचितसे अत्यधिक लगाया जाय। परन्तु अल्प मूल्य लगाना तो उससे भी बढ़कर भ्रम है। यदि तुम अपने विषयमें अतिशयोक्ति करोगे और मिथ्या प्रपंच दिखानेका प्रयत्न करोगे, तो थोड़े ही दिनोंमें संसार तुम्हारी पहचान ठीक-ठीक कर लेगा और खींचकर तुम्हें उसी स्थानपर गिरा देगा जहाँपर ठहरना

तुम्हें उचित है। परन्तु यदि तुम स्वयंही नीच, निर्बल तथा अबोध बनोगे, सस्तेदाममें ही दूसरोंका कार्य कर दोगे, तो ध्यान रहे, संसार शायदही तुम्हें उठाकर तुम्हारे उचित स्थानपर पहुंचाए।

अपनी योग्यताओंका यथेष्ट अनुसन्धान करो। इस विषय में अतिशय शील होना हानिकारक है। अधिक नम्र होना भी दोष है। अगर तुम्हें कोई नौकर रखना चाहता है, तो उसके सम्मुख तुम कदापि अपनी हीनता न प्रकट करो। नम्रताके वशीभूत होकर उसके हृदयमें यह भावना न पैदा करो कि तुम किसी योग्य नहीं हो। उससे यह कहना कि "मैं किस योग्य हूं, मुझे क्या आता है," उचित नहीं है। तुम तो कदाचित नम्रभावसे कह रहे हो, परन्तु उसके चित्त पर इसका प्रभाव उलटा होता है। वह सचमुच तुम्हें अयोग्य समझेगा और तुम्हें शायद रखना भी पसन्द न करेगा। यदि रखेगा भी तो अल्प वेतनपर। जिस कार्यपर वह तुम्हें नियुक्त करना चाहता है, उसका यदि तुम भलीभाँति सम्पादन कर सकते हो, तो भूलकर भी नम्रतावश अपनी अयोग्यता न दर्शाओ। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारा स्वामी, यह समझकर कि तुम सत्य कह रहे हो, तुम्हारी बातोंपर विश्वास कर लेगा और यदि वह यह समझ ले कि वास्तवमें तुम योग्य हो, पर झूठ बोल रहे हो, तो तुमपर वह विश्वास नहीं करेगा। उसका विश्वास न करना सर्वथा उचित भी है, क्योंकि तुम असत्य-भाषण कर रहे हो। फल यह होगा कि वह तुम्हें कार्य्यपर नियुक्त न करेगा।

यदि तुम कहीं नौकरीकी खोजमें जाओ तो अपने नवीन स्वामीके समक्ष अपनी सेवाका मूल्य अल्प न लगाओ।

वेतनके विषयमें यदि तुम आदिमें ही नम्र हो जाओगे, तो स्मरण रहे तुम्हें तुम्हारी योग्यतासे कम ही वेतन मिलेगा और उसीपर तुमको सन्तोष करना पड़ेगा। शायद तुम यह सोचते होगे कि आरम्भमें जो मिल जाय उसे ले लेना चाहिए और आगे चलकर जब मालिक हमारे गुणोंसे पूर्ण परिचित हो जायगा, तो वेतन-वृद्धि भी हो जायगी। तुम्हारा यह सोचना ठीक तो अवश्य है, पर व्यावहारिक संसारमें ऐसा होता नजर नहीं आता। तुम्हारा स्वामी तुम्हारे वास्तविक गुणोंसे परिचित होनेपर यह सोचता है कि अच्छा हुआ कि इतने सस्तेमें ऐसा गुणी मिला। गुणोंको देखकर तुम्हारी वेतन-वृद्धिकी बात उसके मनमें नहीं आ सकती। कारण, तुमने अत्यल्प वेतनपर ही उसके यहाँ कार्य करना स्वीकार कर लिया, इसलिए उसका यह समझना युक्ति संगत है कि तुम बिना किसी तरक्कीके भी कार्य्य कर सकते हो। तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि व्यवसाय कभी उदारता अथवा दानवृत्तिसे नहीं चलाये जाते। इसमे, तो मुख्य लक्ष्यही यह होता है कि एक-एक पैसेमें, जो इस व्यापारमें लग रहा है, कुछ लाभ हो कुछ मुनाफा उठाया जाय। व्यवसायी लोग सदा थोड़े खर्चमें अधिक काम लेना चाहते है।

साथही अगर तुम अपनी वास्तविक योग्यतासे अधिक वेतन चाहते हो और अगर तुम्हारे इच्छानुसार ही वेतन दे कर तुमको नौकर रख लिया गया, तो इसका फल यह होगा कि थोड़ेही समयमें, जब तुम्हारे मालिकको तुम्हारी असलियतका पता लग जायगा, वह तुम्हें यातो निकाल देगा अथवा तुम्हारा वेतन घटा देगा। इसलिए सर्वोत्तम मार्ग यह कि तुम अपनी योग्यताका, अपने गुणोंका पूर्ण अनुसन्धान

करके उसका उचित मूल्य स्थिर करो। संसारकी हाटमें सत्यताका व्यवहार करो। तुम्हें हानि नहीं होगी। यदि तुम यह चाहते हो कि तुम्हारी उन्नति हो, तुम्हारे वेतनमें वृद्धि हो, तो इसकेलिए सीधा और सच्चा मार्ग यह है कि अपने गुणोंसे, अपनी सचाईसे, अपनी ईमानदारीसे, अपने मालिक को प्रसन्न रखो और उसकी भलाईमें निष्कपट भावसे तत्पर रहो। अपनेको इस योग्य बनादो कि तुम्हारे गुणोंकी महत्ता तुम्हारे स्वामीके चित्तमें बैठजाय और तुम्हारी सेवाको वह अपनी भलाई तथा उन्नतिके लिए अनिवार्य्य समझने लगे। फिर इच्छानुसार तरक्की होना कुछ कठिन नहीं है।

यह जानना कि तुम किस योग्य हो, या संसार इस समय तुम्हारा क्या मूल्य लगा सकता है, कुछ कठिन नहीं है। तुम नौकरीकी खोजमें जरा इधर-उधर घूमो। भिन्न लोगोंके पास जाओ और उनसे बात-चीत करो। देखो, वे तुम्हें अधिकसे अधिक क्या वेतन देना चाहते हैं। बस, वही तुम्हारा मूल्य है। क्योंकि संसारके बाजारमें मिहनत एक बिकनेवाली वस्तु है। इसका मूल्य, माँग, खपत तथा गुणों ( Supply, Demand and Quality ) के अनुसार घटता बढ़ता रहता है।

तुम अपनी योग्यता का यथा-सम्भव बिलकुल ठीक ज्ञान प्राप्त करो। स्वयं अपना अध्ययन करो। अपने गुण-अवगुण पर निष्पक्ष दृष्टि डालो और अपने साथ उसी प्रकार तर्क-वितर्क करो जिसप्रकार अपने पड़ोसीके बारेमें करते हो। अपने साथ इस विषयमें अणुमात्र भी दयाका प्रयोग न करो यदि तुम्हारा शत्रु तुमपर कोई आक्षेप करता है, तो बुरा मत मानो। उसको ध्यानसे सुन लो और देखो कि वास्तवमें

तुम आक्षेपके योग्य हो या नहीं। यदि हो, तो अपने ऐवको दूर करो। अपने दुश्मनोंके कटाक्षसे लाभ उठाना बुद्धिमानो का काम है। निन्दाके शब्द सुनकर कभी आवेशमें नहीं आना चाहिए, कभी क्रोध नहीं करना चाहिए बल्कि उसपर शान्त चित्त होकर विचार करना चाहिए और अपने दोषोंको दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिए। इसीलिए सन्तोने निंदको की प्रशंसा की है।

पाठक पल्टू साहबकी निम्नलिखित कुण्डलियोंको ध्यान से पढ़ें और उनसे लाभ उठावेंः—

निन्दक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय।
काम हमारा होय बिना कौड़ीको चाकर।
कमर बाँधिके फिरै करै तिहुँलोक उजागर॥
उसे हमारा सोच पलक भर नाँहि बिसारी।
लगा रहै दिन रात प्रेमसे देता गारी॥
सन्त कहैं हद करै जगतका भरम छुड़ावै।
निन्दक गुरु हमार नामसे वही मिलावै॥
सुनिके निन्दक मरिगया पल्टू दिया है रोय।
निन्दक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय॥

निन्दक रहै जो कुसलसे हमको जोखों नाहिं।
हमको जोखों नाँहि गाँठिकी साबुन लावै।
खरचै अपनो दाम हमारो मैल छुड़ावै॥
तन मन धन सब देहि सन्तकी निन्दाकारन।
लेहि सन्त तेहि तार बड़े वे अधम उधारन॥
सन्त भरोसा बड़ा सदा निन्दक का करते।
निन्दककी अति प्रीति भाव दूसर नहिं धरते॥
पल्टू वे परस्वारथी निन्दक नर्क न जाहिं।
निन्दक रहै जो कुसल से हमको जोखों नाहिं॥

निन्दक है परस्वारथी करै भक्तका काम ।

करै भक्तका काम जगतमें निन्दा करते ।

जो वे होते नाहिं भक्त कहवाँसे तरते ॥

आप नरक में जाँहि भक्तका करैं निवेरा ।

फिर भक्तनके हेतु करैं चौरासी फेरा ॥

करैं भक्तको सोच उन्हें कुछ और न भावे ।

देखो उनकी प्रीति लगन जब ऐसी लावै ॥

पलटू धोबी अस मिल्यौ धोवत है बिनु दाम ।

निन्दक है परस्वारथी करै भक्त का काम ॥

# दसवाँ अध्याय

## ईर्षा-द्वेष

1. Ease must be impracticable to the envious; they lye under a double misfortune, common calamities and common blessings fall heavily upon them

Jeremy Collier.

2. Envy, like a cold poison, benumbs and stupefies.

हम सर्वदा निम्न श्रेणी के जीवोंसे उच्चतर होनेका घमण्ड करते हैं और उन नीच कहे जाने वाले जीवोंको घृणाकी दृष्टि से देखते हैं; परन्तु हमें स्मरण रखना चाहिए कि उन्हींके समान अनेक अवांछित व्यसन हममें भी हैं। उदाहरणार्थ, ईर्षा और द्वेषको ही ले लीजिए। इनकी न्यूनाधिक मात्रा प्रत्येक मनुष्यमें पाई जाती है। द्वेषके दुष्परिणामोंका यदि संग्रह किया जाय, तो सहज ही एक वृहत् पुस्तक तैयार हो सकती है। ईर्षा तथा द्वेषमें थोड़ाही अन्तर है। ये दोनोंही हमारी पाशविक वृत्तियोंके अंश हैं और सदा हमारी अवनतिमें सहायक होते हैं।

मानव-संसार में सर्वत्र तुम्हें ऐसे बेवकूफ मिलेंगे, जो ईर्षा तथा द्वेषके मारे विह्वल हो रहे हैं। ये मूर्ख सदा अपनेको महाबलशाली तथा प्रशंसाके पात्र समझते हैं। स्वस्वीकृत प्रतिष्ठाके गर्वसे गर्वित तथा महत्ता और श्रेष्ठताके मदमें चूर रहते हैं। स्वाभिमानी तो इस कोटिके होते हैं कि अपने समान संसारमें किसीको समझतेही नहीं। विद्या-बुद्धि, रूप

लावण्य, शोभा-सौन्दर्य, धन-धान्य, आदर-मान प्रत्येक दृष्टिसे वे अद्वितीय होते हैं। उनका कोई सानी नहीं होता। वे इतने बड़े हो चुके हैं कि साधारण संसारकी धारणाशक्तिसे परे हो गए हैं। कभी-कभी वे साधारण मनुष्योंकी छोटी-छोटी सफलता-ओंपर टीका-टिप्पणी भी करते हैं, परन्तु स्वयं उसे प्राप्त करनेके लिए वे इस छोटे मार्गका कदापि अनुसरण करना नहीं चाहते।

तुच्छ जीव! वास्तवमें ये मूर्ख करुणाके पात्र हैं। कैसे घोर अन्धकारमें पड़े हैं! किस प्रकार स्वयं अपनेको धोखा दे रहे हैं! शोक है कि संसारमें ऐसे स्वाभिमानी, अपार गर्वमें फूले हुए गुब्बारे अनेक हैं। यदि युवावस्थामें इन्हें कुछ कष्टका अनुभव होता, तो सम्भव था कि ये अपनी साधारण अवस्थाको प्राप्त हो जाते। परन्तु साधारणतः ये जीवनपर्यन्त अपने बड़प्पन तथा गौरवकी एक तार वंशी बजाया करते हैं और इसको वे उसी प्रकार नहीं छोड़ना चाहते जिस प्रकार मृतक शरीरको घरवाले नहीं छोड़ना चाहते।

प्रत्येक मनुष्य, जिसने संसारमें कोई सफलता प्राप्त की है या जिसने संसारमें कोई महत्वपूर्ण कार्य किया है, इन स्वाभिमानी, तथा नितान्त अविश्वासी नपुंसकोंके प्रहारका पात्र बन जाता है। ये सदा अपनी बड़ाईका ही राग अलापते हैं, जिसे इनके अतिरिक्त और कोई समझ भी नहीं सकता। ये निरंतर अपने दुर्भाग्यकी शिकायत किया करते हैं और छोटे लोगोंके किये हुए कार्योंकी समालोचना करते हुए कहते हैं कि इसे इसने किसी अजीब तरीकेसे कर लिया, नहीं तो मेरी ही करनेकी इच्छा थी। अकर्मण्य जीव इस प्रकारकी बातें गढ़ा करते हैं। यह बात अवश्य स्वीकार की जा सकती है कि

संसारमें ऐसी अनेक बातें हैं जो कार्य्यसिद्धिमें बाधक होतीहै; परन्तु अनेक वास्तविक बुद्धिमान्‌जीव स्वाभिमान तथा अपनी योग्यताके विषयमें अत्युच्च भाव रखनेके कारण ही विफल हो जाते हैं।

अहम्मन्यताको दूर हटाओ, अविचार पूर्ण बुद्धिको कुचल डालो, जो तुम्हें अनेक भले कार्य्योंसे वञ्चित रखती है। अपने आपको भली भाँति समझो। निष्पक्ष भावसे अपने कार्य्योंकी समालोचना करो और निज अन्तःकरणपर विश्वास रखो। विश्वासकी बड़ी आवश्यकता है। बिना विश्वासके दृढ़ हुए सफलता प्राप्त करना अत्यन्त कठिन ही नहीं प्रत्युत असम्भव है।

परन्तु, आत्मश्लाघी बननेसे बचो। आत्म-प्रशंसक होना मूर्खता है। समस्त जीवन इस विचारमें ही न नष्ट कर दो किः— "मैं सब कुछ जानता हूँ।" ऐसा सोचना अपनेसे विश्वास घात करना है, अपने हाथ अपने पैरोंमें कुल्हाड़ी मारना है। बड़े-बड़े सुविज्ञ तथा धुरन्धर विद्वानोंका कथन है कि किसी वस्तुका अत्यल्प ज्ञानही बड़ेसे बड़े ज्ञाताको प्राप्त हो सकता है। किसी विषयके प्रत्येक अङ्गसे अभिज्ञ होना बड़ा कठिन है। अतः यह कहना कि मैं प्रत्येक वस्तुके विषयमें सब कुछ जानता हूँ, केवल मूर्खता नहीं तो और क्या है? यदि तुम सुव्यवस्थित तथा निष्पक्ष भावसे विचार करोगे, तो तुम्हे ज्ञात होगा कि जितना ही अधिक ज्ञान तुम प्राप्त कर रहे हो उतना ही अधिक तुम्हारी ज्ञानोपार्जनकी शक्ति तुच्छ तथा परिमित मालूम होती है।

ईर्षासे प्रेरित होकर जीव अपने उत्कर्षमें स्वयँ बाधक होता है। तुम स्पष्ट तथा कड़ी दृष्टिसे अपने आचरणोंका निरीक्षण करो। पक्षपात तथा दयाका लेश भी न हो। यदि तुम्हारे

हृदय-तलपर द्वेष तथा ईर्षाके भाव अङ्कुरित हो रहे हो तो शीघ्रतया उनका विनाश करो। उन्हें जड़से उखाड़ फेंको। इसमें विलम्ब न करो क्योकि तुम्हारी उन्नतिके मार्गमें ये काँटे है। तुम्हारे समुज्ज्वल भविष्यको अन्धकारमय बनाने वाले हैं। तुम यह निश्चय जानो कि तुम्हारे चतुर्दिक तुमसे बहुत अधिक बढ़े-चढ़े लोग विद्यमान हैं। तुम यह जाननेका प्रयत्न करो कि ये लोग तुमसे बढ़े-चढ़े क्यो है, वे किस मार्गका किस युक्तिका अवलम्बन करते है। श्रेष्ठ लोगोके जीवनका अनुकरण करो और उनके समान होनेका सपरिश्रम प्रयत्न करो। तुम देखोगे कि थोड़े ही कालमें तुम्हें आश्चर्य्य जनक सफलता प्राप्त हो रही है।

बिशाप फेलोजने इन शब्दोमे एक महान सत्यका कथन किया है-"वे लोग, जो संसारकी प्रत्येक वस्तुमें अवगुण ही देखा करते हैं (pessimists), उन्नतिकी प्रगतिमें सदा पीछे रहते हैं। जिन लोगोने आज तक सफलता प्राप्त की है वे कभी ईर्षा तथा द्वेषके आवेशमें आकर बड़बड़ाने वाले नहीं थे।"

अपने जीवनसे ईर्षा तथा घृणाका बहिष्कार कर दो। मानव-समाजके पतित समुदायके लिए इनका त्याग कर दो। यदि किसीने अच्छी सफलता प्राप्त की है, तो उसका अपवाद तथा उसे कम करनेका प्रयत्न कदापि न करो उससे तो तुम्हें अपने प्रयत्नोमें प्रोत्साहन मिलना चाहिए। तुम्हे अपने परिश्रमका उचित पुरस्कार प्राप्त हो रहा है और यदि तुम किसी अन्यकी समुन्नत अवस्था देखकर उससे ईर्षा और द्वेष करते हो, तो इससे तुम्हारी बुद्धिकी वह निर्बलता प्रकट होती है, जो सदा किसी महत्वपूर्ण कार्यकी सिद्धिमें बाधा उपस्थित करेगी।

ईर्षान्वित मूर्ख कितनी दयाका पात्र है ! उसकी सारी शक्तियाँ दूसरेके किये हुए कार्योंको नष्ट करनेके प्रयत्नमें व्यर्थ बरबाद होती हैं। मानसिक ईर्षाके कारण उसकी सारी शक्तियोंका ह्रास हो जाता है और अन्तमें वह शून्य ही रह जाता है। उसका जीवन निराशामय हो जाता है। मानव-सहायता भी उस तक नहीं पहुँच सकती और वह जो सदा ईर्षामय विचारोंको प्रकट किया करता है वह मानो अपने पार्श्ववर्तियों से चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है कि-"मेरे कार्य तथा शब्द यह प्रकट करते हैं कि मैं संकुचित बुद्धि तथा दुष्टात्मा हूँ। जो कुछ मैं करता हूँ, उसपर ध्यान न दो। मैं बेवकूफ हूँ और मुझे परवाह नहीं कि लोग मुझे ऐसा जानते हैं।"

# ग्यारहवाँ अध्याय

# वास्तविक शिक्षा

1 The best part of every man's education is tha which he gives to himself.

Sir Walter Scott.

2 I would far rather send a boy to Van Diemen's Land, where he must work for his bread, than send him to Oxford to live in luxury without any desire in his mind to avail himself of his advantages.

Br Arnold.

3. All experience serves to illustrate and enforce the lesson, that a man perfects himself by work more than by reading-that it is life rather than literature, action rather than study, and character rather than biography, which tend perpetually to renovate mankind.

Samuel Smiles.

प्रत्येक ऐश्वर्य्याकांक्षी युवकके हृदयमें यह बलवती इच्छा होती है कि वह उच्च कोटिकी शिक्षा प्राप्त करे। पाठकको यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि उच्च कोटिकी शिक्षासे अभिप्राय आधुनिक विश्वविद्यालयोंकी ऊँची-ऊँची डिगरियोंसे है, न कि आध्यात्मिक, मानसिक, नैतिक तथा धार्मिक, शिक्षासे। उसके अन्तःकरणमें यह भावना दृढ़ हो गई है कि आधुनिक

समयकी उच्च शिक्षासे वह जीवनकी कठिनाइयोंको दूर कर सफलता प्राप्त करनेमें समर्थ होगा।

परन्तु शिक्षाका अर्थ समझनेमें आजकल लोग बड़ी भयंकर भूलकर रहे हैं। सांचेकी नाईं शिक्षाको एक विशेष यंत्रका रूप दे दिया गया है, जिसमें मनुष्योंकी बुद्धि तथा उनके विचार ढाले और बनाए जाते हैं। तोतोकी भाँति उन्हें पाठ रटाया जाता है और एक अचल लिपिका अभ्यास कराया जाता है। उनके लिए विचार तथा विचारोंके परिणाम पहलेसे ही तयार रहने हैं, जिनके अनुकूल उनको अपने मस्तिष्क तथा विवेचन-शक्तिको चलाना पड़ता है। विचार-स्वातंत्र्यका सर्वथा अपहरण कर लिया जाता है। बुद्धिको स्वयं अपने विकासका क्षेत्र ढूंढने तथा निर्माण करनेका अवकाश नहीं दिया जाता। तर्कशक्तिके प्रयोग के लिये अवसर मिलना दुर्लभ कर दिया जाता है। कुछ गिने हुए विद्वान् पुरुषोंकी तर्ककी कसौटीपर कसे हुए विचारो का अध्ययन करके उनको केवल रट लेना पड़ता है। जितना ही अधिक रटकर तुम स्मरण रख सकोगे उतना ही शीघ्र अपनी उच्च शिक्षाकी चोटीपर पहुँच सकोगे। दूसरे शब्दोंमें यह समझना चाहिए कि तुम्हारे मस्तिष्कके लिए एक छोटी सी गुफा पहलेसे निर्माण कर दी जाती है और किसी भी दशामें तुम इससे वाहर नहीं जा सकते। अपने स्वतन्त्र विचार, अपनी निजकी राय रखनेका भला तुम्हें क्या अधिकार है? और इसकी आवश्यकता ही क्या है? जिन बातोंको तुम्हें सोचना और निकालना पड़ता, वह पहलेसे ही करी कराई तयार हैं। इनकी सत्यता तथा उपयुक्तताके विषयमें सन्देह करनेका भी तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। क्यो कि जब पहलेसे ही प्रत्येक विषयका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया

जा चुका है, तो फिर यह सर्वथा असम्भव है कि उनके अति-रिक्त कोई नयी बात उत्पन्न हो सके अथवा किसी नवीन विषयका कोई अन्वेषण कर सके। आजकलके प्रधान विद्या-प्रचारक विशेषकर इसी विचारके हैं। बहुतसे विद्यार्थी पढ़नेमें इतना परिश्रम करते हैं और अपना इतना समय लगा देते हैं कि वास्तविक शिक्षाके प्राप्त करनेका, जिसमें अत्यधिक विचार-शक्तिसे कार्य्य लेना पड़ता है, उन्हें अव-काश ही नहीं मिलता। वे सारा समय केवल पुस्तकोंके रटने में ही लगा देते हैं।

ऐसे विद्यार्थी जब किसी विषयकी सत्यताका तुमको बोध कराना चाहते हैं, तो वे सर्वदा अपनी पुष्टिके लिए किसी पूर्व लेखककी कही हुई बातोंको प्रमाण स्वरूप उद्धृत करते हैं। परन्तु यह कहा जा सकता है कि किसी विशेष व्यक्तिकी बातोंको हमारी तथा आपकी बातोंसे अधिक प्रामाणिक माननेका क्या हक है? इन प्रामाणिक कहे जानेवाले व्यक्तियों की सम्मतिको अधिक मान्य तथा पवित्र समझना कहाँ तक युक्ति संगत है?

बोल्टन हाल ( Bolton Hall ) का कथन है कि:-"परिश्रम की सभी आदतें बहुत अच्छी हैं; परन्तु मनन करनेके परिश्रम की आदत अत्यन्त लाभदायक है।" शिक्षाका सर्वोत्तम अर्थ तथा सर्वोच्च उद्देश्य यह है कि मनुष्यमें स्वतन्त्र तर्क-शक्ति तथा मौलिक विवेचन-शक्तिकी उत्पत्ति हो। जब तक तुम स्वयं अपनी स्वतन्त्र बुद्धि तथा अपने अनुपेक्षित विचार द्वारा किसी विषयका अनुसन्धान नहीं कर सकते, जब तक तुम स्वकीय तार्किक विवेक द्वारा किसी विषयके तथ्यातथ्यकी गवेषणा करनेमें समर्थ नहीं हो सकते, तब तक तुम अपनेको

वास्तविक रूपमें शिक्षित कदापि नहीं कह सकते। तुम्हारी स्वतन्त्र बुद्धिसे बढ़कर अधिक प्रामाणिक और कोई नहीं हो सकता।

जिस शिक्षासे तुम्हें केवल रटनेकी बान पड़ती है, जिस शिक्षाके कारण तुम अपना व्यक्तित्व खो बैठते हो और जिस शिक्षाने तुम्हें अपनी निजी सम्मति रखनेके अधिकारसे वञ्चित कर रक्खा है, उसे वास्तविक शिक्षा हम कदापि नहीं कह सकते। सच्ची शिक्षाका अर्थ है मनुष्यको जीवन-संग्रामके लिए तयार करना और मन तथा शरीरको ऐसी शिक्षा देना कि जिससे मनुष्य अपनी बड़ीसे बड़ी अकाक्षाको पूर्ण करनेमें समर्थ हो सके।

परन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणालीसे ऐसे महत्वपूर्ण फलका प्राप्त करना निराशा मात्र है। तुम्हें जीवन-युद्धमें प्रवृत्त होनेके योग्य यह कदापि नहीं बना सकती। जीवनकी सत्यताका बोध न कराकर यह तुम्हारे मस्तिष्कको ऐसी असाध्य युक्तियों तथा ऐसे स्वप्नमय आदर्शोंसे भर देती है कि जिनका तुम्हारे जीवन-कालमें कार्य रूपमें परिणत होना नितान्त असम्भव प्रतीत होता है।

ऐसे हृदय हीन, सहानुभूति रहित, निर्दई संसारमें साधन-रहित होकर प्रवेश करनेके लिए हम लोग क्यों बाध्य किये जाते है? कॉलिजके साधारण ग्रैजुएटोंकी कैसी करुणा-जनक स्थिति है! उनके जीवनके कितने अमूल्य वर्ष इसी संसारकी आगन्तुक कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए तयार होनेमें व्यतीत हो जाते हैं। लेकिन उनके नैराश्य तथा हतोत्साहका पारावार नहीं होता, जब थोड़े अनुभवके पश्चात् उनको यह ज्ञात होता है कि उनके जीवनका अधिकांश समय व्यर्थ ही

व्यतीत हो गया । उनके मानसिक कष्टका जरा इस स्थितिमें अन्दाजा लगाइये, जब कि जीवनके एक बड़े अमूल्य समय, अमित धन तथा शारीरिक स्वास्थ्यको नष्ट करनेके पश्चात् उनको ऐसी भयंकर निराशाका सामना करना पड़ता है। उनको फिर नये सिरेसे जीवनका आरम्भ करना पड़ता है। अपने जीवनकी अब तककी बनी बनाई समस्त युक्तियों और आशाओंको उन्हें भँग करना पड़ता है। उन्हें इस तथ्यका बड़ी बुरी तरह ज्ञान होता है कि उन्होंने अपनी विद्या-बुद्धि को अनावश्यक ही विशेष महत्व दे रखा है । वास्तवमें वह कुछ भी नहीं है और न उससे जीवन-सग्राममें विशेप सहायता मिल सकती है।

व्यवसायी समुदाय इस बातका विशेष ध्यान रखता है कि किसी ग्रेजुएटको उस स्थानपर न रखा जाय, जहाँ योग्यता तथा बुद्धिकी आवश्यकता है। वे ऐसे आदमियोंकी खोज करते हैं, जो संसारके इस संघर्षके समयमें जीवनकी कठिनाइयोंको समझते और उनका सफलता-पूर्वक सामना करते है । उन्हें स्वप्न देखने वाले तथा अनुमान करने वालोंकी आवश्यकता नहीं । उनको चाहिए ऐसे मनुष्य, जो बातको तुरन्त समझ लें और तदनुसार शीघ्र कार्य करनेमें समर्थ हो।

कोयलेकी खानमें कार्य करने वालोंने जब हड़ताल कर दी थी, उस समय इस बातकी और भी अच्छी तरह पुष्टि हो गई थी कि कॉलेजके ग्रैजुएट वास्तवमें संसारकी बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंका सामना करनेमें सर्वथा असमर्थ और असफल होते हैं । धनी कार्यकर्ताओंके वकील वेन मेकवी ( Wayne McVeagh ) ने इस ओर लोगोंका ध्यान आकर्षित किया। मेकवीने यह दिखलाया कि एक ग्रैजुएट तथा प्रजातंत्र

राज्यके सभापति थियोडोर रूसवेल्ट (Theodore Roosevelt) ने इस हड़तालका अन्त करनेकी युक्ति निकालनी चाही, पर वे असफल हुए। फिर संसारका सबसे बड़ा व्यवसायी पियरपॉइन्ट मॉरगन (Pierpoint Morgan) ने उस ग्रेजुएेट की सहायता से इस स्थितिको सुलझाना चाहा, पर अकृत-कार्य हुए तदुपरान्त जान मिचेल (John Mitchel) नामक एक साधारण व्यक्तिने, जो किसी कॉलेजका ग्रेजुएेट तो नहीं था पर, जिसे कोयलेकी खानका ज्ञान था, एक युक्ति बतलाई और उसीका अवलम्बन करनेसे सारे झगड़ेका अन्त हो गया और कार्यारम्भ हो गया।

जान मिचेलने कभी कॉलेजके कारखानेमें शिक्षा नहीं पाई थी और यही कारण था कि उसके व्यक्तित्व तथा विवेचन शक्तिका सत्यानाश नहीं हुआ था, उपर्युक्त कार्यमें उसने यही युक्ति बतलायी थी कि एक पचायती कमीशन नियुक्त करो, जिसमें दोनों पक्षके चुने हुए आदमी हों। उनके निर्णय पर दोनो पक्षको सन्तोष होगा और विवाद तय हो जायगा। और ऐसा ही हुआ भी।

समाज-शिक्षा-प्रचारकोको इस बातका किस प्रकार बोध कराया जाय कि वर्तमान शिक्षाप्रणालीसे उनके विद्या-र्थियों पर अहितकर प्रभाव पड़ता है और उनकी मौलिकता का सर्वथा नाश हो जाता है। शिक्षाको केवल रटन्त विद्या बनाना ठीक नहीं है। शिक्षा द्वारा विवेचन शक्तिका विकास होना चाहिए। अच्छी स्मरण शक्ति निस्सन्देह बहुमूल्य वस्तु है और किसी विषयपर तर्क-पूर्ण विचार करनेके लिए इसका अनिवार्य्य है। परन्तु केवल रटने मात्रकी अधिक कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। रटन्त ज्ञान-

ओछा होता है और इससे कोई महत्त्व-पूर्ण परिणाम नहीं निकलता। कभी-कभी ऐसे मनुष्य देखनेमें आते हैं, जिनकी स्मरणशक्ति अत्यन्त प्रबल होती है; परन्तु अन्य किसी दिशामें उनकी योग्यता कुछ भी नहीं होती।

केवल स्मरण शक्तिसे सम्बन्ध रखने वाली शिक्षा तथा स्मरण और विवेक शक्ति दोनोसे सम्बन्ध रखने वाली शिक्षामें पृथक्करण करनेका कोई साधन अवश्य होना चाहिए। केवल पुस्तकोंको पढ़ लेना तथा कुछ तथ्योंका ग्रहण कर लेना ही वास्तविक शिक्षा नहीं कही जा सकती। शिक्षाका उद्देश्य इससे कहीं बढ़कर है।

बच्चोंके मुखसे 'क्यों' शब्द अधिक सुननेमें आता है। जब कोई नई बात उनसे कही जाती है अथवा जब कभी नवीन घटना उनके सामने उपस्थित होती है, तो उसे जाननेको उन्हें बड़ी उत्कण्ठा होती है और जब तक उनकी समझमें ठीक तौरसे नहीं आ जाता, वे 'क्यों' 'क्या' और 'कैसा' का पीछा नहीं छोड़ते। ये शब्द वास्तवमें बड़ेही महत्व पूर्ण और सारगर्भित हैं। ये ज्ञानवृद्धिके सूचक हैं और गुरुजनों का धर्म है कि बच्चोंके इन प्रश्नोंकी अवहेलना न कर उनको उचित रीतिसे सन्तुष्ट करनेकी ओर ध्यान दें। बच्चोंको टाल मटोल बता देना तथा उनको बच्चा समझकर भुलावा दे देना भारी भ्रम है। इसका प्रभाव अत्यन्त अहितकर होता है। बच्चेसे यह कदापि नहीं कहना चाहिए कि अमुक बात जाननेकी तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा व्यवहार करनेसे उनकी ज्ञान-लिप्साकी वृद्धिपर आघात पहुँचता है और उनमेंसे स्वतन्त्रता तथा आत्म-सम्मानका ह्रास होना आरम्भ हो जाता है।

प्रत्येक स्वस्थ बालकमें ज्ञानेच्छाका उत्पन्न होना सर्वथा स्वाभाविक है। उसकी उत्कण्ठाका हनन न कर उसको प्रत्येक विषयका वास्तविक परिज्ञान कराना चाहिए। उसके साथ सदा स्पष्ट तथा सच्चा आचरण करना चाहिए। किसी विषयकी असलियतको छोड़कर उसका झूठा ज्ञान कराना भारी भूल है। तुम स्वयं विचार सकते हो कि जब बच्चेको इस बातका पता लग जायगा कि मेरे माता-पिता मुझसे झूठ बोलते हैं, तो इसका उसके मनपर कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा। अतः बालकोंके साथ सर्वदा सत्य व्यवहार करना और उनके पूछे विषयका उन्हें समुचित परिज्ञान कराना ही बड़ोंका परम कर्तव्य है। शिक्षाको इसका वास्तविक रूप देनेका सदा ध्यान रखना चाहिए। शुककी नाईं रट लेनेमें तथा विचार पूर्वक पढ़नेमें बड़ा अन्तर है और इस अन्तरको शिक्षा देते तथा प्राप्त करते समय निरन्तर ध्यानमें रखना चाहिए। यह स्मरण रहे कि आधुनिक शिक्षा तथा शिक्षा-प्रणाली मानव-मस्तिष्ककी बहुमूल्य शक्तियोंको सत्यानाश करनेवाली तथा मानव-जीवनको बरबाद करने वाली है।

मुझे एक आदमीका स्मरण आ रहा है, जिसे अध्यापकोंने सामयिक नियम द्वारा शिक्षा देनेका बड़ा प्रयत्न किया। पाठ्य विषयोंमेंसे बहुतोंकी ओर उसकी रुचि न थी। इस कारण उसने दूसरे विषय ले लिए; परन्तु अधिकतर उसमें उसकी धूर्तता ही थी। बेशक, उसे पुस्तकें पढ़नी पड़ती थीं और स्कूल भी जाना ही पड़ता था। पर इसमें उसकी तबीयत इतनी नहीं लगती थी। वह कुछ स्वतन्त्र विचार अवश्य करता था और यह अभ्यास उसका बढ़ता गया। अंग्रेजी व्याकरणसे उसको बड़ी घृणा थी और लेख लिखनेमें

वह बड़ा कमजोर था। परीक्षामें उसको इस विषयमें कभी २७ प्रतिशत और कभी अधिकसे अधिक ४५ प्रतिशत अंक मिलते थे। उसके अध्यापक कहा करते थे कि यह कभी सफल न होगा।

१७ वर्षकी अवस्थामें उसने बड़ी पाठशालामें जानेका निश्चय किया और एक समाचार पत्रके कार्यालयमें कार्य्य करने लगा। उसी वर्ष वह पुलिस-रिपोर्टर हो गया। दूसरे वर्ष उसी पत्रका सहकारी सम्पादक बन गया। इस समय उसको रात्रिमें कार्य्य-करना पड़ता था। थोड़े समयके बाद उसको दिनमें रिपोर्टका कार्य्य दिया गया। फिर वह समाचार पत्रके व्यवस्थापकका प्राइवेट सिक्रेटरी बन गया और बादमें सम्पादकके पदपर पहुँच गया। २२ वर्षकी अवस्थामें सम्पादकीय कार्य त्याग कर उसने देश पर्य्यटन करना आरम्भ किया। यह संसारके दूर-दूरके भागोंमें घूमा। उसने युद्धमें भी भाग लिया और व्यवस्थापक सभाओंमें अखबार नवीसका भी कार्य किया। अध्ययन कालमें बादको उसको ध्यान आया कि अपनी मातृ-भाषाका ठीक-ठीक प्रयोग जानना अत्यन्तावश्यक है। तब उसने इस ओर ध्यान दिया और पूरी योग्यता प्राप्त कर ली। उसकी लिखी हुई कई पुस्तकें हैं, जिनको लोग आदरसे पढ़ते है। प्राचीन लेखकों का अनुकरण न कर उसने अपनी स्वतन्त्र सम्मति लिखी है। उसने अपने ही मौलिक सिद्धान्तों द्वारा विज्ञान आदिका भी अध्ययन किया है। उसके लिए संसार ही विश्व-विद्यालय था और समाचार-पत्र कार्यालय केन्द्र स्थान। उसके मित्र उसे स्वशिक्षित कहते हैं और यही सत्य भी है। प्रत्येक मनुष्यको स्वशिक्षित ही होना चाहिए।

# बारहवाँ अध्याय

## मानसिक स्वतन्त्रता

1. No imprisonment can crush a truth, it may hinder it for a moment, it may delay it for an hour, but it gets an electric elasticity inside the dungeon walls, and it grows and moves the whole world when it comes out.

Charles Bradlaugh.

2. It may be of comparatively little consequence how a man *is governed from without whilst* every *thing* depends upon how he governs himself from within The greatest slave is not he who is ruled by a despot, great though that evil be, but he who is the thrall of his own moral ignorance, selfishness, and vice

Samuel Smiles.

पाठक! कौन ऐसा भारतीय होगा जो स्वनाम धन्य महात्मा गान्धीके नामसे परिचित न होगा। केवल भारतीय ही नहीं, प्रत्युत मनुष्य मात्रमे इनका सुयश फैला हुआ है। सन् १९२२ में बृटिश गवर्नमेन्टने इनको जेलमें ठूसनेका निश्चय कर इनके विरुद्ध अभियोग उपस्थित किया। उसकी कथा भी लोगोसे अविदित नहीं है। जब बम्बईके न्यायालयमें महात्माजीने न्यायाधीशके समक्ष अपना लिखित वक्तव्य पढ़कर सुनाया उस समय सैकड़ोकी संख्यामें उपस्थित दर्शकोंमें कौन ऐसा था जिसकी आँखोंसे अश्रुधारा न प्रवाहित हुई हो। वह

दृश्य अपूर्व था, जो देखते ही बना था। न्यायाधीश भी उस शान्त मूर्तिके न्याय-पूर्ण गम्भीर वक्तव्यको श्रवणकर शोक प्रदर्शित किये विना न रह सका और सचमुच यदि वह कानून-से बद्ध न होता, तो उसके लिए महात्माजीको दण्ड देना भी कठिन ही था। उसने अपने कलेजेको कड़ा करके ६ वर्षका कारावासका दण्ड सुनाया। ज्ञात तो यही होता था कि उस समय दण्ड देने वालेको जिस पीड़ा और कष्टका अनुभव हो रहा था वह कष्ट दण्डित व्यक्तिको भी नहीं हुआ, वल्कि उस व्यक्तिको, तो लेश मात्र भी क्लेश न हुआ। पाठक-हमारा अर्थ इसीसे सिद्ध होता है। महात्माजीको ६ वर्षके कारावासका दण्ड सुनाया गया और कितने आनन्द, कितने हर्ष, किस अपूर्व प्रसन्नताके साथ उस महान् आत्माने उसको शिरोधार्य्य किया। विशाल नेत्रोंकी वह अप्रतिम आभा, मुख मण्डलकी वह अक्षुण्ण शान्ति, हृदय विशालताकी वह अनुपम प्रतिभा, सुमधुर ओष्ठोंकी वह ललित मुसकान वैसीही बनी रही, मानो कुछ हुआ ही नहीं। स्वतन्त्रता अपहृत होगई। जेलमें भर दिये गये। स्वजनो, सम्बन्धियों, देश-बन्धुओसे अलग कर दिये गये। प्रत्येक प्रकारसे सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया। समाचार पत्रके पढ़ने तकसे वञ्चित होना पड़ा। एक कोठरीमें कैद! चतुर्दिक पहरेदार! परन्तु शोकका लेश नहीं। मलीनताकी छाया तक नहीं। वही प्रसन्नता, वही आनन्द, वही मुसकान। जैसे ही आश्रममें वैसे ही जेलमे।

क्या यह आश्चर्य्य जनक नहीं है? कदाचित पाठक यही कहेंगे कि महात्माजीके लिए कुछ कठिन नहीं है। परन्तु इसका कारण क्या है? वह शक्ति कौनसी है, जो भयानक आपत्तिमें भी चित्तको अविचलित रखती है, वन्धनमें भी जो

स्वतन्त्रताका ही अनुभव कराती है, दुःखको भी जो सुखका स्वरूप देती है ? वह है आत्म-स्वतन्त्रता। इसे स्वतन्त्र-विचार-दृढ़ता, मौलिक-सिद्धान्त-निष्ठा, सत्य-परायणता आदि भी कह सकते हैं। वन्दीगृहकी एक कोठरीमें तो क्या, यदि उनके हाथ-पाँवमें हथकड़ी-वेड़ियाँ डाल दी जायँ और उन बन्धनोंसे उनके अंगपर आघात हो, कटने लगें, उनके कारण कठिनातिकठिन क्लेश हो; परन्तु वह हर्षोत्फु-ल्लता निरंतर उसी प्रकार वनी रहेगी। कारण इसका यह है कि उन्हें इस वातका पूर्ण ज्ञान है कि यह सब वन्धन मेरे शरीरके लिए ही है, मेरे मनपर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ सकता मैं सोचनेमें स्वतन्त्र हूँ और जो कुछ मेरी अन्तरात्मा का आदेश है उसके अनुसार मैं वोल सकता हूँ और कार्य कर सकता हूँ। उसमें कोई वाधक नहीं हो सकता। चाहे मेरे हाथ-पाँव और अंग-अंग इस प्रकार जकड़ दिये जायँ कि मैं एक पग भी न चल सकूँ, एक रोम भी न हिला सकूँ, परन्तु मेरी आत्माको अपना कार्य करनेकी पूर्ण स्वतन्त्रता है। उनको दृढ़ निश्चय है कि यदि मेरा दण्डकर्ता अभी आकर मुझसे वात करे, तो इस दुरवस्थामें भी मैं उससे वही कहूँगा जो सत्य है, जिसे मेरा हृदय सत्य मानता है, जिसको मेरा ब्रह्म स्वीकार करता है। वस यही विचार है, जो उनको प्रत्येक अवस्थामें प्रसन्न रखता है। यह एक भारी वात है। मानसिक स्वतन्त्रतासे वढ़कर कोई स्वतन्त्रता नहीं और मान-सिक परतन्त्रतासे वढ़कर कोई परतन्त्रता नहीं।

हम कारागारमें वन्द नहीं हैं। हमारे हाथ-पाँवमें जँजीरें नहीं पड़ी हैं। हम जहाँ चाहे, जा सकते हैं, जो चाहे कर सकते हैं। हमारे अङ्गोंपर हमारा पूर्ण अधिकार है। जहाँ चाहे ले

जा सकते हैं, जैसे चाहें घुमा-फिरा सकते हैं। तात्पर्य्य यह है कि हमे पूर्णतया शारीरिक स्वतन्त्रता है, किसी प्रकारका वन्धन नहीं है ? परन्तु, क्या वास्तवमें हम स्वतन्त्र हैं ! कहना यह पड़ता है कि वाह्य रूपसे प्रत्येक प्रकारके वन्धनोसे मुक्त होते हुए भी हम आन्तरिक परतन्त्रताके अविच्छिन्न पाशमें बँधे हुए है। पाठक जरा विचारें तो तुरन्त पता चल जायगा। कैसी कठोर बेड़ियोमें हम जकड़े हुए हैं।

सर्व प्रथम सामाजिक व्यवस्थाको ही ले लीजिए। जिस समाजमें हम उत्पन्न हुए हैं उसके नियम, आचार, व्यवहार आदिका कितना जवरदस्त वन्धन है। चाहे हमारे विचार प्रचलित अवस्थाके अनुकूल हो या प्रतिकूल, उसका पालन करना आवश्यक है। आवश्यक इसलिये है कि हम समाज में सम्मान-पूर्वक रहना चाहते हैं। समाजकी दृष्टिमे पतित होना हमें असह्य है। समाजसे वहिष्कृत होना हमारे लिए जीवनमे मृत्युका अनुभव करना है। हमारे विचार कुप्रथाओं के सर्वथा विरुद्ध हैं। हम कुरीतियोको भली भाँति समझते हैं। हमारी यह धारणा है कि इनमें महान परिवर्तनकी आवश्यकता है समाजके कल्याणार्थ इनका संशोधन करना ही श्रेयस्कर है अन्यथा महान अनिष्टकी आशंका है। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी हम इन विचारोंको कार्यका रूप नहीं दे सकते। कार्यका रूप देना तो दूर रहा, इनको प्रकट करना ही भारी पाप समझा जाता है। हमें भय है कि हमारे इन विचारोके जानते ही समाज हमें हीन दृष्टिसे देखेगा और समाजके सामने हम घोर अपराधी समझे जायँगे। हमारी शानमें, हमारे सम्मानमें बट्टा लगेगा। सम्मानकी कैसी उच्च भावना है! क्या यह भावना कल्याणकारी है? क्या

इसका कठोर बन्धन हमारे हृदयपर नहीं पड़ा हुआ है ? क्या हम अब भी अपनेको स्वतन्त्र कह सकते हैं ?

यही नहीं ऐसी अनेक अड़चनें, अनेक बाधाएँ नित्य प्रति हमारे सम्मुख उपस्थित होती हैं और हम उन्हींमें घुला और पिघला करते हैं। परन्तु चूँतक करनेका साहस नहीं होता। फिर भी हम सदा अपनेको इस धोखेमें डाले हुए हैं कि हम स्वतन्त्र हैं। कैसी स्वतन्त्रता, हमारे जैसा परन्तत्र और कौन हो सकता है ? हमने जेलसे बाहर रहना ही स्वतन्त्रता समझ रखा है। नहीं, नहीं वास्तविक स्वतन्त्रता इससे सर्वथा भिन्न है। स्वतन्त्रताका अर्थ है स्वतन्त्र विचार, स्वतन्त्र कार्य्य, स्वतन्त्र वार्तालाप। यदि तुम अपने अन्तःकरणके आदेशानुसार विचार करते हो, उन विचारोंको स्पष्टतया सबके सम्मुख प्रकट कर सकते हो और उनके अनुसार कार्य करनेमें निर्भीकताका अवलम्बन करते हो, तभी तुम वस्तुतः स्वतन्त्र कहे जा सकते हो अन्यथा नहीं। यही स्वतन्त्रता है जिसकी जिज्ञासा, जिसकी इच्छा प्रत्येक मनुष्यके हृदयमें होनी चाहिए।

छोड़ो अन्धकारको। प्रकाशमें आओ। मानसिक दासत्वकी बेड़ियाँ काटो और स्वतंत्रताके सुन्दर प्रभातका आनन्द लूटो। असंस्कृत तथा असम्बद्ध विचारोंको मस्तिष्कसे निकालो और निर्मल विवेकके उजालेमे प्रवेश करो।

आजकलके स्कूल और कॉलेजोंकी दशा भी देखने ही योग्य है। इनको पुतलीघर कहा जाय, तो कोई अनुचित नहीं है। पुतलीघरोंमें जब कोई माल बनना आरम्भ होता है और बाजारमें बिकनेके लिए बिलकुल तयार हो जाता है, तो उसका रंग-रूप, लम्बाई-चौडाई इत्यादि सब एक समान हो जाता है

और उसपर ठप्पा लग जाता है कि यह अमुक नम्बरका माल है। ठीक इसी प्रकार हमारे स्कूलो और कॉलेजोंमें विद्यार्थी एक विशेष ढङ्गपर तयार किये जाते हैं। उनको खास नियमपर चलना पड़ता है और खास पाठ्यक्रमका अनुसरण करना पड़ता है। उनकी बुद्धिको एक पूर्वनिर्मित साँचेमें तोड़-मरोड़ कर ढाला जाता है। उनके स्वतन्त्र विचार इस कृत्रिम नियमके विरुद्ध आन्दोलन करते हैं। परन्तु उनके प्रकाशके लिए क्षेत्र नहीं दिया जाता। दुस्साहसपर उनको दंड भी यथेष्ट मिलता है। चलती हुई मशीनमें अपनेको छोड़ देने के लिए वे बाध्य किये जाते है। फल यह होता है कि उनके हृदयसे शनैः-शनैः विचार-स्वातन्त्र्य, स्वाभाविकता तथा मौलिकताका लोप होने लगता है। उनकी बुद्धि आश्रित और विचार परावलम्बी हो जाते हैं। विद्याकी अवधि समाप्त करनेके उपरान्त उनपर बी० ए०, एम० ए० आदिकी मोहरें लगा दी जाती हैं और इस प्रकार वे संसारके हाटमे अपना मूल्य लगानेके लिए प्रवेश करते हैं। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि स्कूल और कॉलेजोसे निकले हुए माल पुतली घरोंके मालसे कहीं अधिक निकम्मे और निकृष्ट होते हैं। यह इतना प्रत्यक्ष है कि इसके विषयमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं, आजकल ससार इनको किस दृष्टिसे देखता है और इन का क्या मूल्य लगानेके लिए तयार है?

सचमुच अर्वाचीन शिक्षा-प्रणालीने मानव-स्वतन्त्रताके वास्तविक रूपको सर्वथा विकृत कर दिया है और इसके मार्ग में यह कंटक रूप हो गई है। इसने जीवनको कितना कृत्रिम और अस्वाभाविक बना दिया है? वस्तुतः हमें अपनेको स्वतन्त्र कहनेका कोई अधिकार नहीं है। यदि हम ऐसा

कहते अथवा समझते हैं, तो भारी भ्रममें पडे हुए हैं।

इस शिक्षाके साथ-साथ नवीन सभ्यताने भी काफी उन्नति करली है। ग्रीष्मकाल है, प्रचण्ड गर्मी पड रही है। चोटीसे एड़ी तक पसीना चल रहा है। हवा नाम मात्रको नहीं है। कपड़े दूरसे ही काल हो रहे हैं। छूने तककी इच्छा नहीं होती। हमें बाहर जाना है। आवश्यक कार्य आ पड़ा है ओहो! कैसी दुर्दशा है। बिना सूट-बूट डांटे घरसे निकल नहीं सकते! क्योंकि हम सभ्य हैं, हमारी शानमें बट्टा लगेगा कहाँ गई स्वतन्त्रता? क्यों नहीं नंग-धड़ंग बाहर चले जाते? क्या आवश्यकता है इतना कष्ट उठानेकी? यह तो अपने वश की बात है। हम अपना कपड़ा पहनें या न पहनें। हम अपने अंगको जैसा चाहें रखें। परन्तु नहीं, ऐसा कैसे कर सकते हैं। सभ्यता दरवाजेपर मुँह फाड़े बैठी है। मारे भयके पाँव बाहर नहीं पड़ सकते। कैसी शोचनीय अवस्था है। कैसी अमोघ परतन्त्रता है। कैसा अनैसर्गिक जीवन है। क्या इस समाज और सभ्यताके हामी अपनेको स्वतन्त्र कह सकते हैं?

इतनाही नहीं, यह अनेकमेंसे एक बात है। ऐसी सैकड़ो अड़चनें, बाधाएँ तुम्हारे मार्गमें पड़ी हैं जिन्होने तुमको जेलखानेके कैदीसे कहीं बुरीतरह जकड़ रखा है। परन्तु इनको न समझकर तुम अपनेको स्वतन्त्र समझ रहे हो।

इस देशके अधिकांश निवासी इस समय मानसिक अन्धकारमें अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। विचार-स्वातन्त्र्यका उनमें सर्वथा अभाव है। जो कुछ इन्होने देखा अथवा सुना है, वही कह और कर सकते हैं। दूसरेके बताए हुए मार्गपर चल सकते हैं। अपने वास्ते स्वयं मार्ग बनानेके

लिए इनमें शक्ति और साहस दोनोका अभाव है । ये पराश्रित और पर मुखापेक्षी हो गए हैं । जब इनके सामने प्रश्न आता है कि अमुक बात सत है अथवा असत्, तो इसपर स्वयं कुछ विचार करनेका कष्ट न करके केवल यही देखते हैं कि संसार इसे क्या समझता है । दूसरोके ही आचार, नियम और ढङ्ग को यह अपना समझते है । जो दुनिया कर रही है, वही यह भी करेंगे । उसके सत्, असत्का विचार करना मूर्खता समझते हैं । व्यक्तित्वका निःशेष हो गया है और अनुकरण करना ही एकमात्र कर्तव्य रह गया है ।

कब वह समय आवेगा जब इस देशमें सच्चे और वास्तविक मनुष्यतापूर्ण स्त्री-पुरुष जिनमें बुद्धि-स्वातन्त्र्य, बल, विचार-मौलिकता तथा आत्म-सम्मानका सम्पूर्ण समावेश होगा जो अपने अविचल नियम तथा दृढ संकल्पका अनुसरण कर जीवन-पथके कंटकोंको दूर करेंगे जो अपनी झूठी स्वतन्त्रताके भ्रामक विचारोको दूर कर वास्तविक स्वतन्त्रताके मूलरूपका अनुभव करेंगे, जा समाज और सभ्यताकी असत्य बेड़ियोको तोड़नेकी निर्भीकता दिखलायेंगे, जो मानसिक दासत्वके भयानक रूपको निर्मूल करनेमें समर्थ हो सकेंगे ! कब वह समय आवेगा जब हम इस घोर अन्धकारसे निकलकर प्रकाशका सुख लूट सकेंगे । स्वतन्त्रताकी निर्मल ज्योति इतनी निकट लहलहा रही है, तो फिर क्यो हम इस अन्धकारमें इधर-उधर भटक रहे है ?

हमे आशा है कि इन पंक्तियोके पाठक मानसिक विकाश तथा मनःस्वातन्त्र्यके लिए प्राणपणसे चेष्टा किये बिना न रहेंगे । बीती हुई बातोको छोडकर, पक्षपात-रहित हो कर, सत्यकी खोज करो, वही सत्य जिसके लिए तुम्हारा अन्तः-

करण चिल्ला रहा है। यह न देखो कि दूसरे लोग सत्य किसे कह रहे हैं। सत्यकी परिभाषाकी खोज न करो। सत्य तुम्हारे भीतर है। उसकी ज्योति झलमला रही है, उस ओर ध्यान दो। निष्पक्ष तथा निष्कपट होकर ध्यानसे उस आवाज को सुनो। वह तुम्हें सत्यका मार्ग-निर्देश कर रही है। इस की खोजमें जी-जानसे लग जाओ, स्वयं अपने साथ धोखे बाजी मत करो, जरा ईमानदारीसे काम लो। देखो, शीघ्रही तुम्हें वह लहलहाती हुई रोशनी दृष्टिगत होगी। उसका प्रकाश क्रमशः बढ़ता जायगा और वह समय शीघ्र आवेगा जब तुम्हारा जीवन अत्यन्त श्रेष्ठ और अपूर्व हो जायगा।

तुम्हें मानसिक स्वतन्त्रताकी अत्यन्त आवश्यकता है। इसके विना तुम्हारा जीवन अधूरा, अपूर्ण, दुःखमय तथा असफल है। यदि अवतक तुम इस अमूल्य वस्तुके जिज्ञासु नहीं हो, तो अबसे भी इसकी खोज करो।

# तेरहवाँ अध्याय

## कार्य तथा कृतज्ञता

1 The greatest works have brought the least benefit to their authors. They were beyond reach of appreciation before appreciation came.

Waters.

2 Be not anxious as to the reward of your labours, mind not the future, have no scruples, think not of success and failure, work for work's sake Work is its own reward

Swami Ramtirth

जीवनमें अनेक जटिल समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इनको समझने तथा सुलझानेके लिए बुद्धि, विवेक और धैर्य्यकी आवश्यकता होती है। क्या हित है, क्या अहित है और क्या निष्प्रयोजनीय है, इसके पहचान करनेकी पैदायशी योग्यता किसीमें नहीं होती। इस योग्यताकी प्राप्तिके निमित्त सदुद्योग करनेकी आवश्यकता पडती है। सत्-असत्का ज्ञान हुए विना उचित मार्गका मिलना असम्भव है। मार्गनिर्दिष्ट हुए विना जीवन-यात्राका आरम्भ नहीं हो सकता। यदि किया भी जाय तो यह मूर्खता है। पथ-विहीन यात्राका अर्थ है इधर-उधर भटकना, ठोकर खाना, समय वरबाद करना,

अनावश्यक आपत्तियोंको आमंत्रित करना और जीवनको दुःखमय बनाना। अतः उचित पथ-निर्देशके लिए सत्यासत्य का विवेक होना अनिवार्य्य है और सत्यासत्यके विवेकके लिए सदुद्योग करना अत्यावश्यक है।

थोड़ी देरके लिए हमने यह मान लिया कि तुम अपने भाई-बन्धुओंकी उन्नति करना चाहते हो। तुमने विचार-पूर्वक यह निश्चय किया है कि मैं इस क्षेत्रमें अपनी शक्तियों का सदुपयोग करूँ। इस कार्यको तुम विशेष महत्व पूर्ण समझते हो और इसके निमित्त तुम अपना जीवनदान करने का संकल्प कर चुके हो। तुम्हारी यह बलवती इच्छा है कि तुम्हारे जाति-बान्धव, पुरुष-स्त्री सभी सुसंगठित, समुन्नत. बलवान् तथा विद्वान् हों। निस्सन्देह यह भावना अत्युत्तम तथा संकल्प सराहनीय है। इस प्रकारके विचार हृदयमें उत्पन्न होतेही. एक विशेष शक्तिका अनुभव कराते हैं। इनसे अन्तःकरणमें एक प्रकारकी मधुर प्रसन्नताका आभास होता है। यह रहता तो अस्पष्ट है; परन्तु इससे सारा शरीर गद्‌-गद्‌ और उत्साह-पूर्ण हो जाता है। ऐसे विचारोंसे तुम्हारे उद्योग में सदैव बड़ी सहायता मिलेगी और तुम्हें अपना जीवन सार्थक प्रतीत होगा। तुम्हारे मनमें सदा उच्च तथा परिष्कृत सम्भावनाएँ भरी रहेंगी।

पृथ्वीतलपर कोई कार्य इतना सन्तोषप्रद नहीं है। किसी अन्यकार्यको करके तुम यह नहीं कह सकते कि समय उतना अच्छी तरह व्यतीत हुआ जितना कि इस कार्यमें। क्योंकि किसी प्रकारकी स्वार्थमय अभिलाषा न रखते हुए तुम जो कार्य कर रहे हो, उसमें ही तुम्हें सन्तोष मिलता है। ऐसे क्षेत्रमें तुम्हें जो आनन्द प्राप्त होगा वह अन्यत्र नहीं है

सकता। वास्तविक हर्षका अनुभव इसीमें होता है। अन्य प्रकृतिके कार्य इतने प्रमोदकारी कदापि नहीं हो सकते।

जब तुम इस उत्कृष्ट निष्कर्षपर पहुँच चुके हो, जब तुमने इस महत्कार्यमें अपना जीवन व्यतीत करनेका संकल्प कर लिया है, जब तुम्हारे इस जीवनका यह उच्चतम लक्ष्य निश्चित हो चुका है, तो स्मरण रखो कि तुमको उस साधारण भूलसे बचना पड़ेगा जिसमें लोग अक्सर फँस जाया करते है। वह है दूसरोंसे अपने कार्यके प्रति कृतज्ञता अथवा प्रशंसाकी आशा। तुम्हारी प्रसन्नता तुम्हारे हृदयस्थलसे उत्पन्न होनी चाहिए, इस विचारसे कि तुम एक उच्च कार्य कर रहे हो। दूसरोंसे कुछ भी आशा न करो। कभी न सोचो कि तुम्हारे कार्य्यकी लोग प्रशसा और बड़ाई करेंगे। जिनकी तुम सहायता करते हो, जिन्हें तुम निम्न श्रेणीसे उच्च पद पर आसीन करते हो, उनसे भी कृतज्ञताकी आशा न करो। तुम्हें इस बातसे सन्तुष्ट और प्रसन्न होना चाहिए कि तुम अपने अन्तःकरणके आदेशानुसार सत्कार्यमे तल्लीन हो। दूसरोंसे आशाएँ करना तुम्हारे कार्यमें बाधक होगा।

प्रशंसनीय कार्योंके करनेसे तुम अपनेको विशेष सम्भ्रम का पात्र न समझो। तुमने उन कार्य्योंको इसलिए किया कि तुमको उससे आनन्द प्राप्त हुआ। जो कार्य प्रसन्नताके लिए किया गया, उसके लिए गौरवकी इच्छा करना व्यर्थ है। तुम्हारे सदुद्योगोंसे जो प्रमोद उत्पन्न होता है, वही तुम्हारा पुरस्कार है। उसके अतिरिक्त अन्य पुरस्कारकी आशा नहीं करनी चाहिए। तुम्हें जो प्रसन्नता प्राप्त होती है, वह सत्कार्योंके करनेसे होती है, न कि उनसे मिलने वाले पुरस्कारके लिए।

यदि सड़कपर तुम किसी निर्धन भीख माँगनेवालेको कुछ देते हो, तो स्मरण रखो कि यह दान तुम अपनी प्रसन्नताके लिए देते हो, कुछ उसकी भलाईके लिए नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे देनेसे उसकी भलाई हुई होगी; परन्तु देते समय तुम्हारे अन्तःकरणसे जो धीमी आवाज आई, वह यही कह रही थी कि यदि तुम इसे कुछ दे दो तो बड़ा सन्तोष और हर्ष होगा। ऐसी दशामे तुम उस भिखमगेसे किसी प्रकारकी कृतज्ञता प्रकाशित करनेकी आशा कर भारी भूल करते हो। दान देनेहीमें तुम्हें प्रसन्नता मिल चुकी है। अब इससे अधिक का लालच कर अपनेको हताश न करो। एक मात्र पुरस्कार, जो किसी सत्कार्यके उपलक्षमे मिल सकता है, उस कार्यके करनेकी प्रसन्नता है। इससे अधिककी आशा करना व्यर्थ है। यह भी न सोचो कि भविष्यमें कोई स्वर्गीय पुरस्कार मिलेगा। तुम्हारे धार्मिक विश्वास चाहे जो कुछ हो, किसी शुभ कार्यके लिए भविष्यत्में उत्तम फलकी आशा करना ठीक नहीं है। तुम्हें जो कुछ मिलना था यहीं मिल चुका और वह है तुम्हारी आन्तरिक प्रसन्नता। भगवान् कृष्णने भी कहा है—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

तुम्हारा धर्म केवल कर्म करनेका है। फलकी आशा करना नहीं।

मैं इसे स्वीकार करता हूँ कि अकृतज्ञतासे मनुष्यको बड़ा दुःख होता है। जब तुम्हारे मित्र, जिनको तुमने अपनी सामयिक सहायतासे निरापद, बलवान् तथा योग्य बनाया है, अपनी शक्तियोंका प्रयोग तुम्हारे विरुद्ध करते हैं और तुम्हारे किये हुए कार्योंकी महिमा घटाकर तुम्हारी कीर्तिको मटियामेट करना चाहते हैं, तो तुम्हारे मनमें ग्लानि होती है। तुम

यह सोचने लगते हो कि तुम्हारे सब उद्योग निष्फल हो गए और तुमने वास्तवमें कुछ भी नहीं किया। तुम्हारा उत्साह भंग हो जाता है और यह ख्याल दिलमें जमने लगता है कि ऐसे मनुष्योंके साथ उपकार करना व्यर्थ है।

परन्तु याद रखो कि अकृतज्ञताका तुम्हारे हृदयपर शासन कदापि न होना चाहिए। भूलकर भी इसका प्रभाव न पड़ने दो। यह तुम्हारे सुचिन्त्य मार्गमें रोड़ा है। इसे ठोकर मार कर दूर करो। कृतज्ञता, अकृतज्ञताके विचार ही तुम्हारे पवित्र मस्तिष्कको दूषित करनेवाले हैं। इनसे ऊपर उठो। इनके ऊपर अपना आसन लगाओ। यदि तुम उच्च तथा उदार हो और यदि तुम यह समझते हो कि जिनकी तुमने गाढ़ेमें सहायता की है, वे संकुचित-हृदय तथा क्षुद्र बुद्धिवाले हैं, तो उनसे तुम कृतज्ञताकी आशा न करो। तुमने उनकी सहायता की है। ऐसा करनेमें तुम्हारी आत्माको सुख तथा सन्तोष प्राप्त हुआ। इस प्रकार तुमने अपने मानव-धर्मका पालन किया, यह हर्षका विषय है। वे कृतघ्न प्रमाणित हुए। इसके लिए उनको बुराभला न कहो। उनका कोई दोष नहीं, उन विचारोंके संकुचित हृदयमें कृतज्ञताके लिए स्थानही नहीं हैं। वे अब भी दयाके पात्र हैं। निस्सन्देह तुम्हारी सहायतासे उनको लाभ पहुँचा और वे आर्थिक तथा शारीरिक उन्नति भी कर गये। परन्तु इससे तुम यह नहीं आशा कर सकते कि वे मानसिक तथा आत्मिक उन्नतिमें भी तुम्हारे ही समान हो जाँयगे।

हमलोगोंमेंसे कुछ ऐसे भी हैं जिनके सच्चे मित्र हैं, जिन्होंने आजीवन सहृदयताका परिचय दिया है। ये मित्र, जब सच्चे ईमानदार और घनिष्ट होते हैं, तो उनसे जीवन -यात्रामें भारी सहारा मिलता है। वे हमारे पथके अन्धकारमय

मार्गमें उज्ज्वल प्रकाशका काम देते हैं। परन्तु अत्यधिक भरोसा किसीपर भी नहीं करना चाहिए। सदा स्वावलम्बन ही सच्चा सहारा है। परावलम्बी होनेसे हताश और निराश होना पड़ता है। बहुत सम्भव है कि सच्चा मित्र भी गाढ़े समयमें उतनी सहायता न कर सके, जितनीकी तुम उससे आशा रखते थे।

सदा अपने पैरोंपर खड़े रहो! दूसरेका सहारा कदापि न ढूंढ़ो। सब जगहसे शिक्षा प्राप्त करो। कानों तथा आँखों को खोलकर संसारमे चलो। प्रत्येक अच्छी वस्तुका संग्रह करो। उच्च विचारोंको, चाहे जिस मार्गसे प्राप्त हो, ग्रहण करो। अपने ध्येयकी पूर्तिमें जो दूसरोंसे सहायता मिले उसे सहर्ष स्वीकार करो। परन्तु स्वावलम्बन न भूलो। अपने ही विचारोंको अपना सच्चा पथ-प्रदर्शक बनाओ। दूसरोंके विचारोंको तब तक ग्रहण न करो जब तक तर्क द्वारा तुम स्वयं उसे समझ कर हृदयङ्गम न कर लो। ऐसा करनेसे वे विचार तुम्हारे हो जायँगे, तब तुम अपने अन्तःकरणमें स्वतन्त्रता का अनुभव करोगे और अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तिके बलपर निर्भय कार्य करोगे। इस प्रकार जो कुछ भी तुम कर सकोगे, वह तुम्हारा होगा।

# चौदहवाँ अध्याय
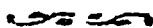
## दुर्व्यसन

1 Alcohol and tobacco dry up the soul and eat away substance of man

2 All honour then to each brave heart,
Though poor or rich he be,
Who struggles with his baser part,
Who conquers and is free.
He may not wear a hero's crown,
Or fill a hero's grave,
But truth will place his name among
The bravest of the brave

Charles Mackay.

क्या तुम मानव-सन्तानके दुःख, क्लेश, अपराध, अन्याय, निधनता, निर्बलता तथा समस्त आपत्तियोंका मूल कारण जानना चाहते हो ? यदि हाँ, तो ध्यानसे सुनो । मैं तुम्हारे समक्ष कुछ तथ्योका उल्लेख करता हूँ, जिनकी सत्यताके विषयमें किसी भी बुद्धिमान् मनुष्यको सन्देह न होगा ।

तुम कहते हो—"आह ! बहुतसे ऐसे आदमी हैं, जो समझते हैं कि मैं यह सभी कुछ जानता हूँ ।" परन्तु इतनी शीघ्रता न करो। कृपया थोड़ीदेर मेरे साथ ठहरो और मेरी बातें सुनो साथही साथ तुम अपनी तर्कशक्तिको भी पूर्ण स्वतन्त्रता तथा निष्पक्ष भावसे कार्य्य करने दो। जिस प्रकार मैं तथ्योंका

तुमसे वर्णन करता हूँ उसी प्रकार तुम भी दोनो पक्षोको सुनकर यथोचित रीतिसे विचार करो ।

आजकल अन्याय तथा अनाचार सर्वत्र फैला हुआ है। डाकुओ और लुटेरोकी संख्या अत्यधिक बढ़ गई है। ये दिन-दहाडे सभ्यताकी ओटमें बठकर तुम्हारा सर्वस्व लूट रहे हैं। व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक दैशिक तथा नागरिक-सभी कार्यो में इनका हस्तक्षेप है और ये तुम्हारे अमूल्य समय, धन तथा स्वतन्त्रताका अपहरण कर रहे हैं। प्रत्येक देश, नगर तथा ग्राममें इनकी संख्या बढ़ रही है।

परन्तु प्रश्न यह है कि ये उन्नति क्यो कर रहे हैं, इनकी वृद्धि क्यो हो रही है। तुम कह सकते हो कि इसका कारण अन्याय पूर्ण कानून है, जिसके द्वारा कुछ इने गिनोको विशेष सुविधाएँ प्राप्त हैं और अधिक सम्पत्तिके लालचमें वे इन सुविधाओका दुरुपयोग कर सम्मान तथा न्यायकी सद्भावनाओका मूलोच्छेद कर डालते हैं। उदारताको उनके हृदय में स्थान नहीं है। कोमल विचार उनके अन्तःकरणसे लुप्त हो गए हैं, जिससे निर्बलोपर अत्याचार करनेमें उनको किसी प्रकारकी हिचकिचाहट नहीं होती।

वाह्यदृष्टिसे तो यह सत्य है। पर यदि तुम और विचार करोगे, तो अन्य निष्कर्षोपर भी पहुंच सकोगे। आधुनिक प्रभुओं की धन-लिप्सा तथा असम्मानपूर्ण व्यवहारके कारण निर्धन तथा अज्ञान लोगोपर जो अत्याचार तथा आपत्तिका प्रहार हो रहा है, उसका एक मुख्य कारण यह है कि साधारण स्त्री-पुरुष आजकल बड़े बोदे तथा बे विचारके हो गए हैं। वे अपनी बुद्धिसे, अपनी विचार-शक्तिसे कुछभी काम नहीं लेते। उदाहरणके लिए किसी राजनैतिक दलको ले लो। इसमें संदेह नहीं

कि इस दलमें बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वान् और धारा प्रवाह बोलने वाले लोग होते हैं। परन्तु जब कोई विषय विवेचनार्थ सभामें उपस्थित होता है उस समय इनकी दलीलें कैसी होती हैं, यह ध्यान देकर सुनने योग्य है। विपक्षीदल, विशेषकर वहदल जिसे अपने प्रभुत्व का गर्व है, कैसी अन्याय-पूर्ण, असंगत तथा मिथ्या युक्तियोंका अवलम्बन करता है। फिर भी उसे सफलता होती है। सोचनेकी बात है कि ऐसी मिथ्या तथा अन्यायपूर्ण बातें सत्य अथवा तथ्यका जामा कैसे पहन लेती हैं। इसका एक मात्र कारण यही हो सकता है कि साधारण जनतामें विवेचन शक्ति नहीं रह गई है। लोग स्वयं विचार करनेके अभ्यस्त नहीं हैं। वे बड़े ही संकीर्णक्षेत्रमें निवास करते हैं। वे परावलम्बी और परमुखापेक्षी हो गए हैं। स्वावलम्बनकी भावना उनसे कोसो दूर हो गई है। अन्यलोग ही उनके लिए विचारका कार्य करते हैं, उनके लिए सोचते हैं, उनको मार्ग दिखलाते हैं और समय आपड़नेपर उनके लिये लड़ते भी हैं। उन कतिपय लोगोपर ही इन लोगोका अन्ध विश्वास है।

परन्तु, मनुष्य समाज इस प्रकार भेड़की तरह क्यो हो रहा है? क्यो वह अविचारी मनुष्योके नेतृत्वमें अपना जीवन बरबाद कर रहा है। इसका कारण यही है कि उसमे, विचार स्वातन्त्र्य नहीं है। दूसरो ही से वह सोचने विचारनेका काम लेता है। तुम यह कह सकते हो कि इनमेंसे बहुतोने स्कूल का मुँहतक नहीं देखा है। उन्हें इतनी शिक्षा प्राप्त करनेका अवसर ही नहीं मिला कि वे विवेचन करनेकी स्वतन्त्रशक्ति प्राप्त कर सकते।

परन्तु मेरी समझसे यह विचार नितान्त भ्रामक है; व्यर्थ है। कतिपय इने गिने व्यक्तियोंको छोड़कर कोई भी

इस देशमें ऐसा नहीं है, जो पूर्ण रूपसे विद्या प्राप्त करनेका गर्व कर सके। इतनी भी विद्या नहीं कि समाचार पत्र पढ़ कर लोग उसका अर्थ समझ सके। परन्तु यह कोई समुचित कारण नहीं कि वे जीवनकी समस्याओंपर स्वतन्त्र विचार न कर सकें। यदि वे ऐसा करनेमें असमर्थ हैं, तो इसका कारण यह है कि उन्होने, विषय वासना तथा मादक द्रव्योंके अमित व्यवहारसे अपनी विचार शक्तिका सत्यानाश कर-डाला है। कृष्ण भगवान्‌ने गीताके द्वितीय अध्याय में कहा है:—

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
संगात्संजायतेकामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

अर्थः-विषय भोगका विचार करनेसे उसमें आसक्ति होती है। आसक्तिसे पानेकी इच्छा उत्पन्न होती है। इच्छाकी पूर्ति न होनेपर क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोधसे अविचार और अविचार से स्मरणशक्तिका ह्रास होता है। स्मरणशक्तिके ह्राससे बुद्धिका नाश होता है और बुद्धिके नाश होनेसे सर्व-नाश हो जाता है।

मनुष्य समाजकी विशेष विपत्तियोंका मूल कारण इसमें है। अन्याय पूर्ण कानूनो तथा मिथ्याभाषी नेताओंका ही सब कुछ दोष नहीं है। भारी दोष है। सर्वसाधारणमें फैली हुई कुरीतियों और आदतों का। विषयवासनाके आधिक्य तथा मादक द्रव्योके प्रयोगने उनकी विवेक शक्तिको कलुषित और अपंगु कर दिया है, जिसके कारण ये समस्त बुराइयाँ उत्पन्न होती और उनको सताती हैं।

मैंने कभी शिक्षा प्राप्त नहीं की। अर्थात् जिसे तुम स्कूलकी तालीम कहते हो, वह मुझे कभी नहीं मिली। मैंने अनुभवकी बृहत् पाठशालामें ज्ञान प्राप्त किया है या एलबर्ट हब्बर्ड ( Elbert Hubbard ) के शब्दोंमें 'कड़ी चोटोंके स्कूलमें' सच्ची और वास्तविक शिक्षा जीवनके बहुमूल्य पाठ पढ़ाती है और तुम्हें अपनी परिस्थितियोंके अनुसार चलनेके योग्य बनाती है। ईश्वर-प्रदत्त विचार-शक्तिके निरन्तर प्रयोग करते रहनेसे उपर्युक्त स्थिति उत्पन्न करनेकी योग्यता प्राप्त होती है। विचारोंका कार्यके साथ अत्यधिक सम्बन्ध है। तुम्हारे समस्त कार्य तुम्हारे विचारोंके ही फल हैं। विचार सदा कार्यके आगे चलता है। यदि तुम्हारा मस्तिष्क विषय-वासनामें अधिक लिप्त रहनेसे अथवा शराब, भंग, अफीम, तम्बाकू आदि नशीली चीजोंके प्रयोग करनेसे दूषित, निर्बल और अकर्मण्य हो जाता है, तो तुम यथोचित रूपसे कभी विचार नहीं कर सकते। तुम्हारे विचार सदा नीच और भ्रष्ट होंगे। परिणाम-स्वरूप तुम पतित हो जाओगे। इसमें दूसरेका क्या दोष हो सकता है? सारा दोष तुम्हारे दुर्व्यसनोंमें लिप्त होनेका है।

इन विषमय पदार्थोंके अतिरिक्त मानसिक दुर्बलताका एक और भी कारण है। वह है आवश्यकतासे अधिक भोजन। यह भी महान दुर्व्यसन है। कुछ लोगोंकी तो ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे अधिक खाए बिना रह ही नहीं सकते। सभीका साधारण अनुभव है कि अधिक भोजन करनेसे आलस्यका आधिक्य होता है, प्रमाद बढ़ता है। कोई कार्य करनेकी इच्छा नहीं होती। केवल पड़े रहनेको जी चाहता है। वैद्योंका कहना है—और सत्य भी है—कि अधिक भोजनसे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। पाचनशक्तिपर व्यर्थ बोझ-

डालनेसे वह क्रमशः बिगड़ने लगती है और अन्तमें सर्वथा खराब होकर मानव शरीरको व्याधियोंका घर बना देती है। इसलिए इस दुर्व्यसनसे बहुत सावधान रहना चाहिए। यह एक साधारण बात है कि अधिक भोजन करनेपर जब शरीर आलस्यमय होजाता है तो मनुष्य कोई कार्य किस प्रकार कर सकता है? खासकर सोचनेका कार्य तो सर्वथा असम्भव है।

मैं इसे अवश्य स्वीकार करूँगा कि जो कुछ मानसिकशक्ति मुझमें है वह मुझे अपनी १५ वर्ष पूर्वके अभ्यासके द्वारा प्राप्त हो सकी है। मैं दिनमें केवल दो बार भोजन करता हूं, शराब, गाँजा, भंग, अफीम, चरस, तम्बाकू, सिगरेट, चाय, कहवा आदि समस्त मादक पदार्थोंसे कोसों दूर भागता हूँ। कदाचित किसीको यह आश्चर्यजनक मालूम हो, पर यह सर्वथा सत्य है। मेरी शक्तियाँ केवल भोजनके पचाने और जहरोंके हजम करनेमेंही नहीं समाप्त हो जातीं। मैं उनका प्रयोग चेष्टापूर्वक विचार करनेमें करता हूँ। यदि तुम अधिक भोजनका दुष्परिणाम देखना चाहते हो. तो उस सर्पकी दशा देखो, जिसने अभी एक बड़ा मूषक निगल लिया है अथवा स्वयं एक आध समय उपवास करके देखो कि तुम्हारे मस्तिष्कमें कितनी स्फूर्ति और स्वच्छता होती है। इसके प्रतिकूल तुम खूब ठूस-ठूस कर भोजन करने के उपरान्त एक प्रश्न लेकर बैठो और हल करनेका प्रयत्न करो। कदापि उसे हल न कर सकोगे, जबतक कि अत्यधिक परिश्रम न करोगे। परन्तु इस दशामें अजीर्णसे पीछा छुड़ाना कठिन होगा। तात्पर्य यह कि या तो तुम अजीर्णसे पीड़ित होगे या निद्राके वशीभूत होगे। दोनों ही दशामें

तुम्हारे लिए मानसिक अथवा शारीरिक कार्य करना कठिन हो जायगा।

अतः अपनी निर्बलताओंके लिए दूसरोंके सिर दोष मढ़ना छोड़ दो। स्वयं तुम दोषी हो। यदि अन्य लोग तुम्हारी कमजोरियोंका लाभ उठाते हैं, तो ऐसा करनेके लिए तुम उनको अवसर देते हो। तुम क्यों उनके विचारानुसार चलते हो? क्या परमात्माने तुमको बुद्धि नहीं दी है? फिर क्यों उसका प्रयोग नहीं करते? दूसरोंको क्यों सोचने विचारने का ठेका दे रखा है? वास्तवमें दुर्व्यसनोंमें पड़कर तुमने अपनी शक्तिका विनाश कर दिया है।

यदि तुम उपर्युक्त कुत्सित व्यसनोंके दास हो यदि तुम अपनी समस्त शक्तिका दुरुपयोग इन्हीं कुमार्गोंमें कर रहे हो, तो निस्सन्देह तुम्हें इसका उचित फल भोगना पड़ेगा। अन्ततक तुम्हें दुःख और क्लेशसे छुटकारा नहीं मिलेगा। तुम पृथ्वीपर रेंगनेवाले कीड़ेसे किसी प्रकार बढ़कर नहीं हो। मार्ग चलते जो मिलगया, उसपरही सन्तोष करना पड़ता है। तुम मनुष्यत्वके उच्चतम लक्ष्यको कभी नहीं प्राप्त कर सकते।

यदि तुम अपनी निर्बलता और अज्ञानताके कारण असन्तुष्ट हो रहे हो, तो इसका दोष दूसरेको न दो। सारा दोष अपने सिर पर लो। तुम्हें शिकायत करनेका उस समयतक कोई अधिकार नहीं जबतक तुम अपनेको इन शरीर-भक्षक दुर्व्यसनोंसे मुक्त नहीं कर लेते। निस्सन्देह वे महामूर्ख हैं, जो अपनी कठिनाइयोंको कम करनेके लिए शराब अथवा अन्य किसी नशेका सेवन करते हैं। यदि कठिनाइयाँ तुम्हारे मार्गमें उपस्थित होती हैं, तो उनको दूर करनेका प्रयत्न करो और

शीघ्रतापूर्वक करो। विलम्ब करनेसे उसमें कमी नहीं हो सकती कादर न बनो। मनुष्य बनो, मर्द बनो। वीरतापूर्वक कष्टों तथा बाधाओंका सामना करो। अपनी बुद्धिसे काम लो। मस्तिष्कपर जरा बल लगाओ। तुम्हारी प्रसन्नता तथा मुक्तिके हेतु किस वस्तुकी आवश्यकता है इसकी खोज करो। अभी करो, आज करो, शीघ्रतापूर्वक करो। टाल-मटोल करनेसे नहीं बनेगा। बनेगा धीरतापूर्वक विचार करनेसे, वीरतापूर्वक कार्य करनेसे। समस्त नशीली चीज़ोंका त्याग करो, दिनमें केवल दो बार भोजन करो। किसी समय भी अपना पेट आवश्यकतासे अधिक न भरो। मिताहारी बनो। समस्त दुर्व्यसनोंको उन मूर्खोंके लिए छोड़ दो, जो इस संसारमें केवल मृत्युकी तलाशमें घूम रहे हैं। उनका केवल नाम ही निशान न मिटेगा, बल्कि वे अकालमृत्युके भी ग्रास बनेंगे। ईश्वर करे वह समय शीघ्र ही आवे जब समस्त दुर्व्यसनोंका लोप हो जायगा।

# पन्द्रहवाँ अध्याय

## शोक और हर्ष

1. Sin and sorrow are fast friends.

Proverb.

2 Crush sorrow, cultivate happiness

B Macfadden.

3. Cheerfulness gives elasticity to the spirit.

Samuel Smiles

बचपनकी छोटी तकलीफें भी कितनी भयङ्कर मालूम होती थीं। थोड़ासा कष्ट भी सारे संसारको दुःखमय बना देता था। अब उस अल्पावस्थाकी बातोंको खयाल कर हम लोग हँसते हैं। और वास्तवमें वह थीं भी हँसनेही योग्य। कभी भूख लगनेपर रोना, कभी गिरकर थोड़ी चोट लगनेपर रोना, कभी किसीकी कड़ी दृष्टि पड़नेपर रो देना और कोई बात यदि इच्छाके प्रतिकूल हुई, तो रोने लग जाना। रोना भी इतना कि मानो सारी विपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा है। भला इन बातोंपर अब हँसी न आवे तो और हो क्या ? हाँ, कठिनाइयाँ अब देखनेमें आ रहीं है। इस समयके कष्टोंपर हमे हँसी नहीं आ सकती। परन्तु वह सूक्ष्म विचारका प्रश्न है। दुर्दिन और दुर्दशाके प्रभावको समय अवश्य कम करता है।

पाठक, यदि आप अपनी व्यतीत अवस्थापर थोड़ा ध्यान दें, तो आपको स्मरण होगा कि बहुतसी ऐसी बातें हैं जिनका महत्व आपकी दृष्टिमें उस समय कुछ भी नहीं था, परन्तु

अब वही बात इस अवस्थामें बड़ा कठिन प्रतीत होती है। युवावस्थाकी कोमल चित्तवृत्ति विशेषतया साधारण बातोंको अनुचित महत्व दिया करती है। क्षुद्र बातको बृहत्‌रूप देनेका इसका स्वभाव होता है। यदि छोटी-मोटी तकलीफ भी हो जाती है, तो आपको संसारही अन्धकारमय प्रतीत होने लगता है। आपकी घबड़ाहट और परेशानीका ठिकाना नहीं रहता। परन्तु धीरे-धीरे यह कोमलता और असहिष्णुता घटती जाती है और मनुष्य दृढ़ होता जाता है जैसे-जैसे समय बीतता है और जितनी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है, उतनी ही दृढ़ता आती जाती है। दुःखका प्रभाव घटता जाता है और आप इसे सहन करनेमें समर्थ हो जाते हैं। बाज-बाज समय दुर्भाग्यके चक्रमें बड़ी ही भयङ्कर और हृदय विदीर्ण करनेवाली विपत्तियोंका सामना करना पड़ जाता है, परन्तु आपत्ति चाहे कितनी ही भयङ्कर हो, समय उसको शनैः-शनैः प्रभाव-हीन कर देता है और हमें भी उनके सहन करनेका अभ्यास हो जानेपर बहुत कुछ सहूलियत हो जाती है। अन्तमे इसका सब प्रभाव जाता रहता है।

जब कभी किसी घनिष्ठ मित्र अथवा निकट सम्बन्धीकी मृत्यु हो जाती है, तो हृदयको कितना गहरा धक्का लगता है। ऐसा जान पड़ता है मानो किसीने कलेजा काटकर निकाल लिया हो, मानो कोई अत्यन्त प्यारी वस्तु छीन ली गई हो, जिसका वियोग सर्वथा असह्य होकर हृदयको टूक-टूक कर रहा है कभी-कभी शोक तथा क्लेशकी मात्रा इतनी अधिक हो जाती है कि मनुष्य सर्वथा विक्षिप्त हो जाता है और कोई-कोई तो प्राणतक देनेको प्रस्तुत हो जाते हैं। परन्तु समयका प्रभाव बड़ाही विचित्र होता है। धीरे-धीरे यह दुःखकी मात्राको

इस प्रकार घटाना आरम्भ करता है कि कुछ ही कालमें आपको इस दुर्घटनाका ध्यान जाता रहता है, और फिर आप अपना समय उसी आनन्द-प्रमोदके साथ विताने लगते हैं। मनुष्यका पड़ोस और उसकी बाह्य परिस्थिति भी भूत बातों की स्मृति लुप्त करनेमें बड़ी सहायक होती है। थोड़े समयके लिए जीवन अवश्य बड़ा ही तुच्छ और व्यर्थ मालूम होने लगता है। इसे त्याग करनेमें विशेष संकोच नहीं होता, परन्तु समयके प्रवाहसे इसका प्रभाव बहुत अल्प हो जाता है और अन्तमें एक दिन निःशेष हो जाता है। मनुष्य सदा उसके फेरमें नहीं पड़ा रह सकता। प्रकृति भी इसमें बड़ी सहायक होती है। इसकी गुप्त शक्ति प्रत्येकके अन्दर होती है, जो सदा दुःख और शोकसे पीछा छुड़ानेका प्रयत्न करती रहती है।

तुम्हारे शोक, कष्ट तथा कठिनाइयोंको कम करनेमें प्रकृति तो अवश्य सहायक होती है,परन्तु कुछ लोगोका ऐसा स्वभाव होता है कि वे अपने दुःखो तथा कष्टमय स्मृतियोको बनाये रखनेका ही प्रयत्न करते हैं। इसका कितना अहितकर परिणाम होता है, इसका वे ध्यान ही नहीं करते। अपनी कष्टप्रद अवस्थामें भी उन्हें एक विचित्र प्रकारका सन्तोष प्रतीत होता है। जैसे कोई व्यक्ति नाटक देखने जाता है और शोकोत्पादन करनेवाले दृश्योंको देखकर रोया करता है उसी प्रकार ये लोग शोकमय स्थितिमें रहते हुए भी एक प्रकारके खेद-जनक आनन्दका अनुभव किया करते हैं।

परन्तु इसका प्रभाव अहितकर होता है इससे बचनेका प्रयत्न करो। जब कोई आपत्ति आ जाय तो यथासम्भव शीघ्र ही उसके दूर करनेका प्रयत्न करो। 'यदि तुम्हारा कोई प्रिय सुहृद मृत्युको प्राप्त होता है, तो उसके विषयकी समस्त

बातोको शीघ्रातिशीघ्र भूल जानेका प्रयत्न करो। उससे जो कुछ तुम्हें आराम मिलता था, उसका ध्यान एकदम छोड़ दो। ऐसा ख्याल करो कि मानो वह तुम्हारा कोई थाही नहीं, उससे तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुंचता था। तुम उन बातोपर विचार करो, जो हर्षप्रद हैं, जो चित्तको प्रसन्न करनेवाली हैं। खेद उत्पन्न करनेवाली किसी बातको अपने हृदयमें स्थान ही न दो।

अप्रसन्नता पाप है। इससे हृदय मुर्दा और शारीरिक स्थिति निर्बल हो जाती है। यह सचमुच एक असाधारण स्थिति है, जब मनुष्यको कष्टमें भी आनन्द मिलता है। सदा प्रसन्न-चित्त रहनेका प्रयत्न करो। एक डाक्टरका कथन है कि:—"दिनमें यदि तीन बार अट्टहास करो, तो वैद्यकी आवश्यकता नहीं पड़ती।" प्रसन्न रहनेसे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। रोगोसे मनुष्य बचा रहता है। कभी ऐसे नाटक या खेल न देखो, जिनसे हृदयको दुःखका अनुभव करना पड़े। दुःखमय दृश्य कुछ कालके लिए तुमको शोकातुर करही देते हैं।

यदि ऐसे नाटकोंके देखनेपर तुम्हारे चित्तपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और तुम अणुमात्र भी दुःखका अनुभव नहीं करते, तो तुम्हारी यह अवस्था भी शोचनीय है। तुम्हारा हृदय ऐसा कठोर हो गया है जैसे "हिपोपोटेमस" जानवर का चमड़ा। इसपर किसी चीजका असर पड़ही नहीं सकता। ऐसी दशामें तुम्हें जीवनके वास्तविक आनन्दका अनुभव भी नहीं हो सकता।

व्यर्थके लिए शोक न करो। सदा प्रसन्न रहो। चित्तको मृदुल, कोमल और हर्षमय बनाओ।

# सोलहवाँ अध्याय

## साहस

1. I like the man who faces what he must.

2. I find nothing so singular in life as this that every thing opposing appears to lose its substance the moment one actually grapples with it.

Hawthorne.

3 Shallow men believe in luck; believe in circumstances. Strong men believe in cause and effect.

Emerson.

प्रत्येक कार्यमें साहसकी परम आवश्यकता होती है। साहस-हीन व्यक्तिसे किसी महत्वपूर्ण कार्यके सम्पादनकी आशा नहीं की जासकती। तुमसे प्रश्न होसकता है कि तुम स्वयं दिलेर हो या बुजदिल। इस प्रकारका प्रश्न भद्दा अवश्य प्रतीत होगा, परन्तु मैं इसे बड़ी सत्यता तथा गम्भीरतापूर्वक पूछता हूँ। दोमेंसे एक ही बात हो सकती है या तो तुम वीर, बहादुर हो या निर्बल और कायर हो। इसके सिवा बीचका अथवा तीसरा मार्ग नहीं हो सकता। तुम्हारा धर्म है कि तुम सर्वथा ईमान-दार तथा निष्पक्ष होकर विचार करो और अपने अन्तस्तलमें इस प्रश्नका उत्तर ढूँढ़ो। यदि तुम वास्तवमें कायर तथा भीरु हो, तो इसके कहने और स्वीकार करनेमें आगा-पीछा न करो। अपनेको धोखेमें कदापि न डालो। सदा अपने ऊपर कड़ी नजर रखो। यदि तुम्हें ज्ञात हो जाता है कि तुम सच-मुच बड़े भीरु, निर्बल और डरपोक हो, तो यह न समझो कि इसका ज्ञान प्राप्त करकेही तुम्हारा कार्य समाप्त होगया। नहीं,

तुम्हें विचार करना होगा और विचार कर इसका पता लगाना होगा कि इस भीरुता तथा निर्बलताका क्या कारण है। इन कुत्सित तथा अवांछित प्रकृतियोंकी उत्पत्ति कैसे होगई? इसके जान लेनेके उपरान्त तुम्हें मूल कारणोंको मूलोच्छेद करनेका प्रयत्न करना होगा।

यह तुम्हें भली भाँति ज्ञात होना चाहिए कि भीरु, डरपोक तथा निर्बलके लिए इस संसारमें कोई स्थान नहीं है। जहाँकि जीवनमें चढ़ा-उपरीका बाजार गर्म है, जहाँ जीविका-वृत्तिके लिए घोर संग्राम मचा हुआ है, वहाँपर भीरु तथा निर्बल सफलताकी क्या आशा कर सकते हैं? वास्तवमें वे सफलताके अधिकारी भी नहीं हैं। सफलता तो वीर, साहसी जीवोंके करकी शोभा है; यह तो दिलेर, बहादुरोंकेही मस्तकपर ताज पहनाती है। डरपोक तथा कायरोंसे यह कोसों दूर भागती है। देखनेमें आता है कि इस देशमें मनुष्यजातिका कलंकित करनेवाले कापुरुषोंकी संख्या अत्यधिक हो गई है, जो अपनीही छायासे भी भयभीत होते हैं, जिनमें शारीरिक तथा मानसिक शक्तियाँ सर्वथा निःशेष हो गई हैं और जो साहस, स्वतन्त्रता तथा व्यक्तित्वको बिलकुल खो बैठे हैं। ऐसे जीव यदि इस घोर जीवन-संघर्षमें सफलता-प्राप्तिका स्वप्न देखें, तो निस्सन्देह उनकी यह मिथ्या आशा है।

कुछ ऐसे लोग भी हैं जो देखनेमें स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होते हैं, परन्तु उनके हृदयकी ओर दृष्टि फेरनेपर वे एक नम्बरके भीरु निकलते हैं। वे सदा किसी ऐसी वस्तुसे डरा करते हैं, जिसके विषयमें वे स्वयं भी स्पष्ट रूपसे कुछ नहीं जानते। बिलकुल निराधार भयके फेरमें पड़े रहते हैं और जनके अन्ततक इस भयसे वे पीछा नहीं छुड़ा सकते।

क्या तुम भी ऐसेही लोगोमें से एक हो ? क्या तुम्हें भी सदा भयकी आशंका बनी रहती है ? क्या तुम्हारा मन सदा भयोत्पादन करनेवाली बातोके विचारमेंही मग्न रहता है ? क्या तुम यही सोचा करते हो कि अमुक कार्य बड़ा कठिन है, इसे मैं किस प्रकार कर सकता हूँ। उसमें बड़ी-बड़ी आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा और बहुत सम्भव है कि मुझे नितान्त असफल होना पड़े इत्यादि-इत्यादि ? यदि ऐसी निर्मूल भयोत्पादक बातोके चक्करमें तुम्हारा मस्तिष्क फँसा हुआ है, तो याद रखो, तुम्हें जीवनमें वास्तविक सफलता कदापि नहीं प्राप्त हो सकती । तुम कायरता तथा भीरुताके चंगुलमें बेतरह फँसे हो । तुम आधार-हीन शङ्काओके शिकार हो रहे हो । इससे मुक्त होनेका प्रयत्न करो । कायरता छोड़ो अपने हृदयको मजबूत बनाओ । जीवनको कार्य्यशील बनाओ । इसे व्यर्थ बरबाद न करो । अपने विचार तथा शक्तिको उस कार्य्यकी ओर लगाओ जिसका होना तुम्हें सम्भव प्रतीत होता हो और निःशंक होकर उसमें लग जाओ । व्यर्थकी शंकाएँ बड़े-बड़े अनर्थ कर डालती हैं । इनसे सदा चैतन्य रहो । भयको पास फटकने न दो । यदि तुम्हें भय प्रतीत होता है, तो तुम पता लगाओ कि इसका क्या कारण है । कौन सी वस्तु है, जो तुम्हें भयभीत कर रही है । छान-बीन करनेपर तमको यही ज्ञात होगा कि वास्तवमें तुम्हारे डरनेका कोई यथेष्ट कारण नहीं है ।

साहसी बनो ! किसीसे न डरो !

शक्तिके उस उद्गमस्थानकी तलाश करो जिसे मानसिक स्वतन्त्रता कहते हैं । कुत्सित इच्छाओं तथा स्वार्थमय वासनाओका त्याग करो । बुद्धिको निष्पक्ष तथा विचारोंको उदार

बनाओ। परोपकारको जीवनका एक लक्ष्य बनाओ। यदि तुम जीवनके अन्तिम समयमें अपने व्यतीत जीवनपर दृष्टि-पात कर सुख तथा सन्तोष प्राप्त करना चाहते हो तो तुमको इसके निमित्त परिश्रम करना पड़ेगा। अभीसे अपने जीवनको सुचिन्त्य मार्गपर सुव्यवस्थित रूपसे चलाना होगा।

कभी उदासीन अथवा हताश न हो। अपनी शक्ति तथा उद्योगको अन्धकारमें विनष्ट न करो। संकीर्णतासे परे हो जाओ। इसके लिए तुमको मानसिक तथा शारीरिक उत्थान-की अवश्यकता होगी। बलपूर्वक अपने व्यक्तित्वकी रक्षा करनी होगी। जैसे छोटा बालक अँधेरी कोठरी में भूत-प्रेतही देखा करता है, उसी प्रकार यदि तुम अपने विचारोंको सम्भा-वनाओंको खतरोंमेंही उलझाये रहोगे, तो इनके बाहर निकलना असम्भवही है। जितनाही अधिक क्षुद्र, संकीर्ण तथा मलीन विचारोंमें लीन रहोगे उतनाही इनकी वृद्धि होगी और तुम्हारी वास्तविक मानव-शक्तिका ह्रास होगा।

भीरु जन पग-पगपर भयकी आशंका किया करते हैं। प्रत्येक वस्तुमें उन्हें कोई न कोई भयावह पदार्थ अवश्य नजर आता है। फलतः किसी मनुष्योचित कार्यमें वे हाथ नहीं लगा सकते। सचमुच वे मानव-जातिके लिए भारी कलंक हैं। सफलता उनको कभी मिलही नहीं सकती। सफलताका मूल मंत्र यह है कि अपनी शक्तियोंका अनावश्यक शंकाओंमें विनाश न कर उनका सुकार्य तथा सदुद्योगमें सदुपयोग किया जाय।

# सत्रहवाँ अध्याय

## संकट और विपत्ति

1. Though losses and crosses
    Be lessons right severe,
  There's wit their, you'll get there,
    You'll find no other where.

**Burns.**

2. Crosses are the ladders that lead to heaven.

**Proverb.**

मानसिक शक्तियोके विकाश तथा मानव सहृदयताकी वृद्धिमें एक विशेष शक्तिका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। इसकी चर्चा लोग बहुत कम किया करते हैं। यह कॉलेजकी शिक्षाका कोई अङ्ग नहीं है और न तो स्कूलोंमें इसे सीख सकते हैं; परन्तु तो भी संसारके सुधारमें तथा इसे भलाई, सभ्यता और सत्यकी ओर अग्रसर करनेमें इस शक्तिका भारी हाथ है। बिना किसी अत्युक्तिके यह भी कहा जा सकता है कि अन्य समस्त वस्तुओंसे, जो उक्त दृष्टिसे कार्य कर रही हैं, यह शक्ति कहीं बढ़-चढ़कर है।

तुम यह जाननेको अधीर हो रहे होगे कि वह कौनसी शक्ति है। उस शक्तिको दुःख, क्लेश, कठिनाई, आपत्ति, विपत्ति आदि कई नामोसे अलंकृत कर सकते हैं। स्यात तुम्हें इसपर हँसी आवे, पर हँसो मत। जरा सोचो और अधिक गम्भीरतापूर्वक विचार करो। उन महान पुरुषोंके

जीवन चरित्रपर दृष्टि डालो, जिन्होने संसारसे बड़े-बड़े सुधार किये हैं जिन्होने कुचल डालनेवाली भयंकर कठिनाइयोंके विरुद्ध विप्लवकारी संग्राम किया है और अपने स्थिर लक्ष्यको प्राप्त करनेके निमित्त अपनी समस्त शक्तियोंका पूर्ण उपयोग किया हैं, तो तुम्हें विदित हो जायगा कि जो कुछ सफलता उनको प्राप्त हुई है उसका अत्यधिक श्रेय उन कठिनाइयो और आपत्तियोको ही प्राप्त है, जो उन्हें अपने जीवनके आरम्भ कालमे भोगनी पड़ी है। कठिनाइयोने ही उनको बलवान्, दृढ़, स्थिर-चित्त तथा सहिष्णु बनाया है।

शारीरिक तथा मानसिक अभ्युत्थानमें दुःख भी बड़े सहायक होते हैं। उद्योग तथा परिश्रम करनेसे ही मनुष्यकी शक्ति बढ़ती है। व्यायामके द्वारा शरीरके पुट्ठे पुष्ट होते हैं और पठन, अध्ययन तथा मनन द्वारा मानसिक शक्तिका विकास होता है। यानी जिस अङ्गका जितनाही अधिक प्रयोग होता है, उसमें उतनी ही अधिक शक्ति बढ़ती है। प्रयोग-रहित होनेसे वह शक्ति-हीन हो जाता है। किसी प्रकारके दुःख या क्लेशके आ पड़नेपर मनुष्य उससे मुक्त होनेकी स्वाभाविक चेष्टा तथा प्रयत्न करता है। उस दशामें वह सोच विचारकर ऐसी युक्तियाँ ढूँढ़ निकालता है जिनका ध्यान पहले उसे कभी स्वप्नमें भी न आया होगा। उन युक्तियोको कार्यका रूप देनेके लिए उसकी गुप्त शक्तियाँ प्रकाशमें आती हैं और कभी-कभी वह स्वयं अपनी अद्भुत शक्तिपर चकित हो जाता है। यदि वह संकटमय स्थितिमें न पड़ जाता, तो बहुत सम्भव था कि उसकी ये शक्तियाँ छिपी ही पड़ी रहतीं और उनका उपयोग करनेका अवसर ही न

मिलता। यदि तुम साधारण समुदायसे उठना चाहते हो, यदि तुम विशेष शक्तिमान तथा योग्य बनना चाहते हो, तो तुम्हे निस्सन्देह विशेष परिश्रम और उद्योग करना पड़ेगा! तुम्हें कठिनाइयोका सामना करना पड़ेगा ! तुम्हें अनेक संकटमय मार्गासे गुजरना पड़ेगा।

संकटोसे साधारणतया लाभ तो होता ही है, परन्तु एक अत्यन्त महत्व-पूर्ण लाभ जो मनुष्यको होता है वह यह है कि उसका हृदय दयालुता-पूर्ण तथा उसके सहानुभूतिके भाव अत्यन्त कोमल और विस्तृत हो जाते हैं। जो पुरुष अथवा स्त्री इहलोक अथवा परलोकमें वास्तविक सत्यताको प्राप्त करना चाहती है, तो यह अत्यावश्यक है कि उसका स्वभाव उदार तथा सहानुभूति-पूर्ण हो। अपने साथियोकी आवश्यकताओ और कठिनाइयोको समझनेकी उसमें पूर्ण योग्यता होनी चाहिए। यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि उसने स्वयं कठिनाइयो और संकटोका सामना कर लिया हो। एक कहावत है "जाके पॉव न फटी बेवाई, सो का जानै पीर पराई?" जिसने खुद तकलीफ उठाई है वही दूसरोके दर्दको समझ सकता है। ऐसी दशामें दुःख और क्लेशका आगमन अत्यन्त महत्व पूर्ण और आवश्यक है। अतएव मित्रो, इसकी शिकायत करना छोड़ दो कि तुम्हें जीवनमें बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं अथवा पड़ रही है। दुःखो-का दृढ़ता-पूर्वक सामना करनेसे और उनपर विजय प्राप्त करने-से ही पुरुष अथवा स्त्रीकी शक्ति बढ़ती है। जिसने जीवनमें संकटोका मुकाबिला नहीं किया, उसे अनेक अंशोमें अपूर्ण ही समझना चाहिए। उसमें मानसिक तथा शारीरिक निर्बलता भरी पड़ी है और वह वयस्क होते हुए भी बालक ही है।

क्या तुम इस समय कष्टपीड़ित हो ? अथवा क्या तुम भारी दुःख भोग चुके हो ? यदि हाँ, तो समझ लो कि तुम्हारा दुःख, तुम्हारा शत्रु होकर नहीं आया था और न अब शत्रु है यह तुम्हारा परम हितैषी मित्र है, जिसकी नेकी और भलाई तुमको आश्चर्य्यमें डाल सकती है। परन्तु यदि इस दुःखसे तुम्हारे नेत्र नहीं खुले, संसारकी, ओरसे तुम्हारे विचारोंमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ, तुम्हारी अहम्मन्यता और तुम्हारे अहंकारमें अल्पमात्र भी न्यूनता नहीं हुई, तुम्हारे आचरणमें अधिक दृढ़ता, बल, उदारता और सहानुभूति नहीं आई, तुम्हारी बुद्धिका कुछ भी विकाश नहीं हुआ। और तुमने इस कष्टसे जीवनका एक भी नया पाठ नहीं पढ़ा, तो निस्सन्देह यही कहना पड़ेगा कि इस आपत्तिका आना तुम्हारे लिए व्यर्थही हुआ।

यदि सकटमय स्थितिने तुम्हें किसी उच्चतर विषयका ज्ञान नहीं कराया अथवा यो कहिए कि यदि तुमने अपनी पीडितावस्थामें कोई नवीन, उच्च अनुभव नहीं प्राप्त किया, तो इसका अर्थ यही है कि उस कष्टके ऊपर तुम्हारा अधिकार नहीं रहा ? प्रत्युत कष्टने ही तुम्हारे ऊपर अपना अधिकार जमाया। यह तो निश्चय है कि कोई कष्ट और दुःखसे बिलकुल बच नहीं सकता। देर या अवेर, यह सभीके ऊपर आता ही है। और अच्छा है कि यह आता है। परन्तु जब यह आ पड़ता है, तो तुम इसे अपनेको सर्वथा पद-दलित न करने दो, इसके तले कुचल न जाओ। यानी दुःख पड़नेपर तुम हतोत्साह तथा निराश न हो जाओ, बल्कि यह जाननेका प्रयत्न करो कि यह कष्ट तुम्हारे ऊपर क्यो आ पड़ा है। तुमने अवश्य किसी ईश्वरीय

नियमका उल्लंघन किया है। अपने अन्तःकरणमें तलाश करो, निष्पक्ष होकर खोजो कि कौनसी त्रुटि तुमने की है, जिसका दण्ड तुम्हें भोगना पड़ रहा है। साथ ही इस बातका भी अनुभव करो कि यही कष्ट यदि किसी अन्य व्यक्तिपर पड़ जाय तो वह भी तुम्हारी ही तरह दुःखी और कातर होगा। जिस प्रकार तुम सहायताके इच्छुक हो रहे हो उसी प्रकार वह भी तुम्हारी सहायता और सहानुभूतिका पात्र होगा। इन विचारोंको हृदयमें लाओ; और ईश्वरपर भरोसा करके यह आशा रखो कि वह अवश्य तुम्हें इस दुःखसे मुक्त करेगा। इस प्रकार साहस, विचार और धैर्य-पूर्वक कष्टका सामना करो और इससे मुक्त होनेपर ईश्वरीय नियमोंके पालन करनेका दृढ़ संकल्प करो। सच्चे मनुष्यकी तरह, सच्चे वीरकी तरह आए हुए कष्टोंपर अपना प्रभुत्व जमाओ। उनकेही वशीभूत न हो जाओ।

यदि तुम्हारी विपत्ति भयंकर है, दुःख असह्य है, तो घबड़ाओ नहीं। ऐसे समयमें घबड़ानेसे दुःखका प्रभाव और बढ़ जाता है और अधिक कष्ट होता है। इस अवस्थामें तुम्हें उचित है कि धैर्य्यका आश्रय लो, "धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपतकाल परीखिय चारी॥" आपत्तिमें धैर्यसे बढ़कर कोई सहारा नहीं। तुम्हारी विपत्ति चिरस्थायी नहीं है। जिसका आदि है, उसका अन्त भी अवश्य है। यह समाप्त अवश्य होगी। इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु प्रश्न यह है कि इसका प्रभाव तुम्हारे हृदयपर कैसा पड़ेगा। तम्हें यह नित्य स्मरण रखना चाहिए कि उन्नत स्थानपर पहुँचनेके लिए संकट सीढ़ीका काम देता है। ऊपर चढ़नेके लिए इस सीढ़ीपर पाँव रखना पड़ेगा।

तुम यह विचार करो, अपने मनमें प्रश्न करो कि—"क्या यह विपत्ति मेरा सत्यानाश कर देगी अथवा मैं ही अधिक बलवान् और चरित्रवान् बनकर इसे मटियामेट कर दूँगा ?" तुम विश्वास रखो कि बड़ीसे बड़ी शक्ति तुम्हारे भीतर उपस्थित है और तुम उसके द्वारा भयंकरसे भयंकर आपत्तिका सफलता-पूर्वक सामना कर सकते हो। दृढ़ निश्चय रखो कि आपत्तियाँ तुम्हें कुचल नहीं सकतीं, यदि तुम उनके वास्तविकरूपको समझ लेनेका प्रयत्न करोगे। इनका आगमन तुम्हें सफलताके उच्च शिखरपर आसीन करनेके लिए हुआ है, तुम्हें सच्चे मनुष्यत्वकी शिक्षा देनेके लिए हुआ है। आँखें खोलो। सहर्ष इनका स्वागत करो और बल तथा धैर्य्य पूर्वक इनका सामना करके अधिक बलवान, शक्तिवान्, बुद्धिमान्, दयालु, चरित्रवान् और उदार बनो। यही ईश्वरीय आज्ञा है।

# अठारहवाँ अध्याय

## धन-लिप्सा

1 Some have too much, yet still they crave,
I little have yet seek no more
They are but poor, though much they have,
And I am rich with little store.
They poor, I rich, they beg, I give
They lack, I lend, they pine, I live,
Sir, Edward Dyer.

2. The fewer our wants, the nearer we resemble gods.
Socrates

3 Poor and content is rich and rich enough
Shakespeare

'डीजेनरेशन' (Degeneration) के रचयिता मैक्सनार्डो (Max Nardau) का कथन है कि:—"संसारमे किसी व्यवसायसे इतना कम लाभ नहीं होता जितना लाखोका पीछा करनेसे।" अर्थात् लक्षाधीश वननेकी चेष्टासे प्रेरित होकर मनुष्य अस्थिर-चित्त होजाता है और अस्थिर चित्तसे जो कुछ भी कार्य किया जायगा वह असफल और असम्बद्ध होगा। इसके विपरीत दृढ़ चित्त और स्थिर वुद्धि द्वारा जो कार्य किया जायगा वह सफल और लाभप्रद होगा। इसमें सन्देह नहीं कि उक्त कथनमें वहुत कुछ सत्यताका

अंश है। लखपती बननेकी इच्छा लगभग प्रत्येक व्यवसायी-के हृदयमें स्वभावतः होती है। यह इच्छा उसके अन्तःकरणमें बालकपनसेही जमाई जाती है और स्कूल तथा व्यवसायी संसारमें भी उसकी यही इच्छा पुष्ट और बलवती बनती जाती है। परन्तु विचारणीय यह है कि उनकी इस इच्छाका परिणाम क्या होता है। कितने लखपती बन जाते हैं, कितने नहीं बनते। उनके स्वास्थ्य, बुद्धि तथा अन्तरात्मापर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

मेरा खयाल है कि इन पंक्तियोंके पाठकके हृदयमें कभी न कभी यह भावना अवश्य उत्पन्न हुई होगी कि मै अधिक द्रव्यवान बनूँ। तुम थोड़ी देर रुककर उस स्थितिका ध्यान कर लो जब कि तुम्हारे मनमें यह इच्छा उत्पन्न हुई थी। तुम्हें स्मरण हो जायगा कि इस इच्छाके अविर्भूत होते ही तुम कैसे विकल हो जाते हो, तुम्हारी चिन्ता कैसी बढ़ जाती है और तुम्हारे अन्तर्गत भावोंमें कितना उथल-पुथल मच जाता है। तुम्हारी शान्ति भङ्ग होती है और चंचलता बढ़जाती है। फल-स्वरूप तुम धन-प्राप्तिके साधनोंका चिन्तन करना आरम्भ करते हो। यदि तुम्हारे विचार शुद्ध और परिष्कृत नहीं हैं, यदि तुमने सत्यता, ईमानदारी आदि ईश्वरीय नियमोंके महत्वको भली भाँति नहीं समझा है-जैसा कि अधिकांश मनुष्योंके विषयमें पाया जाता है, तो बहुत सम्भव है कि तुम कुत्सित, कलुषित और अमानुषी विचारोंके शिकार होकर वर्ज्य साधनोंका अवलम्बन करो। क्योंकि मनुष्य स्वभावतः कषायोंकी ओर अधिक अग्रसर होता है। फिर बहुत कुछ सोच-विचार करनेके उपरान्त जब तुम्हें किसी साध्य युक्तिका मिलना कठिन हो जाता है

अथवा युक्तिके अवलम्बन करनेपर असफलता होती है, तो तुम्हारे नैराश्य, हतोत्साह और क्लान्तचित्तताका पारावार नहीं होता। तुम्हें जीवन तुच्छ मालूम होने लगता है और तुम मृत्युका आवाहन करनेमें भी सकोच नहीं करते। फल यह होता है कि तुम्हारा दिल कमजोर होने लगता है, स्वास्थ्य खराब होने लगता है और बुद्धि भ्रामक हो जाती है। धन-शोकमें कितनोका मरजाना भी सुना गया है।

धन-विषयक चिन्ताका इतना भयंकर परिणाम होता है। यह तो बिलकुल निश्चित है कि केवल धन-वृद्धिकी चिन्ता करनेवाले तथा उसके निमित्त अपनी सारी शक्तियोका प्रयोग करनेवाले नितान्त संकुचितबुद्धि और संकीर्ण आत्मावाले हो जाते हैं। रुपये-पैसेके अतिरिक्त अन्य किसी विषयको वे अपने हृदय और मस्तिष्कमे स्थान नहीं दे सकते। बाज-बाजकी धन-लिप्सा यहाँ तक बढ़ जाती है कि वे अपने साधारण आरामके लिए भी खर्च करना सिद्धान्तके विरुद्ध समझते हैं। एक-एक पाईको वे अपना जीवन समझते है। क्या ऐसे जीवोको हम मनुष्यकी श्रेणीमें स्थान दे सकते है? क्या वे स्वप्नमे भी सच्चे मनुष्य बनने-का दावा कर सकते हैं? मनुष्यत्वको जिसने समझा ही नहीं, उसे भला मनुष्य कैसे कहा जा सकता है? जिसके जीवनका लक्ष्य एकमात्र रुपया है, जिसने मनुष्योचित समस्त गुणो-को खो दिया है, जिसने अपने अमूल्य जीवनको फूटी कौड़ियो पर बेच दिया है वह निस्सन्देह मनुष्यतासे हीन है। सर्वथा पतित है, मानवशरीर पाते हुए भी पशु है।

इतना ही नहीं इस धन, रुपये-पैसेके कारण और भी अनेक अनर्थ होते है। कितनेही जीव ऐसे है जो लाखोके

अधिपति बने बैठे हैं। उनकी आय भी इतनी है कि उन्हें अधिक चिन्ता और परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं। उनकी क्या दशा होती है, यह भी देखने ही लायक है। मेरा तो यह खयाल है कि इनकी वास्तविक दशाको जानकर तुम कदापि धनी बननेकी इच्छा न करोगे। ऐसे जीवोंमें से किसी एकके पास जाओ, तो तुम्हें अधिकतर वह दो ही स्थितिमें मिलेगा। या तो वह खूब मोटा-ताजा गुब्बारेकी तरह फूला हुआ किसी मसनदके सहारे बैठा होगा, जिसे देखकर तुम्हें हवा भरे हुए फुटबॉलका स्मरण हो आवेगा या वह बिलकुल दुबला-पतला, कमजोर, पीला, धँसी हुई आँखें और मुर्दनी सूरतवाला मिलेगा। पहलेके विषयमें शायद् तुम्हें कुछ भ्रम हो कि यह अच्छा तन्दुरुस्त और मस्तजीव है। परन्तु इस धोखेमें न पड़ो। वह बेचारा दस पग भी चलनेमें असमर्थ है। थोड़ी दूर चलनेमें भी उसकी सांस फूलने लगती है। कोई मेहनतका काम तो वह करही नहीं सकता। बड़ी कठिनाईसे वह अपने नित्य कर्म कर पाता है। यदि उससे बात करो तो वह अपने जीवनपर बड़ा शोक प्रकट करेगा और इसको बिलकुल तुच्छ और सार-हीन बतलाएगा। उसकी बातें सुनकर तुम्हें दुःख होगा और तुम उसकी हालतपर रहम खाओगे। दूसरेके विषयमें क्या कहना है! उसे तो तुम देखते ही समझ जाओगे कि इसकी क्या दशा है। उससे भी बात-चीत करने पर तुम्हें निराशाभरी बातें सुननेमें आवेंगी। यह तुम्हें जान लेना चाहिए कि उसके रुपयेका उपयोग शराब, कबाब, वेश्यागमन और व्यभिचारमे ही होता है। दूसरे शब्दोंमें यह समझ लो कि रुपयेने ही उसको इस मार्गका अवलम्बन करनेमें बड़ी सहायता पहुँचाई है। उसका जीवन पापमय

और इसलिए सर्वथा दुःखमय है। क्या तुम भी उसीकी तरह होना चाहते हो? क्या तुम्हारी इच्छा व्यभिचारियोंमें नाम लिखानेकी है? यदि नहीं, तो धनके पीछे मरना छोड़ दो। धनकी विभूतियोंको भूलजाओ। मध्यम मार्गका अवलम्बन करो। उतना ही प्राप्त करनेकी इच्छा करो जितना तुम अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए उचित समझते हो और अपनी आवश्यकताओंको भी यथा सम्भव न्यून और नियन्त्रित बनाओ। परिश्रम करो और लोभको छोड़ो। ईश्वरीय नियमों का पालन करो।

# उन्नीसवाँ अध्याय
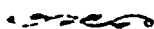
## आर्थिक स्वतन्त्रता

1. That man is but of the lower part of the world that is not brought up to business and affairs

Owen Felthem.

2 Every youth should be made to feel that his happiness and well-doing in life must necessarily rely mainly on himself and the exercise of his own energies, rather than upon the help and patronage of others

Samuel Smiles.

सपरिवार रहनेवाले मनुष्यकी प्रायः यह एक बलवती इच्छा होती है कि वह अपनी सन्तानको आर्थिक दृष्टिसे भरा-पूरा और स्वतन्त्र रखे। इस निमित्त वह दिन प्रतिदिन घोर परिश्रम भी करता है। स्वयं तो वह कठिन परिश्रम करता है। बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंका सामना करता है, विकट परिस्थितियोंमें खूब संघर्ष करता है, अनेक प्रकारके मानसिक तथा शारीरिक कष्ट उठाता है; परन्तु अपनी सन्तानको वह कदापि अपनी जैसी स्थितिमें नहीं देखना चाहता। वह हरगिज यह बात पसंन्द नहीं करता कि जीवन-निर्वाहके लिए उसके बाल-बच्चोंको किसी प्रकारका परिश्रम अथवा कष्ट उठाना पड़े। वह तो यही सोचता और चाहता है कि—"हमारे बाल-बच्चे इन झंझटोंसे सर्वथा मुक्त रहें। जीवनका आनन्द उठाएँ। मैं उनको सर्वथा सुखी छोड़ जाऊँ।"

कैसी मूर्खता है! उसकी समझमें आर्थिक स्वतन्त्रता केवल थोड़ेसे रुपये एकत्र कर लेनेसेही हो जाती है। स्वयं उसको तो आर्थिक स्वतन्त्रता कठिन परिश्रम करनेसे प्राप्त होती है; परन्तु अपने लड़कोको वह मुफ्त ही स्वतन्त्र देखनेकी अभिलाषा रखता है। उसके विचारमें छोटे बच्चे भी उसके समान ही योग्यता और अनुभव रखते हैं जिसे उसने बड़ी कठिनाइयाँ और मुसीबतें झेलकर प्राप्त किया है। और इस लिए वह यह समझता है कि अधिक द्रव्य कमाकर उनके लिए छोड जानेसे वे सदा आर्थिक दृष्टिसे सम्पन्न और स्वतन्त्र रहेंगे। परन्तु ऐसा सोचना उसकी नितान्त भूल है उसका भारी भ्रम है।

केवल द्रव्यसे कभी भी स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त होसकती। सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना उसी अवस्थामें सम्भव है जब कि प्रत्येक व्यक्तिकी वे समस्त शक्तियाँ समुन्नत और वृद्धिगत होजाती हैं, जिनकी इस कार्य्यशील जगतमें बडी अवश्यकता है और जिनका उचित मूल्य देनेमें संसार आनाकानी नहीं करता। आर्थिक स्वतन्त्रता प्रदान करनेके लिए यह परमावश्यक है कि प्रत्येक बालक और बालिकाको किसी प्रकारके व्यवसायकी शिक्षा दिलाई जाय, जिसके द्वारा अपना पालन-पोषण करनेकी योग्यता उसको प्राप्त होजाय। अपना जीवन-निर्वाह स्वयंही करलेनेकी क्षमताको ही आर्थिक स्वतन्त्रता कहते हैं।

थोड़े दिनोकी बात है। किसी समाचारपत्रका एक सम्वाददाता किसी लखपतिके पास गया। उसे तो अपने अखबारके लिए कुछ मसाला इकट्ठा करनाही था। दोनोंमें बातचीत आरम्भ हुई और थोड़ीही देरमें एक ऐसा विषय

छिड़गया, जिसमें दोनोको समान दिलचस्पी थी। लगभग बीस मिनटतक इस विषयपर वार्तालाप हुआ और दूसरा विषय आरम्भ होनेके पूर्व लक्षाधीश महोदयने कहाः—

"बुद्धि तथा समझके विचारसे बाल्यावस्थामें यदि मुझे किसी चीजकी आवश्यकता थी तो मैं समझता हूँ कि मैंने उसे बहुत अंशोंमें पा लिया था। किसी वस्तुके मूल्यका क्या अर्थ होसकता है, यह मैं जानताही न था। यदि मैं कोई खरीद भी करता तो उसके मूल्यकी ओर कुछ दृष्टि नहीं देता था। अगर मैं कुछ समझता था तो वह केवल यही था कि जिस वस्तुकी आवश्यकता हुई, तुरन्त रुपया फेंका और उसे खरीद लिया।"

"मेरे कॉलेजके दिन नितान्त विलासतापूर्ण थे। अब वे दिन मुझे स्वप्नसे होगए। उस समय प्रसन्नताके हेतु जिन चीजोंकी मुझे आवश्यकता हुआ करती थी, उसका स्मरण आनेपर अब मुझे हँसी आती है। द्रव्य तो मानों कोई चीज ही न थी। मेरे पिता मेरे बिलोका दाम बिना किसी कष्ट और हिचकिचाहटके चुका देते थे, बल्कि वह इस प्रतीक्षामें रहा करते थे कि मैं फिर रुपयेके लिए कब याचना करूँगा।"

"परन्तु इन सब बातोंसे तुम यह नहीं समझ सकते कि मेरे पिता कोई मूर्ख और बेवकूफ थे। उन्होंने उस समय तक मेरे समस्त उचित आवश्यकताओंकी पूर्ति की, जब तक कि मैंने सांसारिक जीवनका आरम्भ नहीं किया। जब मैं कॉलेज की शिक्षा प्राप्तकर कुछ काल तक विश्राम कर चुका, तो उन्होंने तुरन्तही मुझे दफ्तरमें एक क्लर्कका पद दे दिया।"

"अन्य क्लर्कोंके साथ मेरा बिलकुल बराबरीका दर्जा था। कुछ भी विशेषता न थी। मैं ५०) मासिक वेतन पाता था। घरपर तो मैं था ही, इसलिए उसके लिए मुझे कोई खर्च नहीं

करना पड़ता था। परन्तु अन्य समस्त आवश्यकताओंकी पूर्ति मुझे उसी ५०) में करनी पड़ती थी। आयका और कोई मार्ग मेरे लिए न था, और न तो महीना समाप्त होनेसे पूर्व मैं एक पैसा पेशगी ले सकता था। जब मैंने यह कहा कि मुझे और रुपयोकी आवश्यकता है तो पिताजीने स्पष्ट उत्तर दिया कि "अपनेको अधिक वेतनके योग्य बनाओ।"

"बस इन्हीं शब्दोंमें मेरे लिए सर्वस्व था। तबसे मैं रुपयेका मूल्य समझने लगा। इसमें सन्देह नहीं कि यदि मैं चाहता, तो हजारों रुपये मुझे ऋणमें मिलजाते। ऐसे अनेक व्यक्ति थे, जो मुझे अधिकसे अधिक रुपया ऋणके रूपमें देनेको प्रस्तुत और उत्सुक थे। परन्तु मेरे पिताका स्पष्ट और कड़ा निर्देश था कि आयसे अधिक व्यय न करो और इस आज्ञाकी अवहेलना करनेपर मेरे लिए दण्ड भी नियत था।"

"धीरे-धीरे मेरा वेतन बढ़ता गया, और कदाचित तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा कि थोड़ेही समयमें मेरी आवश्यकताएँ मेरी आयसे आपही कम हो गईं। मैंने यह सीख लिया कि कितनी ऐसी वस्तुएँ हैं जिनके विना मेरा कार्य रुक नहीं सकता। मुझे यह ज्ञात होगया कि जिस वस्तुकी मुझे आवश्यकता है उसका क्या मूल्य देना चाहिए। इस प्रकार अनावश्यक इच्छाओंके दमन करने और अमितव्ययिताका तिरस्कार करनेमें मैं समर्थ होसका।"

मानलो कि कोई चतुर और समझदार व्यक्ति अपने बाल-बच्चोंके लिए पचीस-पचास हजार या लाख-दोलाख रुपये छोड़ जाता है, तो इन रुपयोंसे उन बच्चोंका कितने दिन खर्च चल सकता है? कभी न कभी तो ये समाप्त हो ही जायँगे। जब उन बालकोंमें कार्यशीलता नहीं है, जब उनके पास कोई

गुण नहीं है जिससे कुछ पैदा कर सकते हो, तो फिर उन रुपयोके समाप्त होनेपर उनकी क्या दशा होगी? उस समय उनकी पूर्व-चिन्तित आर्थिक स्वतन्त्रता कहाँसे आवेगी।? तब तो उनकी हालत एक मामूली मजदूरसे भी खराब होजायगी। उनको भूखो मरना पड़ेगा। इस प्रकारके उदाहरण अक्सर देखनेमें आते हैं कि प्रेमके वशीभूत होकर पिता जानसे धन संग्रह करनेके हेतु परिश्रम करता है और कभी-कभी वह अकालमृत्युका भी शिकार होता है और फिर थोडे ही दिनोंमें उसकी सन्तान उसके सङ्ग्रहीत द्रव्यको उड़ा-पड़ा कर फाकेमस्त होजाती है। पिता तो यह विचार करता है कि मेरी सन्तान सुखी और सम्पन्न रहेगी, पर परिणाम इसके विपरीतही होता है। यह उसकी समझका फेर है। यदि वह उसी रुपयेका व्ययकर अपने लडकोको किसी अच्छे व्यवसायकी शिक्षा दिला देता, तो अपनी मृत्युके पीछे वह लडकेके लिए ऐसी चीज, ऐसा धन छोड जाता जिससे सन्तान आजीवन सुख तथा आनन्दका भोग करती।

मैं इस देशके समस्त बुद्धिमान, परिश्रमी तथा पुण्यात्मा मनुष्योंसे बलपूर्वक अनुरोध करता हूं कि वे अपनी सन्तानके व्यर्थ व्यय करनेके लिए धन-संग्रह करनेका विचार छोड़ दें। नहीं तो वे स्वयं अपने जीवनमें वास्तविक आनन्दका उपभोग न करते हुए अपने बाल-बच्चोंके लिए भी वैसीही स्थिति उत्पन्न करेंगे। सर्व प्रथम उनका मुख्य कर्तव्य, यह है कि संतान को खूब स्वस्थ, बलवान्, शक्तिवान्, हृष्ट-पुष्ट तथा विद्वान् बनानेकी चेष्टा करें। इसके उपरान्त उनके इच्छानुसार उन्हें किसी व्यवसायकी शिक्षा दें, जिससे आवश्यकता पडने पर वे अपना निर्वाह स्वयं करनेमें समर्थ हो सके।

# बीसवाँ अध्याय

## चलता पुर्जा

1 The things that destroy us are injustice, insolence and fooish thoughts The things that save us are justice, self-control and true thoughts

Ruskin.

2 The ' sharp ' man is not a success.

B. Macfadden.

3 I know of no great men except those who have rendered great servises to the human race

Voltair.

अक्सर किसी व्यक्तिके बारेमें यह सुननेमें आता है और लोग कभी-कभी बड़ी श्रद्धा और बड़े सम्मानके साथ इसे कहा करते हैं कि:—"अमुक व्यक्ति बड़ा तेज और चलता-पुर्जा है। जल्दी उसकी कोई समानता नहीं कर सकता। वह फौलादकी भाँति तीक्ष्ण है और यदि उसके साथी कभी उससे आगे बढ़नेका प्रयत्न करते हैं, तो उन्हें हार मानकर अन्तमें पछताना पड़ता है।" तुम्हारे इस चलते-पुर्जे मनुष्यको कतिपय दुर्बल बुद्धिवाले जीव तो नरदेव ही समझते हैं, परन्तु साथ ही उसके पंजेमें जल्दी वे आते भी नहीं।

नौकर रखनेवाले लोग, जो विचारसे कम काम लेते हैं, ऐसे तेज मनुष्यकी अधिक प्रशंसा करते हैं और उसे नौकर रख भी लेते हैं। उनको यह धारणा है कि जिस कार्यपर यह रहेगा उसमें उनके प्रतिस्पर्धी उनसे आगे नहीं बढ़ सकने।

उसकी प्रशंसा करते हुए वे यह भी कह डालते हैं किः—"यदि कोई उसके विरुद्ध चाल चलता है, तो उसका उत्तर वह तुरन्त और बड़ी बुद्धिमानीसे देता है। हमारे प्रतिद्वन्द्वियोंके साथ कई बार ऐसा अवसर आया है और हर बार उनको मुँहकी खानी पड़ी है। यही कारण है कि वे उसे पीठ पीछे गाली भी दिया करते हैं।"

ऐसे मनुष्यको, जिसकी चर्चा अभी ऊपरकी गई है, जीवनमें कभी सफलता प्राप्त नहीं होती। कारण साफ है कि ऐसे व्यक्तिके लिए जीवनके कोषमें सफलता है ही नहीं। प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य ऐसे चलते-पुर्जे और तेज कहे जाने-वाले व्यक्तिके सदा विरुद्ध रहते है। यदि उससे कभी काम पड़ जाता है और इसका पता चल जाता है कि यह अपनेको बड़ा चलता-पुर्जा लगाता है, तो बुद्धिमान् मनुष्य शीघ्रही उसे निकाल बाहर करता है। चलते-पुर्जे मनुष्यको दूसरे शब्दोंमें धूर्त और वञ्चक भी कहते है। वास्तवमें यह स्वयं बुद्धिमान् नहीं होता, क्योंकि बुद्धिमान् होनेपर वह चलता-पुर्जा और धूर्त हो ही नहीं सकता।

तुम किसी चलते-पुर्जे आदमीको उदाहरणके लिए लो और यह निश्चय कर लो कि वास्तवमें यह इसी नमूनेका आदमी है। अब तुम यह देखो कि यह व्यक्ति जिन-जिन लोगो-से मिलता-जुलता है, वे लोग इसके सम्पर्कमे आना पसन्द करते हैं या नहीं। तुम्हें ज्ञात होगा कि लोग इससे बड़ी घृणा करते हैं और इसे नीच दृष्टिसे देखते है। तो फिर इससे घृणा करनेका क्या कारण हो सकता है। कारण यही है कि उसके साथ व्यवहार रखनेमें लोगोको सदा बड़ी सावधानी और चैतन्यतासे काम लेना पड़ता है। यदि

इसमें जरा भी त्रुटि करें तो उनको धोखा खाना पड़ जाय। जो निर्बल और भीरु है, वे तो इससे, बहुत डरा करते हैं। बलवान् और बुद्धिमान् पुरुष इससे कोई काम ही नहीं लेते। क्योंकि वे यह जानते हैं कि इसके कार्यके निरीक्षण करने और देख-भाल करनेमें शक्ति और समयको व्यर्थ बरबाद करना पड़ता है और सदा धोखा खानेकी आशंका बनी रहती है।

क्या धूर्तका कोई आदर-मान भी करता है? नहीं, धूर्तको सम्मानकी आशा स्वप्नमें भी नहीं करनी चाहिए। संसारमें आदर सम्मान है सत्यता, गम्भीरता, बुद्धिमत्ता आदिके लिए, न कि धूर्तताके लिए। जिसे सब लोग हेय दृष्टिसे देखते हैं, जिसके प्रति सबके हृदयमें स्वाभाविक घृणा उत्पन्न होती है, वह आदर और मानकी आशा कैसे कर सकता है? कुछ ऐसे मूर्ख भी हैं-जो चलते-पुर्जों और वंचकोको आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। परन्तु इसका कारण उनका अज्ञान है। सफल संसारमें मूर्खोंकी गणना ही क्या है? इसे तुम निश्चित और अचल सिद्धान्त समझ लो कि जिस मनुष्यका अपने मिलने-वालोंमें आदर नहीं है, उसे सफलता कदापि नहीं प्राप्त हो सकती। यह एक तथ्य है और इसके विरुद्ध तुम कुछ भी नहीं कह सकते। सफलताके लिए यह अत्यावश्यक है कि तुम्हारे परिचित व्यक्ति तुम्हें श्रद्धा, विश्वास और सम्मान-की दृष्टिसे देखें। उनके आदरका पात्र बनना तुम्हारा प्रधान कर्त्तव्य है।

यदि तुम व्यवसायीहो, कोई व्यवसाय करते हो, तो तुमको ऐसे चलते-पुर्जे लोगोंसे बहुत सावधान रहना चाहिए। ऐसे मनुष्यको तुम कदापि अपना एजेन्ट अथवा प्रतिनिधि न बनाना। क्योंकि सच्चा और विश्वासी बनना जितना

तुम्हारे लिए आवश्यक है, उतना ही तुम्हारे प्रतिनिधि और एजेण्टके लिए भी। नहीं तो तुम्हारे व्यवसायको भारी धक्का लगनेकी आशङ्का रहेगी।

प्रसिद्ध तत्वज्ञ एलवर्ट हबर्ड ( Elbert Hubbasd ) ने सत्य कहा है किः—" एक छटाँक भक्ति एकमन धूर्ततासे संसारकी उन्नति नहीं होती। चातुर्य्यसे समाजका वास्तविक हित नहीं हो सकता। एक चतुर मनुष्यकी शक्तियोंका उपयोग दूसरे चतुर मनुष्यसे अपनी रक्षा करनेमेंहो होता है। और शनैः-शनैःउसकी चतुरता और चपलताका इतना शोर मच जाता है कि लोग उसे अविश्वासकी दृष्टिसे देखने लगते हैं। ऐसे चतुर मनुष्य प्रत्येक जातिमें पाये जाते हैं।"

चलते-पुर्जे लोग अधिकांशमें वड़े नीच और कपटी हुआ करते हैं। वुद्धिमत्ता उनमें इतनीही होती है कि दूसरेसे धोखा खानेके प्रथम उसीको धोखे में डालनेका प्रयत्न करते हैं। किसी-किसीका तर्ज और ढङ्ग प्रभाव डालनेवाला होता है और वह वाह्यरूपसे सच्चा भी प्रतीत होता है। परन्तु वह चलता-पुर्जा वननेका जो प्रयत्न करता है, उसीसे स्पष्ट प्रकट है कि उसमें वास्तविक वुद्धिमत्ता नहीं है। सम्भव है कि शास्त्रीय नियमोंके अनुसार वह सदाचारी और ईमानदार भी प्रतीत होता हो, परन्तु ज्योंही तुम्हें यह ज्ञात होता है कि यह वड़ा चलता-पुर्जा है, तुम उससे प्रत्येक प्रकारसे सम्वन्ध-विच्छेद करनेको वाध्य हो जाते हो।

एक छोटेसे उदाहरणसे वात साफ़ हो जायगी। तुम जीवनमें सफलता प्राप्त करना चाहते हो। तुमने जो इसके निमित्त कार्य्यक्रम निर्धारित किया है उसमें यह वात नहीं रखी है कि तुम अकारण गोली खाकर अपना प्राण दोगे।

ऐसी दशामें जब तुम यह जानते हो कि अमुक व्यक्तिको किसी जीवपर, जो उसके अधिकारान्तर्गत भूमिमें होकर गुजरता है, गोली चलानेका बड़ा शौक है, तो तुम उससे तथा उसकी भूमिसे सर्वथा दूर रहनेका प्रयत्न करोगे। ठीक इसी प्रकार चलता-पुर्जा आदमी भी बड़ा भयानक और सफलताके मार्गमें बाधक है। वह किसीके साथ छल-कपट और असत्यका व्यवहार करनेमें नहीं चूकता। अतः उससे सदा दूर रहनाही ठीक है। उसका सम्पर्क अत्यन्त अहितकर है, अतएव सर्वथा त्याज्य है।

चतुरता ( चलता-पुर्जा होना ) और मूर्खता दोनों ही सफलताके लिए अहितकर हैं। वास्तविक सत्य सदा इन दोनोंके मध्यमें रहता है। इसका यह अर्थ न समझना कि आधा मूर्ख और आधा चतुर होना चाहिए। वल्कि इन दोनो-को सर्वथा त्याग कर वास्तविक बुद्धिमत्ता प्राप्त करना चाहिए। सफलता उसीको प्राप्त होती है जिसका व्यवहार प्रत्येकके साथ सत्यता, ईमानदारी और सुजनताका होता है। सफलता सत्यकी चेरी है। उस व्यक्तिको सबसे अधिक सफल समझो जिससे लोग सत्यके सिवा अन्य किसी बात की आशाही नहीं करते। तुम्हें इस तथ्यकी वास्तविकताको स्वीकार करना चाहिए कि समाजका सच्चा हित सदा एक दूसरेके साथ सद्व्यवहार करनेसेही हो सकता है। प्रत्येक व्यवसायका मूल सिद्धान्त यह है कि सब किसीको, जिसका उससे सम्बन्ध है, सन्तोष-जनक लाभ हो।

चलते-पुर्जे मनुष्यके कृत्योसे जो हानि होती है, वह सब यदि उसीको उठानी पड़ती, तो वह जैसा जी चाहे वैसा करता। उससे हम सब लोगोंका कोई सम्बन्ध नहीं था।

परन्तु उसके दुष्कृत्योंसे और लोगोंको कष्ट और हानि उठानी पड़ती है। इसलिए सदा उससे बचते रहनेकी कोशिश करना उत्तम है। उसका अवश्य, बहिष्कार करना ही ठीक है।

बड़े मार्केकी बात एक यह है कि चलता-पुर्जा जिसे कहते हैं, उसे ऐसा बननेमें भी बड़ा समय लगता है। इसकी एक विद्याही अलग है। जो सचमुच चलता-पुर्जा है उसे अपने जीवनमें अन्य बातोंके सीखनेका अवसर ही नहीं मिलता। उसका समस्त समय दूसरोंसे लाभ उठानेकी युक्ति सोचनेमें ही प्रयुक्त होता है। ऐसे लोग सच्चे लाभके लिए कार्य्य करनेमें जरा भी विश्वास नहीं करते। हालाँ कि कलुषित और बुरी आदतोंके सीखनेमें जितना समय उन्होंने नष्ट किया है, उससे अल्प ही समयमें वे अनेक अच्छे गुणोंका ज्ञान प्राप्त कर सकते थे, जिससे वे अपना जीवन सत्यता और ईमान-दारीके साथ बिता सकते। परन्तु कुमार्गमें जो उन्हें एका-ध बार सफलता मिल जाती है, उससे वे अच्छे कार्य्योंके सर्वथा अयोग्य हो जाते हैं और उस ओर उनकी तबियत नहीं लगती। छल, धूर्तता, कपट और धोखाबाजी करना ही उसका पेशा बन जाता है और सच्चे, भलेमानस तथा धर्मशील मनुष्योंके वे शत्रु बनजाते हैं।

पाठकोंसे यह कहनेकी तो कोई आवश्यकताही नहीं कि वे धूर्त्तों और चालबाजोंसे सावधान रहें, परन्तु यह मैं एक बार नहीं हजार बार कहूँगा कि वे स्वयं कपटी और धूर्त बननेसे बचें। चलते-पुर्जे मनुष्यको यदि कुछ सफलता प्राप्त भी होती है, तो वह नितान्त अस्थायी होती है। सबसे बड़ी और महत्वकी बात यह है कि इस प्रकारका मनुष्य बनने-

मे तुम जिन-जिन आदतोका संग्रह करते हो और जो आच-रण प्रयोगमे लाते हो, वे सब तुम्हारे जीवनकी वास्तविकता और सत्यताको सर्वथा नष्ट कर देते है। ज्योंही तुम चलता-पुर्जा और धूर्त बननेकी चेष्टामें प्रवृत्त होते हो, त्योंही तुम्हारी ईमानदारी, सत्यता और तुम्हारे सम्मानके उच्च आदर्शका पतन होने लगता है। यदि तुम्हारे जीवनका उद्देश्य उत्कृष्ट नहीं है, यदि तुम सदा निकृष्ट और दूषित कार्य्योंकी ही चिन्ता किया करते हो, तो तुम्हारे जो कुछ भी आचरण होगे उनसे सन्तोषजनक प्रसन्नताकी आशा करना व्यर्थ है। यदि सफलता प्राप्त करना तुम्हारे जीवनका लक्ष्य है, तो सत्यपथ-का अनुसरण करो। छल-कपट, धूर्तता-चालबाजी, असत्यता और चलता-पुर्जापनसे बहुत दूर रहो।

# इक्कीसवाँ अध्याय

## परिश्रम

1. Let us then be up and doing
   With a heart for any fate,
   Still achieving; still pursuing
   Learn to labour and to wait.

H. W. Longfellow.

2. Oh, there is a good in labour
   If we labour but aright,
   That gives vigour to the day-time,
   And sweeter sleep at night;
   A good that bringeth pleasure
   Even to the toiling hours,
   For duty cheers the spirit
   As dew revives the flowers
   Then say not that Jehovah
   Gave labour as a doom;
   No, it is the richest mercy
   From cradle to the tomb.
   Then still be doing
   Whatever we find to do
   With a cheerful, hopeful spirit,
   And free hand strong and true.

Mrs. F. D. Gage

जो नौकर अत्यधिक परिश्रम करने लग जाता है वह अपने मालिककी दृष्टिमें अपना मूल्य घटा देता है। अत्याधिक परिश्रमसे तात्पर्य उस परिश्रमसे है जिसे मनुष्यका स्वास्थ्य और उसकी शक्ति सहन नहीं कर सकती, परन्तु जिसे फिर भी वह करताही जाता है। कदाचित तुम्हें इसपर कुछ हँसी आवे कि नौकरके अधिक परिश्रमी होनेसे मालिककी दृष्टिमें उसका मूल्य क्योकर घट सकता है। परन्तु हँसो मत, थोड़ा विचार करनेपर बात साफ हो जायगी।

अत्यधिक परिश्रमी मनुष्य भी कमसे कम दो प्रकारके होते हैं। तुम यह विचार लो कि तुम इनमेंसे किस प्रकारके हो। क्यो कि तुम्हारे ही विचार और निर्णयके ऊपर तुम्हारी सफलता अवलम्बित है। प्रथम प्रकारके 'परिश्रमी,-जीव वे हैं जो वास्तवमें उपर्युक्त अर्थमें परिश्रमी तो नहीं हैं, परन्तु वे अपनेको वैसा दिखलानेका प्रयत्न करते हैं। ऐसे लोगोकी संख्या अधिक जान पड़ती है। ये लोग ऐसे हाव-भाव प्रकट किया करते हैं जिससे यह विदित हो कि ये बड़ेही व्यस्त और कार्यशील हैं। समयसे एक मिनिट पहले न तो अपने कामपर जाँयगे और न एकमिनिट बाद ठहरेंगे। जब तक कार्यपर रहेंगे तबतक बराबर घड़ी देखा करेंगे कि कब समय खतम होगा, कब घण्टा बजेगा और जान छूटेगी। इसी प्रतीक्षामें समय विताया करते है। कार्यमें तनिक भी चित्त नहीं लगाते।

ऐसेही मनुष्य जिन्हें हम सर्वथा गुणहीन, निकम्मे और नीच कह सकते हैं, सदा असन्तोष भी प्रकट किया करते हैं। ये बराबर कार्यसे पीछा छुड़ानेकी सोचा करते है और जब कभी कोई नवीन कार्य आरम्भ करना पड़ता है, तो ये खूब

नाक-भौह सिकोड़ते और मुँह बनाते हैं। मानों इनकी मौत ही आगई।

सबसे बुरी बात तो यह है कि जिस मर्जके ये मरीज हैं वह बडा ही भयानक और संक्रामक है। यह छूतका मर्ज उनके सहकारियो तकमें फैल जाता है और वे भी निकम्मे बनने लग जाते हैं। इस प्रकारके 'परिश्रमी' जीव अवश्यही यह शिकायत किया करते हैं कि हमारी योग्यता तथा हमारे कार्यके अनुसार हमें वेतन नहीं दिया जा रहा है। क्यों न कहें! उनके बिना उनके स्वामीका कार्य भी तो नहीं चल सकता। जो कुछ भी उसे लाभ हो रहा है उसके कर्त्ता-धर्त्ता यही ठहरे। इनको लज्जा भी नहीं आती कि किस प्रकार ऐसे विचार इनके मनमें उत्पन्न होजाते हैं। तुम यदि किसीके यहाँ नौकरी कर रहे हो, तो तुम सदा स्मरण रखो कि तुम्हारे स्वामीने अपने लाभके लिए ही यह रोजगार किया है। यदि उसे लाभ न हो, तो फिर वह व्यवसायको आगे नहीं बढ़ा सकता और छोड़नेको बाध्य होगा। ऐसी स्थितिमें तुम्हारी सेवाकी भी उसे कोई आवश्यकता न रहेगी। यह भी तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि जो कुछ उसे लाभ होता है वह सब तुम वेतनके रूपमें पानेकी आशा नहीं कर सकते।

जब कभी कोई मनुष्य व्यवसाय करनेका विचार करता है, तो उसके साथ लाभकी भावना बराबर बनी रहती है। सच तो यह है कि लाभ का विचार यदि न रहे, तो फिर रोजगार अथवा कोई कार्य्य मनुष्य करे ही क्यो? जब वह तुम्हें नौकर रखेगा, तो वह यही सोचेगा कि तुम्हारी सेवा और मेहनतसे उसे इतना मुनाफा होगा कि उसमेंसे तुम्हारा

वेतन देकर एक नियत अंश वह अपने लिये रख सके। वल्कि यह समझना चाहिए कि उसके नियत लाभसे जो बच जायगा उसीको वह नौकर-चाकरोंपर व्यय करनेका विचार करेगा। यदि तुम यह कहते हो कि तुम्हारा निर्वाह उतने वेतनपर नहीं हो सकता, तो या तो तुम अधिक वेतनके लिए अपनी समुचित योग्यता दिखलाओ अथवा उसकी नौकरीसे पृथक हो जाओ। दो में एक ही बात हो सकती है। यदि तुम उसकी नौकरी करते हुए कम वेतनकी शिकायत करते रहते हो तो, यह तुम्हारा दोष है।

कभी-कभी यह कहा जाता है कि हमारा मालिक बड़ा अन्यायी है और वह कुछ लोगोंके साथ पक्षपात करता है। परन्तु यह दोषारोपण ठीक नहीं माना जा सकता। क्योंकि व्यवसायी समुदायका कार्य्य यही है कि वह अपने लाभार्थ वस्तुओंका क्रय-विक्रय किया करे और लोगोंकी सेवाएँ भी वह इसी निमित्त मोल लेता है। जिसकी सेवासे अधिक लाभकी सम्भावना रहती है उसका मूल्य भी अधिक देनाही पड़ता है। और व्यवसायी लोग ऐसा ही करते भी हैं। ऐसी दशामें यह हो ही नहीं सकता कि वे किसी विशेष व्यक्तिके साथ पक्षपात करें। उनको तो अपने लाभका मुख्य ध्यान रहता है। अतएव जिसकी सेवा, जिसका कार्य्य अधिक उपयोगी और लाभकारी सिद्ध होगा उसीकी अधिक माँग होगी और वही अधिक वेतन भी पावेगा।

प्रत्येक व्यवसायी मनुष्य, प्रत्येक फर्म और कारखानेवाले सदा ऐसे लोगोंकी तलाशमें रहते हैं जो अधिक वेतन तो लें; परन्तु पूर्णतया योग्य हो, जिससे उनका कार्य खूबी और सफाईके साथ चल सके। योग्य व्यक्तियोंपर अधिक

व्यय करना उनको नहीं खलता। परन्तु जो सदा शिकायत किया करते हैं, दफ्तरमें बैठे घडीकी ओर ही दृष्टि रख लेते हैं, थोड़े ही परिश्रममें शीघ्र थक जाते हैं और जो अपने स्वामी को एक पैसेका भी लाभ न पहुँचाकर सदा अधिक वेतनके ही इच्छुक बने रहते हैं, ऐसे निकम्मे, कापुरुष, पता चल जाने पर, कार्य्यच्युत किये जाते हैं और उनको जीवनमें किसी प्रकारकी सफलता नहीं प्राप्त होती। अभाग्यवश ऐसे मनुष्य सभी फर्मोंमें इस प्रकार भरे पड़े हैं कि मालिकको सदा इनकी देख-भाल करनी पड़ती है और ज्ञात होनेपर एकको निकाल दूसरेको रखना पड़ता है।

विना कार्य किये ही तुम कुछ प्राप्त करनेकी आशा न करो। तुम कदापि इसकी चेष्टा न करो कि मालिकका कार्य तो कुछ न करूं पर वेतनके लिए चला जाऊँ और तुमको यह भी नहीं सोचना चाहिए कि जितनेकी तुम्हारी योग्यता है, उतना तुमको अवश्य ही मिल जाना चाहिए। तुम अपनी योग्यताका कुछ अंश अपने स्वामीके लिए भी छोड दो, जिससे वह पूंजी एकत्र कर उस कार्य्यमें लगा सके, जिसके लिए उसने तुमको नोकर रखा है। ऐसा करनेसे स्वामी और भृत्यमें परस्पर शिष्टता, सौम्यता और प्रसन्नता बनी रहेगी और दोनो ही को यथोचित लाभ भी होगा। तुमको स्वामीका कार्य सदा ईमानदारी और परिश्रमके साथ करना चाहिए। अधिक परिश्रमसे कभी न डरो।

परन्तु मेरा यह मतलब नहीं है कि तुम अपने स्वास्थ्य शरीर और मस्तिष्कको हानि पहुँचाकर भी परिश्रम करते जाओ। नहीं, जब तुम्हारे अवयव थककर कार्यसे मुख मोड़ते हैं, तो उस समय उनको विश्राम देना ही उचित है।

अधिक परिश्रमसे यह तात्पर्य समझना चाहिए कि जहाँतक तुम्हारी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियाँ गवाही देती हैं वहाँतक उनका प्रयोग सत्यता और ईमानदारीसे मालिकके लिए अवश्य करो। जब लोगोंको यह विदित होजायगा कि तुम अपना कार्य सर्वथा सच्चाईके साथ करते हो, और तुम्हारे लिए किसी विशेष निरीक्षणकी आवश्यकता नहीं पड़ती, तो तुम्हें संसारमें ऐसे अनेक स्वामी मिलेंगे, जो तुम्हारा उचित आदर करेंगे और तुम्हारी योग्यता, सत्यता और ईमानदारी-को पहचाने बिना न रहेंगे। तुम्हारे लिए फिर कार्य्यकी कमी न रह जायगी।

अपने स्वामीकी दृष्टिमें तुम अपनी सेवाको ऐसी अमूल्य और लाभकरी बना दो कि तुम्हारे साथ वह अपना घनिष्ठ सम्बन्ध समझने लग जाय और उसको यह दृढ़ निश्चय होजाय कि तुम्हें छोड़नेसे उनके कार्यको अवश्य क्षति पहुँचेगी। ऐसा करनेसे, व्यवसायी समुदायमें यदि पक्ष-पात नामकी कोई वस्तु है, तो वह अवश्य तुम्हारेही हिस्सेमें आएगी और तुम्हीं इसके हकदार समझे जाओगे। इसके विपरीत यदि तुम्हारी सेवा ऐसी है कि तुम्हारा स्वामी जब चाहे किसी औरसे काम निकाल सकता है अथवा समाचार-पत्रोंमें विज्ञापन द्वारा प्राप्त कर सकता है, तो यह निश्चय समझलो कि कोई न कोई अवश्य तुम्हारा स्थान छीन लेगा; क्योंकि अनेको व्यक्ति ऐसे हैं जो रुपये और व्यवसायके लिए गलियोंमें ठोकर खा रहे हैं। तुम्हारे साथ स्वामीकी कोई विशेष सहानुभूति नहीं होसकती।

यदि तुम रोजगारियोंसे बात-चीत करो तो अनेकोको यह कहते हुए पाओगे कि भाई विज्ञापन द्वारा वास्तविक योग्यता-

के मनुष्य पाना बड़ा कठिन है, क्यों कि वे कहीं न कहीं कार्य पर लगेही रहते हैं। उनकी सेवा प्राप्त करनेकी रीति यही है कि जो कुछ वह इस समय पारहे हैं उससे अधिक उनको दिया जाय। अतः तुम्हारा कर्तव्य है कि अपनी योग्यता बढ़ाओ और अपने स्वामीकी दृष्टिमें सच्चे, ईमानदार, परिश्रमी बननेका प्रयत्न करो। इसमें जरा भी सन्देह न करो कि थोड़ेही कालमें तुम्हारा स्वामी तुम्हारी योग्यताके अनुसार वेतन देनेको बाध्य होगा।
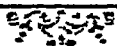
इस परिच्छेदके आरम्भमें मैंने दो प्रकारके अत्यधिक परिश्रमी मनुष्योंकी चर्चा की थी। प्रथमके विषयमें तो लिखा जाचुका है। दूसरे प्रकारके मनुष्य भी संसारमें अक्सर देखनेमें आते हैं; वे सदा प्रसन्नता, उत्कण्ठा तथा उत्सुकताके साथ उतना कार्य किया करते हैं, जितना वास्तवमें उनकी कार्य्यकारिणी शक्तिसे बाहर है। जो-जो कार्य वे कर सकते हैं, सभी हाथमें लेते जाते हैं—यहाँतक कि एक भारी बोझा अपने ऊपर लाद लेते हैं, जिसके तले वड़ी बुरी तरह दबे रहते हैं। कर्तव्यपरायणता उनमें इस प्रकार भरी रहती है कि हाथमें लिये हुए कार्य्यको छोड़ना जानतेही नहीं, इस प्रकार अपनी शक्तिका अत्यधिक प्रयोग करनेसे उनको शारीरिक और मानसिक क्षति उठानी पड़ती है। अविश्रान्त परिश्रम करनेसे शरीरके अवयव निर्बल पड़ जाते हैं और मस्तिष्क शक्ति भी मन्द होजाती है। कार्य अधिक बढ़ जानेसे वे घबड़ा भी जाते हैं और सबका सम्पादन समुचित रीतिसे नहीं हो सकता।

तुम झट कहीं यह न समझलेना कि तुम भी इसी श्रेणीके मनुष्योंमें हो। निष्पक्ष और निष्कपट होकर अपने विषयमें विचार करो और यह निश्चय करो कि वास्तवमें क्या तुम

इतने परिश्रमी और कार्य करनेवाले हो। क्या तुम्हारी शक्तियां कार्यके आधिक्यसे क्षीण होरही हैं ? यदि ऐसा है तो तुमको यह देखना चाहिए कि तुम कौन-कौन कार्य अधिक कर रहे हो। कितने घण्टे तुमको अधिक परिश्रम करना पड़ रहा है। उनको कम करो और साधारणतया कार्यमें लगजाओ।

यदि तुम्हें पूर्ण रूपसे निश्चय होजाय कि तुमका वास्तवमें अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है और इसमें तुमको कोई सन्देह न रह जाय, तो, तुम अपने स्वामीसे नम्रतापूर्वक इसकी चर्चा करो और उसे स्पष्ट करके समझा दो कि इस-इस प्रकार तुम्हें अधिक परिश्रम करना पड़ता है। उसपर रोज जतानेकी कोशिश न करो, वल्कि वड़ी नम्रता और सज्जनताके साथ उसे यह दिखला दो कि यदि तुम्हारे कार्य्योंमें कुछ न्यूनता करदी जायगी, तो तुम उसे और भी अधिक लाभ पहुँचा सकोगे। यदि वह बुद्धिमान् और समझदार है, तो तुम्हारी बातें स्वीकार कर लेगा और तुम्हारे लिए हर प्रकारको सुविधा कर देगा। जब वह तुम्हारी सेवासे लाभ उठाना चाहता है, तो वह इतना अधिक कार्य्य तुम्हें कदापि न देगा, जिसे तुम भली भाँति न कर सको। दूसरे शब्दोंमें यह समझ लोकि जो कुछ लाभ तुम्हारी सेवासे उसे प्राप्त होता रहा है उसे वह छोड़ना नहीं चाहता और हर प्रकारकी सुविधा तुमको वह देनेकी चेष्टा करेगा। परन्तु यदि वह मूर्ख है और तुम्हारी बातोंपर उचित ध्यान नहीं देता तो अपने लिए दूसरा मार्ग ढूँढ़ निकालना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम किसी ऐसे व्यक्तिकी खोज करो जो तुम्हारी योग्यताको समझता है और तुम्हारी अच्छी सेवासे वास्तविक लाभ उठानेका इच्छुक है।

यदि तुम यह जानते हो कि जो कुछ तुम इस समय वेतनके रूपमें पारहे हो उससे अधिक पानेकी योग्यता तुम रखते हो। तो इसके विषयमें अपने स्वामी से कहनेमें तनिक भी संकोच न करो। यह न आशा करो कि उन्नति या तरक्की कहीं आकाश से आजायगी। इसके लिए प्रयत्न करना पड़ेगा। अपने स्वामीको सदा समझदार समझो और उसे यह सोचनेका पर्याप्त अवसर दो कि तुम अधिक वेतनकी योग्यता रखते हो। यह न आशा करो कि वह अपनी सब शक्ति तुम्हारेही मामले को सुलझानेमें लगादेगा। उसके लिए अन्य अनेक विषय हैं, जिनपर उसको विचार करना पड़ता है। तरक्कीके लिए सदा क्रमकी प्रतीक्षा करो और शान्ति-पूर्वक अपने स्वामीको यह जताया करो कि तुम इसके अधिकारी हो और उसके निमित्त प्रयत्न कर रहे हो। इसपर वार्तालाप और बहस करनेमें स्वामीका अधिक समय न लगाओ, नहीं तो वह तुम्हें बक-बादी और जिद्दी समझ सकता है। सदा सौम्य, शान्त और शिष्ट बनो। समय पाकर उसे यह भी दिखादियाकरो कि तुम अपनी शक्तियोका उपयोग अधिक दायित्वके कार्यमें कर सकते हो और अधिक वेतनके अधिकारी बन सकते हो। परिणाम-स्वरूप तुम्हारा स्वामी तुम्हारी उचित माँगोपर अवश्य ध्यान देगा और तुम्हें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

# बाईसवाँ अध्याय

## विशेषज्ञता

1. NOT HOW MUCH, BUT HOW WELL

2. Careful attention to one thing of ternproves superior to genius and art.

Cicero.

जिस कार्य्य अथवा व्यवसायमें तुम लगे हुए हो उसपर तुम्हें अपनी समस्त शक्तिको केन्द्रीभूत करदेना चाहिए। इस विषयपर मैं पहलेही वहुत कुछ लिख चुका हूँ। परन्तु इसका एक अंश शेष रहगया है जिसको जान बूझकर मैंने अभी तक छोड रखा है। वह है किसी कार्यमें विशेषज्ञ होने का परामर्श।

तुम्हारे कार्यका प्रकार चाहे जैसा हो, तुम उसमें विशेषज्ञ ( Specialist ) होनेका प्रयत्न करो। 'स्पेशलिस्ट' शब्दके सुनतेही हमलोगोका ध्यान किसी डाक्टरकी ओर आकर्षित होजाता है, जिसने किसी खास तरह रोगके निदान और उसकी चिकित्सामें विशेष योग्यता प्राप्त करली है। इस प्रकार हम 'आई स्पेशलिस्ट' नेत्ररोगोका विशेष चिकित्सक 'ईयर स्पेशलिस्ट, कर्णरोगोका विशेष चिकित्सक आदि सुना करते हैं। यह भी हम भली भाँति जानते हैं कि किसी व्याधिके विशेषज्ञको साधारण डाक्टरोसे उस रोगके लिए अधिक फीस प्राप्त होती है। शिक्षा सभी डाक्टरोको सम्भवतः एकही रीतिसे दीगई; परन्तु जिसने किसी विशेष प्रकारके

रोगमे अधिकदिलचस्पी ली और उसका विशेष ज्ञान प्राप्त कर लिया, वह 'स्पेशलिस्ट' बनगया और दूसरोकी अपेक्षा उसने अधिक ख्याति और द्रव्य दोनोही प्राप्त कर लिया। जिस प्रकार डाक्टरी विभागमे मनुष्य 'स्पेशलिस्ट' बन जाता है, उसी प्रकार वह जीवनके प्रत्येक विभाग और कार्यमे 'स्पेश-लिस्ट' हो सकता है।

यही दशा वकीलोकी भी है। कोई दीवानीमें विशेष रुचि रखता है, तो कोई फौजदारीमें ही अधिक दक्ष हैं। कोई खाता-बहीके मामलेको अधिक योग्यतासे समझ सकता है, तो कोई जमींदारीके मामलोमें खूबीके साथ बहस कर सकता है। जिसने जिस कानूनमें विशेषज्ञता प्राप्त करली है उसीके काम उसके पास अधिक आते हैं और उनमें वह फीस भी अधिक लेता है। किसी समाचारपत्रके साधारण सम्वाद दाताको उतनी प्राप्ति नहीं होती जितनी कि एक विशेष सम्वाददाताको एक विशेष प्रकारके समाचार देनेके लिए होती है।

प्रसिद्ध धनाढ्य एण्ड्रूकारनेगीका कहना है कि उसे अपने लोहेके कारखानेमें कार्य करनेवाले कारीगरोकी पहचान करनेमें विशेष दक्षता प्राप्त थी और वह सर्वदा योग्य और चतुर व्यक्तियोको कार्य्यपर नियुक्त करता था। यही कारण था वह इतनी विपुल सम्पत्तिका स्वामी बन गया। उसके अधीनस्थ कर्मचारी भी पूर्णतया सम्पन्न और सुखी थे, क्योंकि वे लोहेके कार्यमें किसी न किसी प्रकारकी विशेषज्ञता अवश्य रखते थे।

यदि तुम अब तक अपने कार्यके किसी विभागके 'स्पेश-लिस्ट' नहीं हो, तो तुरन्त इसके ऊपर विचार करो और

'स्पेशलिस्ट' बननेके लिए अपनी सारी शक्ति लगादो। कदाचित तुम यह कहनेके लिए उत्सुक होगे कि 'स्पेशलिस्ट' बननेका अब अवसर नहीं है। परन्तु यह तुम्हारा भ्रम है। तुम्हारे लिए उतना ही अवसर है जितना किसी तुम्हारे अन्य साथीके लिए यदि तुम उसके समान परिश्रमी और उद्यमी हो। विद्या-प्राप्तिके लिए कभी विलम्ब हुआ न समझो। हाँ, तुम यह भी कह सकते हो कि अमुक विषयके सैकड़ो विशेषज्ञ वर्तमान हैं, फिर मुझे उसमें सफलता किस प्रकार हो सकती है। परन्तु मैं कहता हूँ तुम्हारा यह विचार भी नितान्त भ्रामक और त्याज्य है। यद्यपि बहुतसे 'विशेषज्ञ' मौजूद हैं, परन्तु अभी बराबर ऐसे व्यक्तियोंकी माँग प्रत्येक कारोबारमें अधिक है।

सर्व प्रथम तुम यह निश्चय कर लो कि किस कार्यमें तुम्हारा चित्त अधिक लगता है। इसपर भली भांति, गम्भीरता-पूर्वक विचार करो, उतावलापनेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि तुम्हारे विचारपर ही तुम्हारे भावीजीवनकी सफलता निर्भर करती है। जब तुम्हें पूर्णतया निश्चय हो जाय कि अमुक कार्यमें तुम्हारे चित्तकी प्रवृत्ति विशेष है और उसे तुम अच्छी तरह समझ भी रहे हो, तो तुम्हारा कर्तव्य है कि उसी कार्य्यको अपनी विशेष योग्यता ( Specialisation ) का विषय बनाओ। फिर तुम अपनी योग्यताको वृद्धिगत करनेमें कोई बात उठा न रखो। उस कार्यको करते हुए सदा उसकी गूढ़ और कठिन बातोंपर दृष्टि रखो और जहाँ कहींसे सम्भव हो, उसका ज्ञान प्राप्त करनेका प्रयत्न करो। उस विषयके जाननेवालोंके सम्पर्कमें अपने समयका कुछ अंश व्यतीत करो और अपनी कठिनाइयोंको सुलझाने और शंकाओंके समाधान

करानेकी ओर सदा ध्यान रखो। जब कभी कोई तत्सम्बन्धी नवीन बात ज्ञात हो जाय, तो तुरन्त उसको नोट कर लो। एकान्तमें कुछ काल बैठकर उस विषयका मनन और चिन्तन करो। संध्या समय भ्रमण करने जाओ तो उस विषयकी कठिनाइयोंपर विचार करो और उनको सुलझानेका प्रयत्न करो। इस प्रकार तुम अपनेको उसी विषयमें डुबादो, जब तक कि तुम्हारा चिन्तित अर्थ सिद्ध न हो जाय, कठिनाइयाँ अनेक होंगी, पर उनको सरल बनाना तुम्हारा ही कर्तव्य होगा।

यदि तुम किसीकी नौकरी कर रहे हो और तुम्हें वही कार्य दिया गया जिसमें विशेषज्ञ बननेकी तुम्हारी इच्छा है, तो सम्भव है, तुम यह कहो कि जब उसकी नौकरीका समय बीत चुका तो अपने अवकाशके समयमें मैं क्यों उसी कार्यकी चिन्ता किया करूँ। परन्तु तुम्हारा यह विचार मूर्खता-पूर्ण है। तुम उस कार्यके योग्य नहीं हो और शीघ्र ही तुम्हारा स्थान दूसरेको मिल जायगा। जब तुम विशेषज्ञ बननेके सचमुच इच्छुक हो, तो तुम्हें इतनी तुच्छ बातपर विचार नहीं करना चाहिये। तुम्हारा जितना बड़ा उद्देश्य है, उसके विचारसे तुम्हारा कार्य दफ्तरमें या कारखानेमें ही समाप्त नहीं हो जाता। तुम्हें उसे अधिक समय देना होगा और अपने अवकाशके समयको इसके लिए खर्च करना पड़ेगा। और तुमको यह सहर्ष करना चाहिए। यदि तुम्हारे कार्यमें उन्नति होनेसे उसका भले प्रकार सम्पादन होनेसे तुम्हारे मालिकको लाभ होगा, तो वह तुम्हारी योग्यतापर उचित ध्यान अवश्य देगा और समय पाकर तुम्हें अधिकाधिक उन्नत स्थानपर नियुक्त करता जायगा। और जब उसे यह निश्चय हो जायगा

कि तुम अमुकके विषयमें विशेषज्ञ बननेका प्रयत्न कर रहे हो—जिससे उसको भी लाभकी सम्भावना है-तो वह तुम्हारे लिए हर प्रकारकी सुविधा भी कर सकेगा ।

तुम हर एक कार्य करनेका प्रयत्न न करो । क्योंकि शक्तियोंका अनेक अंशोमें विभक्त होनेसे कोई भी कार्य उचितरूपसे नहीं किया जा सकता। इस लिए तुम शक्तियोंको अपने सुचिन्त्य विषयपर केन्द्रीभूत कर दो और उसमें अधिक से अधिक योग्यता प्राप्त कर लो । किसी कार्यमें विशेषज्ञ हो जानेपर जीवन अधिक सरल, सुगम, सफल, समुन्नत और आनन्द-प्रद हो जाता है ।

# तेईसवाँ अध्याय

## मनोविनोद

It must always be remebered that no thing can come into the account of recreation that is not done with delight.

Locke "On Education"

मनोविनोद किसे कहते हैं ? अकसर यह कहा जाता है कि दैनिक कार्य्य समाप्त करनेके उपरान्त जो अवकाशका समय मिलता है उसे आमोद-प्रमोद्के साथ व्यतीत करनेको ही मनोविनोद कहते हैं। बात ठीक है; परन्तु मनोविनोद्के समयको अवकाशका समय नहीं समझना चाहिए। मनोविनोद मनुष्यके लिए उतना ही आवश्यक है जितना उसके लिए भोजन, वस्त्र और गृह इत्यादि। जिस प्रकार मनुष्य अपनी आजीविकाके लिए कार्य करता है, उसी प्रकार उसे अपना जीवन स्वस्थ्य और सुखमय बनानेके लिए मनोविनोद्की परमावश्यकता है। अतः मनोविनोद्को जीवनका एक अत्यावश्यक अङ्ग समझकर उसे अवकाशके समयपर ही नहीं छोड़ना चाहिए, प्रत्युत उसके निमित्त भी समयका नियमित भाग स्थिर होना चाहिए। इसे केवल अवकाशकी ही वस्तु न समझकर, आवश्यक कर्तव्य समझना चाहिए।

परन्तु मनोविनोद्का अर्थ समझनेमें कहीं अनर्थ न कर डालना। मनोविनोद्से तात्पर्य यह है कि इसके द्वारा दिनमें परिश्रम-पूर्वक कार्य करनेसे जिन शारीरिक और मानसिक

शक्तियोंका ह्रास हो गया है, उनकी थकावट दूर होकर उनमें पुनः कार्यकारिणी शक्तिका संचार हो। यह एक साधारण बात है कि एक कार्यके अधिक समय तक करते रहनेसे जब जी उकता जाता है और थकावट मालूम होने लगती है, उस समय थोड़ा मन बहलाव हो जानेसे मस्तिष्क ताजा हो जाता है और नवीन स्फूर्तिका अनुभव होता है। जिस मनरञ्जनके कार्यसे चित्तमें स्फूर्ति, मस्तिष्कमें चैतन्यता और शरीरमें हलकापन न मालूम होकर उलटे सुस्ती, भारीपन, आलस्य और दीर्घसूत्रताका अनुभव हो, उसे मनोविनोद और मनोरञ्जन कदापि न समझना चाहिए। उसे यह नाम ही देना भूल है और इसमें प्रवृत्त होना नितान्त अहितकर है। मनोविनोदकी सबसे बडी पहचान यह है कि उस कार्यमें प्रवृत्त होनेपर मनुष्य शोक, दुःख तथा समस्त संसारी चिन्ताओंसे मुक्त हो जाय और केवल आनन्द ही आनन्दका अनुभव करे और उसके उपरान्त उसे यह स्पष्टरूपसे भासनेलगे कि अब उसकी सारी थकावट दूर होगई, उसमें नवीन शक्ति और पूर्ण चैतन्यताका संचार हो गया। बस, वहींपर उसे समाप्त भी कर देना चाहिए, अन्यथा आधिक्यसे लाभ न होकर हानिकी सम्भावना है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि जिस मनोरञ्जनसे नवीन शक्ति नहीं प्राप्त होती, उसे मनोरञ्जन न समझना चाहिए। दूसरे, मनोरञ्जनके आधिक्यसे हानि होती है।

पाश्चात्य देशोंमें बाहर अथवा खुले हुए हवादार कमरेमें नृत्य करना एक प्रकारका मनोविनोद समझा जाता है और यह है भी एक शारीरिक व्यायाम। परन्तु यदि यह नृत्य किसी बन्द और गरम कमरेमें किया जाय अथवा रात्रिमें

अधिक समय तक होता रहे, तो इससे बड़ी हानि होती है। इस आमोद-प्रमोदमें भाग लेनेवालोंके शरीर और मस्तिष्क दोनो थक जाते हैं और उनकी कार्यकारिणी शक्तिका सत्यानाश हो जाता है।

कुछ लोगोंको नाटक और थियेटरमें वड़ा आनन्द आता है। यहाँतक कि जब कभी अवकाश मिला, झट वहीं पहुँच गए। उनको स्मरण रखना चाहिए कि थियेटरके भवन अधिकतर ऐसे होते हैं जिनमें पर्याप्त वायुका समावेश नहीं हो पाता और भीड़ किस प्रकार होती है, यह सबको विदित ही है। फिर ऐसे स्थानमें शुद्ध वायुका होना नितान्त कठिन है। वहाँपर मनोविनोदार्थ जानेवाले व्यक्ति लाभकी आशा कदापि न करें। दूसरे उनको अधिक रात्रितक जागना पड़ता है। जिससे आलस्यकी मात्रा बढ़ती है और तबियत सुस्त तथा दिमाग भारी हो जाता है। फल-स्वरूप स्वास्थ्य पर धक्का पहुँचता है। ऐसे मनोविनोदसे तुम्हें यथाशक्ति बचनेका प्रयत्न करना चाहिए।

किसी-किसीको दैनिक कार्य समाप्त करनेपर इतनी थकावट मालूम होती है कि उनको थोड़ा सोनेमें ही आराम मिलता है। यदि इससे उनका चित्त प्रसन्न होता है, तो निस्सन्देह उनके लिए यह उत्तम मनोविनोद है। कुछ लोग भोजनोपरान्त थोड़ा भ्रमण कर फिर शयन करने के समय तक कुछ पढ़ा करते हैं। यदि ऐसा करनेसे उनको आनन्द मिलता है, मन प्रफुल्लित रहता है और स्वास्थ्य ठीक रहता है, तो यह भी एक उत्तम प्रकारका मनोविनोद कहा जा सकता है।

भोजनको चाहो तो तुम एक आनन्दका विषय बना सकते हो और चाहो तो एक बड़ा भारी काम बना सकते

हो। जो भली भाँति भूख लगनेपर लाभदायक और वस्तुतः खाद्य पदार्थोंका सेवन अल्पमात्रामें किया करते हैं, वे वास्तवमें भोजनको अत्यानन्दका विषय बनाये हुए हैं; परन्तु इसके विपरीत जो लोग खूब ठूस-ठूसकर भोजन करते हैं, और खाद्याखाद्यका कोई विचार नहीं रखते, उन्होंने इसे एक भारी कार्य्य बना रखा है। रात्रिको अधिक भोजन करनेसे मनुष्य सुखपूर्वक निद्राका आनन्द नहीं लेसकता, उसमें आलस्य और दीर्घसूत्रताकी मात्रा बढ़ जाती है और उसकी पाचनशक्ति, उसपर अधिक बोझ पडनेसे बिगड़ जाती है।

मनोविनोदके अनेक प्रकार हैं। सबका वर्णन करनेमें अधिक विस्तार होगा। यह सर्वथा स्वाभाविक है कि मनुष्य दिनका कार्य्य करनेके उपरान्त मानसिक तथा शारीरिक थकावट और शिथिलताका अनुभव करता है। यदि तुम यह जानना चाहते हो कि किस प्रकारके मनोविनोदसे अथवा मनोविनोदकी किस मात्रासे तुमको लाभ पहुँचेगा तो इसके जाननेका सबसे सीधा मार्ग यह है कि तुम स्वयं यह देखलो कि अमुक प्रकारके मनोरञ्जनसे तुम्हे सचमुच ताजगी और आनन्दकी प्राप्ति होती है। बस, उसीका अवलम्बन करो और इसके विपरीत, जिससे तुम्हें थकावट और शिथिलता मालूम हो, उसका त्याग करो। इसकी सबसे उत्तम पहिचान तुम्हारा हृदय ही कर सकता है। तुम अपने आमोद-प्रमोदकी सामग्रियो और प्रकारोमें समय-समयपर तबदीली भी किया करो। क्योंकि तबदीलीमें भी एक प्रकारका आनन्द मिलता है।

यह तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि मनोविनोद वास्तवमें एक खेल है। बाल्यावस्थामे हम जिसे खेल कहते थे,

उसीको अब बड़े होनेपर मनोविनोद कहने लगे है। यह सभीको स्मरण होगा कि लड़कपनके खेलोमें कितना आनन्द आया करता था; और अब भी जो मनोविनोदसे वास्तविक लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें उसमें बिलकुल खेलका ही भाव रखना चाहिए–वही खेलका भाव जो लड़कपनमें खेलते समय हमारे हृदयमें मौजूद था। बहुतसे खेल, जो बालक खेला करते हैं, बडोंके लिए भी लाभकारी कहे जा सकते हैं, क्योंकि बड़ोंको भी बड़े लड़के कह सकते हैं। कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनमें हमको आजन्म बालककी नाईं ही भावना रखनी पड़ती है और विशेषकर जब हम जीवनका वास्तविक आनन्द लेना चाहते हैं, तो यह अत्यन्तावश्यक है कि हम अपने हृदयको बालकोंकी भाँति स्वच्छ, सरल और हर्षमय बनावें और उनके सुखमय आह्लादको इसमें सदा स्थान दें। कतिपय खेल ऐसे हैं जिनको खेलते समय मुझे अपनी बाल्यावस्थाका स्मरण हो आता है और मैं उनको उतनी ही प्रसन्नताके साथ खेलता हूँ जितनी मुझे १० या १२ वर्ष की अवस्थामें हुई थी और मै इस प्रसन्नताकी प्रकृतिको आजन्म उसी प्रकार रखना चाहता हूँ। इस प्रकारके खेलोमें आनन्द–पूर्वक भाग लेनेकी जिनमे योग्यता है, वही सदा जवानीका अनुभव कर सकते हैं। लोगोकी यह आश्चर्यजनक धृष्टता है कि वे बुड्ढे होनेकी शिकायत उस दशामें किया करते हैं जब कि वे युवा बने रहनेके निमित्त कोई कार्य ही नहीं करते। यदि तुम युवक बने रहनेके इच्छुक हो, तो तुम्हें युवकका विचार रखना और युवकका कार्य करना चाहिए।

जिनको बैठनेका ही कार्य्य अधिक करना पड़ता है और दफ्तरोंमें ही जिनका समय अधिक व्यतीत होता है उनके

लिए किसी न किसी प्रकारके ऐसे खेलमें भाग लेना अत्यन्तावश्यक है, जिसमें उनको शारीरिक व्यायाम करना पड़े। ध्यान रहे कि ऐसे खेलोंका प्रबन्ध सदा खुले मैदान, बाग इत्यादिमें होना चाहिए, जहांपर शुद्ध वायुकी कमी न हो। यदि व्यायाम घरमें करना हो, तो वह घर भी खूब खुला और हवादार होना चाहिए।

वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा आविर्भूत कोई भी खेल प्रकृतिके द्वारा उत्पन्न खेलोंका सामना नहीं कर सकता वे खेल, जिनको बच्चोंने विज्ञानकी उत्पत्तिसे हजारों वर्ष पूर्वसे निकाल रखा है। जितनी स्वाभाविकता और सरलता बच्चोंके खेलमें होती है और जो लाभ उससे पहुंच सकता है वह वैज्ञानिक खेलोंमें कदापि नहीं पाया जा सकता। क्या तुमने कभी दो-तीन मजबूत लड़कोंको एक साथ खेलते हुए देखा है? वे किस प्रकार दौड़ते हैं, कूदते हैं, गिरते हैं, एक दूसरे को धक्का देते हैं, अपनी विजयपर कितना आनन्द मनाते हैं और खिलखिला कर हँसते हैं। किस प्रकार उनके समस्त अवयव कार्यमें प्रयुक्त होते हैं! उनके नेत्रोंमें आभा, चेहरेपर प्रसन्नता, होठोंपर मुसकराहट और अङ्ग प्रत्यङ्गमें सुन्दर स्फूर्ति कितनी भली और चित्ताकर्षक होती है। शारीरिक स्वस्थताके वे निस्सन्देह अनुकरणीय नमूने हैं।

वह इसी प्रकार मनोविनोद है, जिसके द्वारा बालक अपना शरीर इतना स्वस्थ बना लेता है कि अधिक कालतक उससे खूब परिश्रम और कार्य कर सकता है और मैं प्रत्येक बड़ी अवस्थाके लोगोंसे इसी प्रकारके मनोविनोदसे लाभ उठानेका अनुरोध करूँगा! परन्तु यह एक कठिनाई अवश्य है कि लोग बालकोंकी भाँति खेलना अपनी शान और मान-

वानके विरुद्ध समझेंगे। दूसरे, कुछ लोगोंका अड़ोस-पड़ोस भी इस प्रकारका है कि वे ऐसा नहीं कर सकते: परन्तु मैं उनसे कहूँगा कि वे किसी न किसी रूपमें इस मनोविनोदके अंशका अनुकरण करें और जो कोई मनोविनोदका कार्य वे करें उसमें सम्पूर्ण रूपसे खेलकी ही भावनाको प्रधान रखें।

यदि तुम कोई बड़े सम्मानित और मान-मर्य्यादायुक्त व्यक्ति हो तो मनोविनोदके समय इस प्रकारके समस्त भावों को दूर करो और केवल एक साधारण मनुष्य बन जाओ। यदि मनोविनोदसे वास्तविक लाभ उठाना चाहते हो तो सरलताका अवलम्बन करो, रोब-डाटके भावको दूर कर दो। यह अकसर देखा जाता है कि बड़े हो जाने पर लोग अपनी मान-वान उस अवस्थाके अनुकूल बनाये रखना उचित समझते हैं, परन्तु इससे उनको वास्तवमें मनोविनोदके समय क्षति पहुँचती है और उनकी प्रसन्नताके मार्गमें यह बाधक होती है। दिखावटी हाव-भाव बनानेमें और ऊपरी शान दिखलानेमें बाज लोगोंको बड़ी प्रसन्नता होती है. परन्तु यह सर्वथा अस्वाभाविक और अनुचित है। ऐसा करनेसे उनके हृदयसे वास्तविक आनन्दके अनुभव करनेकी शक्तिका सत्यानाश हो जाता है और न तो वे मानव जीवनकी सच्ची सुन्दरताको पहचान सकते हैं, न प्रकृतिकी असलियतको ही समझ सकते हैं।

अपनेको पहिचानो। अपने नेत्रोंको खोलो और खेलो।

# चौबीसवाँ अध्याय

## आकृति

God may forgive sins, but awkwardness has no forgiveness in heaven or earth.

Emerson

एक नवयुवक जो शारीरिक स्वस्थतासे पूर्णतया सम्पन्न और खूब हृष्ट-पुष्ट है, अपनी योग्यताका प्रमाण उस युवकके बनिस्बत कहीं अधिक रखता है, जो केवल परिचायक ( सिफारिशी ) पत्र द्वारा अपनी योग्यता प्रदर्शित करना चाहता है। मनुष्यका शरीर उसके जीवनका निर्देशक है। किसी व्यक्तिकी शारीरिक अवस्था देखकर उसके जीवनके विषयमें बहुत कुछ जाना जा सकता है। जो प्राणी अपनी शक्तियोका अपव्यय करता है और शरीरके विरुद्ध पापमय आचरण करता है, उसका मुख रक्त-हीन और पीला, उसके नेत्र भीतर धँसे हुए और उसका समस्त शरीर मुर्दनीके रंगमें रंगा हुआ दृष्टिगोचर होता है। इसके विपरीत जो संयमी है, नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाला है, चरित्रवान् और सदाचारी है, उसके नेत्रोंमें आभा, मुखमण्डल पर ज्योति और शरीरमें सौन्दर्य्यकी झलक देख पड़ती है।

यदि तुम नौकरीकी खोजमें किसीके पास जाओ तो पहला प्रभाव तुम्हारे स्वामीपर तुम्हारी आकृति और शारीरिक संगठनका पड़ेगा। तुम्हारी शक्ल-सूरत देखते ही तुम्हारे विषयमें वह एक विचार अवश्य स्थिर करलेगा

और मुख्यतया उसी विचारसे प्रभावित होकर वह तुम्हारी अन्य बातोपर ध्यान देगा। उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि तुमको सिगरेट पीता हुआ देखने अथवा तुम्हारे किसी अंग अथवा कपड़ेमेंसे दुर्गन्ध निकलनेपर ही तुम्हारे चरित्रकी पहिचान कर सके। उसे तो तुम्हारे सत्व-हीन चेहरे, भद्देरंग और मृतककी नाईं सफेद नेत्रोको देखते ही ज्ञात हो जाता है कि तुम तम्बाकू तथा सिगरेट आदि दुर्व्यसनोंमें ग्रस्त हो।

संसारमें कौन ऐसा व्यक्ति है, जिसका चित्त उस नव-युवककी ओर प्रसन्नता-पूर्वक आकर्षित न होगा, जिसके मुख-मण्डलपर युवावस्थाका स्वास्थ्य-द्योतक तेज-पुञ्ज जगमगा रहा है, जिसके विशाल नेत्रोंमें ज्योति चमक रही है, जिसके अंग-प्रत्यंगसे स्फूर्ति प्रस्फुटित होती है और जिसके सम्पूर्ण शरीरमें सौन्दर्यका विकास होरहा है। स्वस्थ्य और सच्चरित्र व्यक्ति जहां कहीं रहता है, अपने चतुर्दिक ऐसा भाव उत्पन्न कर देता है, जिससे उसके पार्श्ववर्ती अत्यन्त प्रसन्न और उत्साहित होजाते हैं। उसके शब्दोका सब लोगोपर खूब प्रभाव पड़ता है और सभी उससे हर्षपूर्वक मिलते हैं; परन्तु दुर्बल, चरित्रहीन, दुर्व्यसनी व्यक्तिको दशा इसके सर्वथा विपरीत होती है। वह मनुष्य, जिसकी आवाज निर्बलतासे कमजोर पडगई है, जिसके कंधे झुक गए हैं, कमर टेढो पड़-गई है, जिसका मुख पीला पडगया है, थोड़े शब्दोंमें-जिसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियोका बिलकुल दिवाला निकल गया है, उससे सबलोग घृणा करते हैं। उसकी सूरत देखतेही लोग नाक-भौह सिकोड़ते हैं और उससे -चीत करना नापसन्द करते हैं। ऐसा मनुष्य किसीको
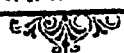
अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। फलतः कोई ऐसी वस्तु वह सुगमतासे नहीं प्राप्त कर सकता, जिससे उसे अपनी सफलतामें सहायता मिल सके। उसकी निजी शक्तियाँ उससे धीरे-धीरे पृथक् होती जाती है। अन्तमें वह नितान्त करुणाजनक और दुःखमय स्थितिमें मृत्युका ग्रास बनता है

इस देशमें बाल्यावस्थामें ऐसे अनेक व्यक्ति थे जो देखनेमें बड़ेही होनहार मालूम पड़ते थे और जिनमें जीवनकी सफलताके चिन्ह दृष्टिगोचर होते थे, परन्तु या तो उन्होने कुत्सित आदतोमें पड़कर अपने जीवनको नष्ट कर दिया या अपनी गुप्तशक्तियोको पहचानने और प्रकट करनेका प्रयत्नही नहीं किया।

निर्णय करने, फैसला देने, तुलना करने, तर्क करने, विचार करने तथा भविष्य कथन करने आदिकी शक्तियां उसी मनुष्यको प्राप्त होती हैं जिसने नियम-पूर्वक शिक्षा प्राप्त करते हुए जीवनको संयम और सच्चरित्रताके मार्गपर चलाकर अपनी मानसिक शक्तियोका पूर्णतया विकास किया है। जो मनुष्य तम्बाकू, भंग, गांजा, शराब आदि दुर्व्यसनोमें आसक्त है और जो अपनी शारीरिक शक्तियोको व्यर्थ बरबाद कर रहा है, उसकी मानसिक शक्तियां सर्वथा विनष्ट होजाती हैं और उसके लिए जीवनमें सफलताकी कोई आशा नहीं रहती। समस्त मादक द्रव्य मस्तिष्कको बोदा बना देते हैं। जो प्राणी इनमें व्यस्त होजाता है उसकी कार्यकारिणी शक्ति, विवेक-शक्ति, विचार शक्ति तथा स्मरण शक्तिका सर्वथा नाश हो जाता है और वह हर प्रकारसे अयोग्य, निरुत्साह, साहस-हीन, सदाचार-रहित तथा सिद्धान्तहीन होजाता है। जीवन-के सोपानमें उनका स्थान सबसे नीचे है।

जो युवक इस संघर्षके युगमें, इस स्पर्धायुक्त जीवनमें सफलताका इच्छुक है, उसके लिए परमावश्यक है कि वह अपनी शारीरिक शक्तियोंका पूर्णरूपसे विकास करनेकी चेष्टा करे। उसे अपने मस्तिष्कको निर्मल, स्वच्छ तथा पवित्र रखना चाहिए और सदा इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि उसकी शक्तिका कभी दुरुपयोग और अपव्यय न होने पावे।

मैं उस नवयुव को उत्साह दिलाता हूँ जिसने अबतक अपना जीवन अज्ञानमें व्यतीत किया है और जिसे अपनी वास्तविक भलाईका अभीतक बोध नहीं है, परन्तु जो अपनेको आदर्श मनुष्य बनानेका प्रयत्न करनेके लिए तत्पर है। अनियमित जीवनसे तुम्हारी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियाँ चाहे कितनीही निर्बल और सत्व-हीन क्यो न हो गई हो, तुम इसकी तनिक चिन्ता न करो। विश्वास रखो, तुम्हे अभी भी सम्पूर्ण शक्ति, सच्चरित्रता, पवित्रता, सौन्दर्य्य तथा हृष्ट-पुष्ट और पूर्ण विकसित शरीर प्राप्त हो सकता है। तुम अभी भी मनुष्य बन सकते हो और जीवनमें सफलताके अधिकारी हो सकते हो। इसके लिए तुम्हें रुपयेकी आवश्यकता नहीं और न तो तुम्हें अन्यके आश्रय और सहायताकी जरूरत है। यदि आवश्यकता है तो केवल इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्पकी। इच्छाशक्ति तुम्हारे अन्तर्गत है। यह ईश्वर-प्रदत्तशक्ति है, जो प्रत्येक मनुष्यमें अदृश्य पड़ी हुई है। तुम्हें केवल इसे प्रयोगमें लानेका विलम्ब है। जितना ही इसका प्रयोग करोगे, उतनी यह बलवती होती जायगी। तुम अपने जीवनके पथ-प्रदर्शनके लिए सदाचारके उच्च नियमोको प्राप्त करने तथा अपने शरीरको खूब हृष्ट-पुष्ट और मस्तिष्कको पवित्र बनानेका दृढ़ संकल्प कर लो और देखो कि तुम्हरी सहायताके लिए

वाह्य शक्तियाँ तुम्हारी ओर आपसे आप किस प्रकार आकर्षित होती हैं। मनुष्यमें आकर्षण-शक्ति यदि कोई वस्तु है, तो यह वही है जिसे शारीरिक और मानसिक शक्तियोंका पूर्ण विकास कहते हैं। जितना ही अधिक तुम इन शक्तियों को बढ़ाओगे उतनी ही अधिक मात्रामें तुम्हारे सहायकोंकी और तुम्हारे ओर आकर्षित होनेवालोंकी संख्या बढ़ती जायगी।

मनुष्यकी मुखाकृतिसे स्वास्थ्य विज्ञानका घनिष्ठ सम्बन्ध है। तुम अपने वाहरी आडम्बर और पोशाकमें ही स्वच्छताका ध्यान न रखो, प्रत्युत् अपनी आदतोंमें भी इसका विचार रखो। गन्दे और अपवित्र व्यवहारसे दूर रहो। अधिक मांस तथा अपवित्र और अशुद्ध भोजन करनेवालोंके वदनसे जो पसीना निकलता है उसमें अकसर दुर्गन्ध होती है, जिससे उसके पास बैठनेवालोंको उसकी ओरसे अरुचि और घृणा होने लगती है। सदा साधारण और सरल भोजन करो। स्नान करनेसे शरीर साफ सुथरा तो रहता ही है, इससे स्वास्थ्य-वृद्धि भी होती है और चित्त प्रसन्न रहता है। स्नान मनुष्यको अवश्य करना चाहिए।

अन्तमें मैं पाठकोंसे पुनः अनुरोध करूँगा कि यदि तुम जीवनमें सफलता प्राप्त करना चाहते हो, यदि मनुष्य योनिमें उत्पन्न होकर उसे कलंकित करना नहीं चाहते, तो तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है कि अपने शरीरको पूर्णतया हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली और बलवान् बनाओ। अपने मस्तिष्कको निर्मल तथा विचारोंको पवित्र बनाओ, भोजन सदा साधारण, शीघ्र पचने वाला और अल्पमात्रामें करो। मिताहार जीवनी शक्तिको बढ़ाता है। प्रतिदिन नियम-पूर्वक स्नान करो।

# पच्चीसवाँ अध्याय

## व्यायाम

The world is full of half-done, botched work, the result of weak and sickly lives

Orison Swett Marden.

2 Practical success in life depends more upon physical health than is generally imagined

Samuel Smiles.

मानव-शरीरकी बनावट बड़ी विचित्र है। इसकी यंत्र-सामग्री अत्यन्त अपूर्व है। इसके अंग-अंगमें, रोम-रोममे कौशलकी पराकाष्ठा है। इस ओर थोड़ा ध्यान देनेपर निर्माताकी परमोत्कृष्ट बुद्धिमत्ता, विलक्षण दक्षता, तथा अनुपम कला-कुशलताका परिज्ञान होता है, जो मनुष्यकी बुद्धिको चकित और दंग कर देता है। इस शरीरको समस्त संसारका सूक्ष्मरूप, कहते हैं। अर्थात् इस विशाल जगत्में जो कुछ भी मौजूद है, सबका सूक्ष्मरूप मानव-शरीरके अन्तर्गत मिल सकता है।

इस शरीरके भीतर जितने अवयव, यंत्र और कल पुर्जे हैं, सभी पृथक्-पृथक् एक निश्चित कार्यमें लगे रहते हैं। प्रत्येकका कार्य जुदा-जुदा है। जब समस्त अवयव अथवा कल-पुर्जे उचितरूपसे अपना कार्य करते रहते हैं, तो सबोंमे समता और एकता बनी रहती है, जिसका फल यह होता है कि मनुष्य सम्पूर्ण सुख और शान्तिका अनुभव करता है। उसका

स्वास्थ्य ठीक रहता है और मस्तिष्क निर्मल रहता है। परन्तु लापरवाही, कुपथ्य तथा प्राकृतिक नियमोंका भंग करनेसे, जब किसी अंगमें कोई खराबी पैदा होजाती है, तो उसका प्रभाव समस्त शरीरपर पड़ता है। फल-स्वरूप सुख तथा शान्तिका भंग होता है; स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। जिस मात्रामें स्वास्थ्य बिगड़ता जायगा उसी मात्रामें मस्तिष्कका भी हनन होता जायगा। मस्तिष्क अपना ठीक कार्य उसी दशामें कर सकता है, जब उसको समुचित मात्रामें स्वच्छ रक्त मिलता जाय। मस्तिष्कके लिए पर्याप्त और स्वच्छ रक्त उतना ही आवश्यक है, जितना इंजनके लिए कोयला और पानी। खून हृदयमें बनता है और फेफड़ेमें साफ होता है। तब समस्त शरीर और मस्तिष्कमें प्रवेश करता है। इसलिए हृदय और फेफड़े अपना कार्य जितना ही ठीक और परिष्कृत रूपमें करेंगे, उतना ही अधिक स्वच्छ रक्त मनुष्यके शरीरको मिलेगा और उतना ही वह हृष्ट-पुष्टव नेगा।

स्वच्छ रक्तके लिए शुद्ध, पवित्र और पथ्य-आहार होना चाहिए। तुम्हारे भोजन और तुम्हारी पाचन-शक्तिके ऊपर तुम्हारा स्वास्थ्य निर्भर करता है। और तुम्हारे शरीरके अन्तर्गत रक्तकी मात्रा तुम्हारे हृदय तथा तत्सम्बन्धी अवयवोंकी पुष्टिपर अवलम्बित है। रक्तका विकार-हीन, स्वच्छ तथा निर्मल होना फेफड़ोंसे सम्बन्ध रखता है। रक्तही तुम्हें पुष्ट और बलवान् बनाता है। उपर्युक्त अवयव यानी फेफड़े और दिल जितना ही मजबूत और दुरुस्त रहेंगे उतना ही अधिक और स्वच्छ खून तुम्हारे अंगोंमें और मस्तिष्कमें दौड़ेगा और उसी मात्रामें तुम्हारा शारीरिक और मानसिक विकास होगा।

यह भली भाँति हम जानते हैं और देख रहे हैं कि शरीर के प्रत्येक अवयवका परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि एकमें कुछ विकार उत्पन्न होता है, तो सर्वत्र उसका प्रभाव पड़ता है। अतः इनकी कार्यकारिणी शक्तिको सदा बनाये रखना परमावश्यक है। इसके लिए तुमको व्यायाम करना बहुत जरूरी है। उचित मात्रामें व्यायाम करते रहनेसे प्रत्येक अंग पर जोर पड़ता है। बदन हृष्ट-पुष्ट होता है। पाचन-शक्ति के ठीक रहनेसे आमाशयमें शीघ्र कोई विकार उत्पन्न नहीं होता और न किसी आधि-व्याधिकी ही शीघ्र आशंका रहती है। अतः शरीरको समुचित अवस्थामें रखनेके लिए थोड़ा बहुत व्यायाम सभीको करना चाहिए। हाँ, यह अवश्य ध्यान रहे कि किसका शरीर कितना व्यायाम सहन कर सकता है। अपने शरीरको स्थितिके अनुसार ही व्यायामका प्रकार होना चाहिए: परन्तु किसी न किसी मात्रा और रूपमें होना अवश्य चाहिए। व्यायाम न करनेसे तुम्हारे सब अंग निर्बल पड़ जाँयगे; रगें और नसें ढीली पड़ जायँगी। खूनका दौरा मंद और अपर्याप्त हो जायगा। शरीरमें विकृत पदार्थ बढ़ जायँगे। हृदय बल-हीन और फेफड़े कमजोर हो जायँगे। पाचन-शक्ति बिगड़ जायगी। भूखकी इच्छा जाती रहेगी। आमाशय एक बोझ प्रतीत होगा। शरीरकी सारी व्यवस्था बिगड़ जायगी। तुम्हारे स्वास्थ्य, बल, साहस, आत्म विश्वास और पौरुषका ह्रास होगा। तुम्हारे जीवनकी समस्त आशाओं पर पानी फिर जायगा। तुम निर्बलता, अकर्मण्यता, भीरुता तथा नैराश्यके शिकार बनोगे। अमानुषता और मूढ़ताका तुम्हारे ऊपर शासन होगा।

क्या शरीरसे अस्वस्थ व्यक्ति कोई महत्व-पूर्ण कार्य कर

सकता है ? क्या दाँत, नेत्र, कर्ण अथवा किसी अंगमें पीड़ा रहते हुए तुम किसी विकट प्रश्नको हल करनेका साहसकर सकते हो ? नहीं, कभी नहीं। शारीरिक अस्वस्थता फौरन तुम्हारी आत्माको पददलित कर देती है और तुम्हारे अन्तःकरणमें कार्यसे अरुचि उत्पन्नकर देती है। तुम्हारा मस्तिष्क किसी उत्तम कार्यके करनेके योग्य नहीं रह जाता। शरीरके प्रत्येक अवयवका सदा ठीक ढङ्गपर रखना चाहिए। एककी खराबीका सवपर प्रभाव पड़ता है। तुम्हारा शरीर प्राकृतिक नियमो द्वारा शासित होता है। उनमेंसे एककी भी तनिक अवहेलना करनेसे दण्ड मिले विना नहीं रहता और यह दण्ड तुम्हें अस्वस्थता, शक्ति-हीनता, अज्ञानता आदिके रूपमें मिलता है।

मैं उन लोगोसे वहुत घवड़ाता हूँ जो अपनेको स्वयं निर्वल बना रहे हैं, जो अपनी मानसिक और शारीरिक शक्तियोको पददलित कर रहे हैं, जो अपनी कुत्सित और अपवित्र आदतोंके फेरमें पड़कर अपना जीवन पतित और दु खमय वना रहे हैं और जो उनसे मुक्त होनेके लिए लेशमात्र प्रयत्न करना नहीं चाहते। वे सचमुच वड़ेही भीरु हैं। अपने जीवनकी वुराइयो, कमजोरियो और निर्वलताओपर दृष्टि डालने तथा उनको ढूँढ़ निकालनेका साहस वे नहीं कर सकते। कितना करुणामय दृश्य है! अपनी कुचेष्टाओ, अपने कुकृत्योके द्वारा उनकी जीवन-शक्ति विनष्ट होती जा रही है। मनुष्यता उन्हें छोड़कर भागती जारही है। वे दिन प्रतिदिन संसारकी दृष्टिमें पतित और हेय वनते जा रहे हैं। परन्तु फिर भी चैतन्य नहीं होते। कैसा घोर अज्ञान उनपर छा रहा है! कैसा प्रगाढ़ अंधकार उन्हें आवेष्टित किये हुए है! क्या वे भी अपनेको मनुष्यही समझ रहे हैं ?, नहीं, नहीं। वे तो मनुष्यतासे वहुत नीचे गिर चुके

है ,। वे वास्तवमें मनुष्य-शरीर धारणकर मनुष्य-समाज को कलङ्कित कर रहे हैं। यदि इन भीरु नरपशुओंके अन्तःकरणमें थोड़ा ज्ञानका प्रकाश हो और वे यह समझने लग जायं कि मनुष्य मात्रको उनके कर्मोका फल अवश्य मिलता है; पापका फल, दुःख और पुण्यका फल, सुख होता है, तो सम्भव है कि उनका मोहान्धकार मिट जाय और वे उचित मार्गपर आ जायं। तुम्हें यह निश्चय रूपसे समझ लेना चाहिए कि एक भी बुरा काम बुरा परिणाम लाए विना नहीं रहसकता। प्रकृतिके नियमोंकी थोड़ी अवज्ञा भी उचित दण्ड दिलाए विना नहीं रह सकती। यदि तुम इसे अपने मनमें भली प्रकार बैठा लो, तो मेरा विश्वास है कि दुष्कृत्य और अनियम की ओर तुम्हारी तबीयतका रुझान जरा भी न होगा।

एक मध्यश्रेणीका शराबी प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा शराब पीता है। गँजेड़ी, तम्बाकू और सिगरेट पीनेवाला प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा पीता है। अफीमची रोज अफीम खाता है। अमिताहारी लगातार दोनो समय ठूस-ठूसकर भोजन करता है, और विषयी भी निरन्तर अपनी वासनाओंकी तृप्तिमे लगा हुआ है। यह सभी कहा करते हैं कि मैं थोड़ी मात्रामें इनका प्रयोग करता हूँ। जो कुछ हो; परन्तु यह अटल और निश्चित है कि ये सब अपना भविष्य आपत्ति जनक बना रहे हैं। इसका कड़वा फल उनको अवश्य भुगतना पड़ेगा।

शरीरकी शक्ति बहुत बड़ी है। इसमें एक प्राकृतिक बल है, जो हानिकारक पदार्थोंको घुसने नहीं देता और उनके विरुद्ध युद्ध किया करता है। यह सदा अनावश्यक और विकृत पदार्थोंको शरीरसे निकाल बाहर करता है। परन्तु जब इसके ऊपर अधिक बोझ पड़ता है, जब शत्रुकी शक्ति

इससे बढ़ जाती है, तो इसे हार माननी पड़ती है और यह निर्बल और निकम्मा होने लग जाता है। और किसी न किसी समय बिलकुल बेकार हो जाता है। इसका प्रभाव शरीरके किसी अंग विशेषपर पड़ता है-खास करके हृदयपर। इसकी गति मन्द पड़ जाती है। खूनका दौरा न्यून हो जाता है। फलतः सभी अवयव बलहीन होजाते हैं। दिमाग काम करनेमें असमर्थ हो जाता है। स्मरणशक्ति जाती रहती है। विवेक और विचार-शक्तियोका अवशेष होजाता है। नेत्रोकी ज्योति घट जाती है। श्रवण-शक्ति भी निःशेष हो जाती है। जिस नवयुवकको खूब स्वस्थ्य, हृष्ट-पुष्ट, बलवान्, पूर्ण विकसित शरीरवाला और सौन्दर्य्य-पूर्ण होना चाहिए था, जिसके हृदयमें उच्च आकांक्षाएँ, महती अभिलाषाएँ तथा उत्साह और साहसकी प्रचण्ड ज्वालाएँ प्रज्वलित होनी चाहिए थीं, उसको हम दूर्बल, क्षीण काय, बलहीन, निरुत्साही, साहसहीन, भीरु और नैराश्य-पूर्ण देखते है। उनमें मानसिक तथा शारीरिक योग्यताओका सर्वथा अभाव होता है। यह असामयिक ह्रास कितना शोच्य है!

यदि तुम अपना बल, साहस, उत्साह और स्वास्थ्य बनाये रखना चाहते हो, यदि तुम अपनी मानसिक और शारीरिक शक्तियोका असामयिक पतन नहीं देखना चाहते, तो तुम उन समस्त आदतो और कार्य्योंसे बचनेकी चेष्टा करो, जो अधम, नीच, कुत्सित और त्याज्य हैं। उनका विचार तक भी अपने मनमें न लाओ। सदा सरल और साधारण भोजन करो। नित्य प्रति कोई न कोई व्यायाम अवश्य करो। रात्रिको जल्दी सो जाओ और प्रातःकाल शीघ्र उठो। निश्चित नियमके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करो। देखो, सफलता तुम्हारी अनुगामिनी बनी फिरती है।

# छब्बीसवाँ अध्याय
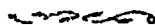
## वास्तविक सफलता

1. That is not the most successful life in which a man gets the most pleasure, the most money, the most power or place, honour or fame; but that in chich a man gets the most manhood, and performs the greatest amount of useful work and of human duty.

Samuel Smiles

2 I live to hold communion
With all that is divine,
To feel that there is union
'Twixt Nature's heart and mine,
To profit by affliction,
Reap truth from fields of fiction,
Grow wiser from conviction,
Fulfilling God's design

G L Banks.

सफलताकी ठीक-ठीक परिभाषा करना कठिन है। जिस प्रकार मानव-स्वभाव और विचारमें विभिन्नता है। उसी प्रकार सफलताकी परिभाषामें भी विभिन्नता है। एकके लिए जो सफलता मालूम पड़ती है, दूसरेके लिए वह असफलता हो सकती है। परन्तु संक्षेपमें हम मानवी इच्छाओं अभिलाषाओंकी पूर्तिको सफलता कह सकते हैं। जिसने

जीवनके संघर्षमें अपना निश्चित लक्ष्य प्राप्त कर लिया है और उसके द्वारा जिसके चित्तको सन्तोष प्राप्त हुआ है, उसे हम सफल मनुष्य कह सकते हैं।

किसी समाजके लिए सफलताका अर्थ है उन कार्योंको पूर्ण कर लेना, जिनसे जातिको सभ्य, समुन्नत और बलवती बनानेमें सहायता मिलती है। कृपणके लिए रुपया जमा करनेमे ही सफलता है। व्यापारीके लिए वृहत् व्यवसाय स्थापित करनेमें सफलता हैं और राजनीतिज्ञ अपनी सफलता तब समझता है जब जनताके ऊपर उसका अधिक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंके लिए सफलताके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं।

परन्तु इस अन्तिम परिच्छेदमें उस सफलताका वर्णन नहीं किया जायगा, जो किसी व्यक्ति-विशेषको प्राप्त हुई है अथवा जिसके प्राप्त करनेके लिए किसी खास व्यक्तिको खास प्रलोभन हुआ है। इसमें उस सफलताकी ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है, जिससे समस्त मानव समाजका जीवन सम्पूर्ण विकसित, स्वस्थ्य और हर्षमय बन सकता है।

वास्तविक सफलता कृपणके रुपया एकत्र करने और उसकी ठनाठन आवाज सुननेकी प्रसन्नतामें नहीं है। वह राजनैतिक योद्धाके उस हर्षोन्मादमें नहीं है, जो उसे अपने प्रतिपक्षीके पराजित करनेपर प्राप्त होता है। और न उस कुटिलकी सन्तोषमय प्रसन्नतामें है, जो उसे मनुष्य-समाजको छल और कपट द्वारा दुःखित कर रुपयेकी थैली प्राप्त करनेमें होती है। ये सफलताएँ तुच्छ हैं, नीच हैं। इनसे मनुष्य-समाजका कोई हित होना तो दूर रहा, स्वयं इनके प्राप्त करनेवालोंको स्थायी प्रसन्नता भी नहीं मिल सकती। उनकी प्रसन्नता उसी

समय तक रहती है जब तक उनको अपने विजयकी स्मृति बनी रहती है। यह नितान्त क्षणिक होती है। इसके लिए कष्ट अधिक उठाना पड़ता है; परन्तु परिणाम अहितकर और असन्तोषप्रद होता है। जो उक्त प्रकारकी सफलताके फेरमें पड़े रहते हैं वे सफलताका वास्तविक अर्थ नहीं समझते। ऐसे कार्योंके वे इतने अभ्यस्त होजाते हैं कि उनकी दृष्टि इससे ऊपर उठ ही नहीं सकती। उनकी बुद्धि भ्रष्ट होजाती है और महत्वाकांक्षाओंका धारण करना उनकी शक्तिसे परे होजाता है। जैसे एक शिकारी जानवर अपना शिकार मारकर खूब प्रसन्न होता है, उसी प्रकार इन धन लोलुपोंको अपनी सफलतापर प्रसन्नता होती है। मगर यह स्मरण रखना चाहिए कि उस शिकारी जानवरकी प्रसन्नता उसी समय तक रहती है जब तक उसे फिर भूख नहीं सताती। यदि तुम्हारी यह धारणा है कि वास्तविक सफलता रुपया पैदा करनेहीमें है चाहे जिस प्रकारसे होसके, तो इसमें सन्देह नहीं कि इसका अन्तिम परिणाम सर्वथा अनिष्टकर और बड़ा भयकर होगा। तुम अबसे चेतो और संभल जाओ। अपने जीवनका उद्देश्य फिरसे निश्चित करो।

सच्ची और वास्तविक सफलता वह है, जिसे प्राप्त करनेपर उत्कृष्ट तथा परिष्कृत स्वभाववाले मनुष्यको सन्तोषका अनुभव होता है, और इसी सफलता द्वारा तुम्हें तथा समस्त मानवसमाजको स्वास्थ्य, प्रसन्नता और आनन्दकी प्राप्ति होती है। जो कार्य्य मनुष्यकी शक्तियोंको कुचलता है, उसके स्वभावको निष्ठुर बनाता है तथा उसके कोमल हृदयके मानुषी विचारोंको अमानुषी बनाता है और जिसकार्यकी [illegible] निमित्त गरीब स्त्री-पुरुषकी शक्तियोंका अनुचित प्रयोग

किया जाता है, उनको वृथा पाशविक कष्ट दिया जाता है ऐसे कार्योंकी सफलतासे मनुष्यको कभी स्थायी सुख और सन्तोष नहीं प्राप्त हो सकता। किसी कविका कथन है:—

दुर्बलको न सताइये जाकी मोटी हाय।
मुए खालकी स्वांस सो सार भस्म होजाय॥

यदि तुम सच्ची और वास्तविक सफलताके इच्छुक हो और यदि उस महत्तम हर्षोत्फुल्लताका आनन्द लेना चाहते हो, जो महत्वपूर्ण और उत्कृष्ट कार्य्य करनेवालोंको प्राप्त होती है, तो तुम्हारा सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि तुम अपने शरीरको पूर्णतया बलवान्, हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली, अपने विचारों को उच्च, पवित्र, शुद्ध और समुन्नत तथा अपने हृदयको कोमल, दयापूर्ण और परोपकारशील बनाओ। ऐसा करनेसे तुम अपने कार्य्योंका एक ऐसा स्मारक चिन्ह बनासकोगे जो अचल-अटल और चिरस्थायी होगा। अद्यावधि किसीनें ऐसा यश और कीर्ति नहीं प्राप्त की जो इसके समान स्थायी लाभदायक तथा हर्षप्रद हुई हो। जो इस स्मारक चिन्हके निर्माण करनेमें सफल होता है उसे अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें एक स्वाभाविक सन्तोषका अनुभव होता है, जिसका आनन्द उसीको मिलसकता है। उसके हर्षका समुद्र उमड़ आता है, जब वह अपने व्यतीत जीवनपर दृष्टि डालते हुए यह सोचता है कि उसका जीवन व्यर्थ नहीं बीता, बल्कि उसका समुचित उपयोग किया गया है और उसने अपने बन्धु-बान्धव तथा मानव जातिका उपकार किया है।

केवल द्रव्यरूपी धनके लोभमें न पड़ो। इसकेही निमित्त परिश्रम और युद्ध करना छोड़ दो। रुपयेके लिए पसीना बहाते हुए तुम्हारा विचार यही रहता है कि इसके द्वारा

तुमको भविष्यमें सुख और आनन्द होगा। तुम अपने आराम व आसाइशकी भविष्य आशा लगाये बैठे हो। इसीके आधार पर अपनी समस्त शक्तियोका उपयोग केवल रुपया प्राप्त करनेमें कर देते हो। परन्तु अन्तमें तुमको निराश और असन्तुष्ट रहना पड़ता है। क्योकि रुपयेसेही तुमको जीवनके सच्चे सुख और वास्तविक आनन्दका अनुभव नहीं होसकता। इस बुरे लालचको छोड़ो, भ्रमको दूर करो और केवल द्रव्योपार्जनमेंही अपने अमूल्य मानव-जीवनको बरबाद न कर दो मनुष्यत्वकी खोज करो। तुम्हारे जीवनका कार्य्य इससे भिन्न और कहीं ऊँचा है।

अब तुम मस्तिष्क तथा शरीरके धनके निमित्त परिश्रम करना आरम्भ करो। क्योकि इसके द्वारा तुम्हें उस अमूल्य द्रव्यकी प्राप्ति होगी, जिसकी समता संसारका समस्त रुपया मिलकर नहीं कर सकता। तभी तुमको सच्ची और वास्तविक सफलता प्राप्त होगी। उसी दशामें तुम्हारे जीवनका कुछ मूल्य लग सकेगा और तुम्हारे द्वारा अन्य जीवोको लाभ पहुँच सकेगा। इस अनुपम धनकी तुलना यदि रुपये-पैसेसे की जाय तो यह ऐसाही है जैसे राखकी समता सुवर्णसे, अंधकारकी तुलना सूर्य्यके प्रकाशसे और वृद्धावस्थाकी कुरूपताकी समता युवावस्थाके सौन्दर्य्य और रूपलावण्य से। चॉदीका टुकड़ा, परिष्कृत और उन्नत विचारोसे युक्त आत्माके सम्मुख क्या वस्तु है? सिंहके समक्ष विचारे श्रृगालकी क्या हस्ती है? छोड़ो धनलोलुपताको। दूर हटाओ रुपयेके लोभको। वीर बनो, धीर बनो, पराक्रमी और शक्तिशाली बनो, विद्वान् बनो, विद्यावान् बनो, उत्साही और साहसी बनो, त्यागी और धर्मात्मा बनो। जीवनको आदर्शमय

बनाओ और इसका उदाहरण दूसरोंके सम्मुख रखकर उनको भी इसी मार्गका पथिक बनाओ।

परन्तु तुमको इस कथनसे यह न समझना चाहिए कि रुपया-पैसा कोई चीज ही नहीं है और इसका कोई मूल्य ही नहीं है। व्यापारके इस युगमें हम रुपये-पैसेको सर्वथा तुच्छ नहीं समझ सकते। इसे स्वीकार करना पड़ेगा कि रुपया भी एक भारी शक्ति और जीवनमें एक आवश्यक वस्तु है। परन्तु इसका भला और बुरा दोनो ही प्रयोग हो सकता है। तुम्हें अपनी सफलता प्राप्त करनेके लिये इसका उत्तमसे उत्तम प्रयोग करना चाहिए। रुपयेको कार्य-सिद्धिका एक साधन समझना चाहिए। लक्ष्य-प्राप्तिमें इसको सहायक कह सकते हैं। स्वयं इसीको लक्ष्य समझ लेना अज्ञान और भ्रम है। इसे तुम अपने सिरपर न चढ़ा लो। इसे अनुचित प्राधान्य न दो। सदा इसको अपने हाथो तले दबाये रखो। इसको मुख्य समझकर सञ्चय न करो, प्रत्युत अपने लक्ष्यकी प्राप्तिमे इसका समुचित उपयोग करो। यदि इसको सञ्चय करनाही अपना कर्तव्य समझ लोगे, तो तुम्हारे वास्तविक गुणोंका ह्रास होगा और तुम जीवनके उचित पथसे भ्रष्ट हो जाओगे। तुम रुपयेकी प्राप्ति रुपयेके लिए न करो, बल्कि अपने जीवनको सफल बनाने और सच्चे मनुष्यत्वके कर्तव्योका उचित रूपसे सम्पादन करनेमें समर्थ होनेके लिए इसको सहायक समझकर करो। साथ ही यह भी ध्यान रखो कि तुम्हारा रुपया प्राप्त करनेका मार्ग अनुचित तो नहीं है। यदि दूसरोकी आत्मा दुःखी करके अथवा छल, कपट और झूँठ द्वारा तुम धनोपार्जन करते हो, तो इससे कदापि तुम्हारा मनोरथ सिद्ध नहीं हो

सकता । उलटे तुम्हारे कार्य्यमें बाधा पड़ेगी ।

संसारमें रुपया प्राप्त करनेके अनेक सरल और सच्चे मार्ग हैं। यदि तुम्हारे पास कोई ऐसी वस्तु विक्रयार्थ है, जो लोगोंके लाभकी है, तो उसको मोल लेनेवाले सैकड़ों मिल जाँयगे। यदि तुम उनके लिए कोई ऐसी सामग्री रखते हो, जिससे उनके मस्तिष्कको लाभ पहुँचता हो अथवा उनकी अन्य शारीरिक आवश्यकताएँ पूरी होती हों, तो तुम्हें ग्राहकोंकी कमी न होगी। हां, यह सम्भव है कि आरम्भमें तुम्हें कुछ कठिनाईका सामना करना पड़े और तुमको असफलता भी हो। परन्तु यदि बुद्धिमत्ता, धैर्य और अध्यवसायसे कार्य करोगे तो तुम्हें उन्नतिके लिए अवसर मिलता जायगा। यह अवश्य है कि इन अवसरोंका पूर्ण उपयोग करना और उनसे लाभ उठाना तुम्हारी योग्यता और कार्य-दक्षतापर निर्भर करेगा। परन्तु यदि तुम निरन्तर उद्योग करते जाओगे, असफलता और कठिनाईसे घबड़ाकर कार्य्य छोड़ न दोगे, तो अन्तमें तुमको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

सफलताके लिए सबसे बड़ी और आवश्यक बात यह है कि तुम अपने जीवनका एक लक्ष्य स्थिर कर लो और उसीपर दृढ़ होकर आगे बढ़ो। बिना लक्ष्यका जीवन पतवार हीन नौकाकी तरह है। वह इधरसे उधर संसार-समुद्रमें ठोकर खाया करता है और किसी निश्चित ध्येयपर नहीं पहुँचता। अतः यदि जीवनको पूर्णतया सफल बनाना है, तो खूब सोच-विचार कर लक्ष्य स्थिर करलो और एक बार स्थिर हो जानेपर दृढ़ता-पूर्वक उसकी प्राप्तिमें लग जाओ। कठिनाइयों और संकटोंकी परवाह न करो। उनका [illegible] दमन करो और आगे बढ़ने चले जाओ। यदि

तुम्हारा कार्य सत्यता और न्यायके विरुद्ध नहीं है, तो संसार की कोई शक्ति तुम्हें दलित नहीं कर सकती। यदि असफलता की कोई सम्भावना हो सकती है तो वह तुम्हारी शारीरिक और मानसिक दुर्बलताके कारणही हो सकती है। अतः तुम अपने शरीरको पूर्णरूपसे हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली बनानेमें कोई कसर उठा न रखो। बलवान् और शक्तिमान् बनकर कार्य-क्षेत्रमें अवतीर्ण हो जाओ और इच्छा-शक्ति तथा दृढ़ संकल्पके साथ अपने उत्तम कार्यका आरम्भ करदो। असफलता तुमसे कोसो दूर भागेगी और सफलता तुम्हारी सहगामिनी बनेगी। तुम्हारी सफलता ऐसी निश्चित है जैसे रात्रिके पश्चात् दिन।

# भस्में !

## हमारे औषधालयकी तीस-चालीस वर्ष पूर्वकी बनाई हुई

यह बात प्रायः सभी जानते हैं कि भस्में जितनीही पुरानी होगी उतनीही अधिक गुण दायक होगी। ईश्वरकी कृपासे हमारे औषधालयमें तीस-चालीस वर्ष पूर्वकी बनाई हुई भस्में मौजूद है। स्वर्गीय प० छन्नूलालजी महाराजकी बनाई होनेके कारण प्रामाणिकताके विषयमें कुछ कहनाही नहीं है। वे सच्ची औषधि बनानेके लिये सर्वदा मशहूर रहे, इसीलिये दाम भी खासे लिया करते थे। आप लोभमें आकर किसी अयोग्य वैद्यकी बनाई नकली, रद्दी, गुणहीन और सस्ती भस्में कभी न खरीदिये, वर्ना पश्चात्ताप कीजिएगा।

**महाशक्ति औषधालय, बुलानाला बनारस सिटी,**

# भस्म और रस

| नाम | मूल्य एक रुपया भरका |
|---|---|
| वज्र-भस्म (हीरा) | २५००) ,, |
| स्वर्ण-भस्म | ८०) ,, |
| मुक्ता-भस्म | ५०) ,, |
| रजत-भस्म | ५) ,, |
| लौह-भस्म—सहस्र पुटी | ४०) ,, |
| लौह-भस्म—पाँच सौ पुटी | २५) ,, |
| लौह-भस्म—दो सौ पुटी | १०) ,, |
| अभ्रक-भस्म—सहस्र पुटी | ४०) ,, |
| अभ्रक-भस्म—पाँच सौ पुटी | २५) ,, |
| अभ्रक-भस्म—तीन सौ पुटी | १५) ,, |
| ताम्र-भस्म | ४) ,, |
| [illegible]ंग-भस्म | ५) ,, |
| [illegible]ाग-भस्म | ५) ,, |
| त्रिवंग-भस्म | १०) , |
| कपर्दक (कौड़ी) भस्म | १) ,, |
| वैक्रान्त-भस्म | १००) ,, |
| स्वर्ण माणिक-भस्म | ३) ,, |
| प्रवाल-भस्म (मूंगा) | २॥) ,, |
| स्वर्ण वंग | १०) ,, |
| हिंगुल मारित लौह-भस्म | ३०) ,, |
| मण्डूर-भस्म | ५) ,, |
| गोदन्ती हरताल-भस्म | २) ,, |
| शङ्ख-भस्म | १) ,, |
| गुलाब जलका घुटा मूँगा | ३) ,, |
| शुक्ति-भस्म (सीप) | १) ,, |
| महाराज मृगाङ्क | १५०) ,, |
| हिरण्यगर्भ | ११०) ,, |
| सिद्ध मकरध्वज | ७०) ,, |
| षड़ गुण वलि—जारित मकरध्वज | ४०) ,, |
| द्विगुण वलि—जारित मकरध्वज | २०) ,, |
| बसन्त कुसुमाकर | ४०) ,, |
| ज्वराशनि | ३०) ,, |
| बृहद्वात—चिन्तामणि | ५०) ,, |
| रत्नगर्भ पोटली | १००) ,, |

मूल्य एक रुपया भरका

| | | | |
|---|---|---|---|
| मालती वसन्त | ५०) ,, | सर्वाङ्ग सुन्दर | ३) ,, |
| चतुर्मुख चिन्तामणि | ४०) ,, | वसन्त तिलक | ५) ,, |
| बृहद्कस्तूरी भैरव | ३०) ,, | श्वास-कुठार | ३) ,, |
| रस सिन्दूर | १०) ,, | कफ-कुठार | २) ,, |
| विजय-पर्पटी | ३०) ,, | ज्वरांकुश | २) ,, |
| स्वर्ण-पर्पटी | २५) ,, | रत्नेश्वर | २) ,, |
| सुधानिधि | २०) ,, | कामेश्वर | २) ,, |
| प्रदरारिलौह | १०) ,, | चन्द्रामृत | ६) ,, |
| बृहल्लोकनाथ | ५) ,, | इच्छाभेदी नवगुण | ४) ,, |
| कामिनी-विद्रावण | १५) ,, | इच्छाभेदी त्रिगुण | २) ,, |
| शक्र-वल्लभ | १५) ,, | इच्छाभेदी समान | १) ,, |
| नागेश्वर | २०) ,, | ज्वर-भैरव | २) ,, |
| स्वल्प लोकनाथ | २) ,, | कान्त सिन्दूर | २) ,, |

## वटी-प्रकरण ।

मूल्य एक रुपया भरका

| | | | |
|---|---|---|---|
| बृहत् मृगाङ्क वटी | ५०) ,, | आनन्द भैरव वटी | २) ,, |
| चन्द्रोदय वटी | ५०) ,, | संजीवनी वटी | २) ,, |
| विषम ज्वरघ्नी वटी | ३०) ,, | गंधक वटी | १) ,, |
| चन्द्रप्रभा वटी | १०) ,, | हिंग्वादि वटी | १) ,, |
| ग्रहणी कपाट | १५) ,, | लवङ्गादि वटी | १) ,, |
| महाशंख वटी | ५) ,, | कुचला वटी | १) ,, |
| दुग्ध वटी | ५) ,, | मृत्युञ्जय वटी | १) ,, |
| | | खदिरादि वटी | १) ,, |

## महाशक्ति चूर्ण

चालीस औषधियोंके योगसे तैयार किया गया यह चूर्ण नपुंसकत्व, वीर्यदोष, मूत्र-कृच्छ्र, स्मरण-शक्ति-क्षीणता आदि का समूल नाश करता है। मूल्य ४० खुराकके डिब्बेका ५) २० खुराकका २॥)

## महाशक्ति वटी

अनुपान-भेदसे यह अभूतपूर्व वटी सैकड़ो रोगोको दूर करनेमें जादूका असर रखनेवाली है। संभोगमें वानरोंकी सी शक्ति दिखानेवाली है। मू० ४० गोलियोकी शी०का २)

## महाशक्ति मोदक

अत्यन्त स्वादिष्ट! महान् पुष्टिकारक ! स्वप्नदोष और शीघ्र-पतनको दूर कर वीर्यको गाढ़ा बनाते तथा स्त्रियोंके आर्तवको शुद्ध करते हैं। सन्तानोत्पत्तिमें विजलीकासा असर पैदा करते हैं। एक पावके डिब्बेका मूल्य ३) रुपया

| | | |
|---|---|---|
| चर्मरोगारितैल | ॥) | शीशी |
| मुक्ता दन्त-मंजन | ।=) | डिब्बी |
| प्लेगनाशक अर्क | २) | शीशी |
| सुजाक नाशक | २) | शीशी |
| हैजेकी गोलियाँ | ॥) | शीशी |
| घावका मरहम | ।=) | |
| दादका मरहम | ।=) | शीशी |
| दद्रुनाशक अर्क | ।=) | शीशी |
| शीतज्वर नाशक वटी | १) | शीशी |
| सिरदर्दनाशकनस्य | ।=) | शीशी |
| आँखकी दवा | ।=) | शीशी |
| बहरेपनकी दवा | ।॥) | शीशी |
| योगराज गुग्गुल | १) | शीशी |

# अमृतपान

( लेखक—बाबू रामचन्द्रजी वर्म्मा )

यदि आप सहज प्राकृतिक उपाय उषःजलपानसे बड़े-बड़े भीषण रोगोको जैसे अग्निमाँद्य, उदररोग, मलावरोध, शूल, अम्लपित्त, उदावर्त, संग्रहणी, मूत्राघात, ज्वर, गण्डमाला, नेत्र रोग, शिरोरोग, अर्श, शोथ, रक्तपित्त, मेदरोग और प्रतिश्याय आदि दूर करना चाहते हों, यदि आप यह जानना चाहते हैं कि अमृतपान क्या वस्तु है और वह किस प्रकार करना चाहिए, तो इस पुस्तकको मंगाकर अवश्य पढ़िये। भाषा उत्कृष्ट, छपाई और सफाई चित्ताकर्षक। मूल्य केवल।)

# दीर्घ जीवन

( अनुवादक—जासूस-सम्पादक गोपालरामजी गहमरी )

यह पुस्तक आपको बतायेगी कि हवा, भोजन, पानी, वस्त्र गृह, व्यायाम आदि क्या हैं, उनके क्या कार्य हैं, उनमें कैसे बिगाड़ पैदा होता है और वे किन रूपोंमें हमारे जीवनको सुखी, हमारी आत्माको प्रसन्न और हमारी आयुको दीर्घ बना सकते हैं। लम्बी आयुके अभिलाषी प्रत्येक व्यक्तिको इस पुस्तक की हर एक पंक्ति अपने हृदय-पटलपर लिख लेनी चाहिए। चार आनेकी यह पुस्तक आपको वैद्यो, डाक्टरो और हकीमो की शरणमें जानेका मौका न देगी। भाषा इतनी सरल है कि मामूली हिन्दी जाननेवाले भी अच्छी तरह पढ़ और समझ लेंगे। कागज पुष्ट, छपाई और सफाई सुन्दर है; मूल्य केवल

महाशक्ति-साहित्य-मन्दिर बुलानाला, बनारस सिटी